आज का मौसम
25.0° अधिकतम तापमान
11.0° न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 06.31
सूर्यास्त 05.20

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

हल्द्वानी

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ बरेली कानपुर
मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष पंचमी 01:55 उपरांत षष्ठी विक्रम संवत 2082

रविवार, 9 नवंबर 2025, वर्ष 5, अंक 259, पृष्ठ 14+4 ■ मूल्य 6 रुपये

■ ईडी ने पीएफआई के खिलाफ धन शोधन मामले में 67 करोड़ की संपत्ति की कुर्क
- 12

■ डिजिटल सेवाओं को बेहतर बना रहा डिजीलॉकर जरूरी सूचनाओं को रखने में सक्षम
- 12

■ शटडाउन : अमेरिका में हवाई यातायात चौपट एक हजार से ज्यादा उड़ानें रद्द
- 13

■ बारिश के कारण 5वां मुकाबला हुआ रद्द भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2-1 से टी-20 सीरीज जीती
- 14

तीर्थाटन और पर्यटन से लाखों लोगों को मिला रोजगार : मोदी

प्रधानमंत्री ने काशी से चार नई वंदे भारत ट्रेनों को दिखाई हरी झंडी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/वाराणसी

अमृत विचार : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को बनारस रेलवे स्टेशन से चार नई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इनमें वाराणसी-खजुराहो वंदे भारत एक्सप्रेस को प्रधानमंत्री ने बनारस रेलवे स्टेशन से रवाना किया, जबकि दिल्ली-फिरोजपुर, लखनऊ-सहारनपुर और एर्नाकुलम-बेंगलुरू वंदे भारत एक्सप्रेस को वर्चुअली झंडी दिखाई। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में तीर्थाटन और पर्यटन से उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को हजारों करोड़ रुपये का सीधा लाभ हुआ और लाखों लोगों को रोजगार मिला।

प्रधानमंत्री मोदी ने भोजपुरी में बाबा विश्वनाथ के पावन नगरी में सभी प्रणाम निवेदित करते हुए कहा कि भारत की तीर्थ यात्राएं केवल धार्मिक नहीं, बल्कि देश की आत्मा को जोड़ने वाली परंपरा है। उन्होंने कहा कि प्रयागराज, अयोध्या, हरिद्वार, चित्रकूट, कुरुक्षेत्र जैसे पावन धाम अब वंदे भारत नेटवर्क से जुड़ रहे हैं, जिससे आस्था और विकास दोनों का संगम हो रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले 11 वर्ष में उत्तर प्रदेश में तीर्थाटन और पर्यटन से आर्थिक गतिविधियों को नया बल मिला है। पिछले वर्ष 11 करोड़ श्रद्धालु बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने आए, जबकि अयोध्या में राम मंदिर बनने के बाद 6 करोड़ से अधिक लोग रामलला के दर्शन कर चुके हैं।

इससे यूपी की अर्थव्यवस्था को हजारों करोड़ का लाभ हुआ और लाखों लोगों को रोजगार मिला। पीएम ने कहा, विकसित देशों की प्रगति का सबसे बड़ा आधार मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर रहा है। भारत भी तेजी से आगे बढ़ रहा है।

वाराणसी में वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते प्रधानमंत्री मोदी।

यूपी में तीर्थाटन और पर्यटन की आर्थिकी

- 2025 में अनुमानित पर्यटक आगमन : 65 करोड़ से अधिक
- 2028 तक अनुमान : 80 करोड़ पर्यटक
- 2028 तक आर्थिक अनुमानित योगदान : 70,000 करोड़
- मुख्य लाभ : आतिथ्य, परिवहन, हस्तशिल्प और लघु उद्योगों को बढ़ावा
- 2023 में प्रमुख शहरों का योगदान : अयोध्या, वाराणसी, मथुरा और प्रयागराज में 28 .79 करोड़ पर्यटक
- 2025 में इन चार स्थलों पर आगमन : 41 .56 करोड़ पर्यटक

काशी अब पूर्वांचल की हेल्थ कैपिटल

मोदी ने कहा कि काशी स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी पूर्वांचल की हेल्थ कैपिटल बन गया है। पहले मरीजों को इलाज के लिए मुंबई जाना पड़ता था, लेकिन अब शहर में ही अत्याधुनिक अस्पताल, कैंसर सेंटर, आयुष्मान भारत और जन औषधि केंद्रों से लोगों को राहत मिल रही है। कहा कि काशी में रहना, काशी आना और यहां जीना अब सबके लिए विशेष अनुभव बन गया है। शहर में गैस पाइपलाइन, स्टेडियम, और रोपवे जैसे कई प्रोजेक्ट तेजी से पूरे हो रहे हैं।

राज्य आंदोलनकारियों के सम्मान को हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता: धामी

- उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस पर मुख्यमंत्री धामी ने की 7 खास घोषणाएं
- राज्य आंदोलनकारियों और उनके आश्रितों की पेंशन बढ़ी, किया गया सम्मानित

मुख्य संवाददाता, देहरादून

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि, उत्तराखंड राज्य का निर्माण केवल राजनीतिक निर्णय नहीं, बल्कि देवभूमि के लाखों लोगों के बलिदान, संघर्ष और तप का परिणाम है। राज्य आंदोलन के दौरान खटीमा, मसूरी और रामपुर तिराहा जैसी दर्दनाक घटनाएं हमारे इतिहास के अमर अध्याय हैं।

मुख्यमंत्री ने शनिवार को देहरादून स्थित शहीद स्थल कचहरी परिसर में उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी शहीदों को पुष्पांजलि व श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही, उत्तराखंड राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर पुलिस लाइन में आयोजित राज्य आंदोलनकारी सम्मान समारोह में राज्य आंदोलनकारियों और शहीद राज्य आंदोलनकारियों के परिवारजनों को सम्मानित किया। कचहरी परिसर शहीद स्थल और पुलिस लाइन देहरादून में राज्य आंदोलनकारियों पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा भी की गई। राज्य निर्माण में अपने प्राणों की आहुति देने वाले सभी ज्ञात-अज्ञात बलिदानियों को नमन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार आंदोलनकारियों के सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता देती रही है और देती रहेगी। उन्होंने राज्य आंदोलनकारियों के लिए संचालित पेंशन एवं अन्य सुविधाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि यह केवल सहायता नहीं, बल्कि हमारी कृतज्ञता का प्रतीक है।

राज्य आंदोलनकारी को सम्मानित करते सीएम धामी।

आज पांच दीपक अवश्य जलाएं

धामी ने कहा कि राज्य सरकार आंदोलनकारियों के योगदान को सदैव याद रखेगी और उनकी भावना को प्रत्येक नीति एवं निर्णय में स्थान देगी। उन्होंने अपील की कि स्थापना दिवस पर प्रदेशवासी अपने घरों में 5 दीपक राज्य आंदोलनकारियों की स्मृति में अवश्य जलाएं। सभी से सहभागिता का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री धामी ने ये कीं घोषणाएं

1. शहीद राज्य आन्दोलनकारियों के नाम पर उनके क्षेत्र की मुख्य अवस्थापना सुविधाओं का नामकरण होगा। 2. उत्तराखंड राज्य आन्दोलन के दौरान 7 दिन जेल गए अथवा राज्य आन्दोलन के दौरान घायल हुए आन्दोलनकारियों की पेंशन प्रतिमाह 6 हजार रुपये से बढ़ाकर 7 हजार रुपये प्रतिमाह की जाएगी। 3. इस दौरान जेल गए या घायल श्रेणी से भिन्न अन्य राज्य आन्दोलनकारियों की पेंशन प्रतिमाह 4500 रुपये से बढ़ाकर 5500 रुपये प्रतिमाह की जाएगी। 4. विकलांग होकर पूर्णत: शय्याग्रस्त हुए राज्य आन्दोलनकारियों की पेंशन प्रतिमाह 20,000 से बढ़ाकर 30,000 रुपये की जाएगी और उनकी देखभाल के लिए मेडिकल अटेंडेंड की व्यवस्था भी की जाएगी। 5. शहीद हुए राज्य आन्दोलनकारियों के आश्रितों की पेंशन प्रतिमाह 3000 से बढ़ाकर 5500 रुपये की जाएगी। 6. उत्तराखंड राज्य आन्दोलनकारियों के चिन्हीकरण हेतु वर्ष 2021 तक जिलाधिकारी कार्यालय में प्राप्त लम्बित आवेदन पत्रों के निस्तारण हेतु छह माह का समय विस्तार प्रदान किया जाएगा। 7. समस्त शहीद स्मारकों का सौंदर्यीकरण किया जाएगा।

इस बार के रविवारीय संस्करण 'लोक दर्पण' में, अवधी खानपान को मिला दुनिया का सलाम व अन्य विषयों पर विशेष सामग्री दी जा रही है।

☞www.amritvichar.com

ब्रीफ न्यूज

जीवन साथी चुनना व्यक्तिगत स्वतंत्रता

नई दिल्ली। जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता संविधान के तहत व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता का अभिन्न अंग है तथा परिवार या समुदाय सहमति से विवाह करने वाले दो वयस्कों की पसंद में बाधा नहीं डाल सकते। यह बात दिल्ली उच्च न्यायालय ने शीर्ष कोर्ट के एक फैसले का हवाला देते हुए कही। हाईकोर्ट ने कहा कि शीर्ष अदालत ने माना है कि भारत में जाति का सामाजिक प्रभाव अब भी मजबूत है और अंतरजातीय विवाह एकीकरण को बढ़ावा देकर और जातिगत विभाजन को कम करके एक मूल्यवान संवैधानिक व सामाजिक कार्य करते हैं।

घुसपैठ की कोशिश कर रहे दो आतंकी मारे गए

श्रीनगर, एजेंसी

- जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में घुसपैठ की कर रहे थे कोशिश
- सर्च ऑपरेशन के दौरान सुरक्षाबलों पर फायरिंग की

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर सेना ने घुसपैठ की कोशिश को नाकाम करते हुए दो अज्ञात आतंकवादियों को मार गिराया। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी।

सेना की श्रीनगर स्थित चिनार कोर ने कहा कि कुपवाड़ा के केरन सेक्टर में घुसपैठ के प्रयास के बारे में एजेंसियों से मिली विशेष खुफिया जानकारी के आधार पर शुक्रवार को एक अभियान शुरू किया गया। सेना ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, सतर्क सैनिकों ने संदिग्ध गतिविधि नजर आने पर आतंकवादियों को रुकने को कहा लेकिन उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी।

इसमें कहा गया है, सुरक्षा बलों ने जारी अभियान में दो आतंकवादियों को मार गिराया है। इलाके में तलाश अभियान जारी है।

एयर शो

गुवाहाटी में 93वें वायु सेना दिवस समारोह को लेकर एयर शो के लिए अभ्यास करते भारतीय वायु सेना के विमान।

संसद का शीतकालीन सत्र 1 से 19 दिसंबर तक

नई दिल्ली, एजेंसी

- 15 बैठकें होंगी, विपक्ष ने कम बैठकों के लिए सरकार की आलोचना की

केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने शनिवार को घोषणा की कि संसद का शीतकालीन सत्र एक से 19 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा। विपक्ष ने इसे बहुत देर से बुलाया गया और संक्षिप्त सत्र बताया।

तीन सप्ताह के इस सत्र में कुल 15 बैठकें होंगी और इसके हंगामेदार रहने की उम्मीद है, क्योंकि यह सत्र निर्वाचन आयोग द्वारा 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान को अंजाम दिए जाने के बीच हो रहा है। कई विपक्षी दलों ने एसआईआर को लेकर आपत्तियां जताई हैं। संसद के मानसून सत्र में भी बिहार में एसआईआर को लेकर कई विपक्षी दलों ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया, जिसके कारण संसद में प्रतिदिन व्यवधान उत्पन्न हुआ। रीजीजू ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, भारत की माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद का शीतकालीन सत्र एक दिसंबर 2025 से 19 दिसंबर, 2025 तक आयोजित करने के सरकार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है

एच1बी वीजा दुरुपयोग मामले में 175 जांच शुरू करेगा ट्रंप प्रशासन

न्यूयॉर्क। ट्रंप प्रशासन ने एच-1बी वीजा के दुरुपयोग के मामलों में लगभग 175 जांच शुरू की हैं, जिनमें कम वेतन, कार्यस्थलों का अभाव और कर्मचारियों की बेंचिंग जैसी खामियां शामिल हैं।

अमेरिकी श्रम विभाग के अनुसार, ये जांच अमेरिकी नौकरियों की सुरक्षा के व्यापक प्रयास का हिस्सा हैं। श्रम विभाग ने शुक्रवार को 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, अमेरिकी नौकरियों की सुरक्षा के अपने मिशन के तहत, हमने एच-1बी वीजा के दुरुपयोग के मामलों में 175 जांच शुरू की हैं। इसमें कहा गया है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और श्रम सचिव लोरी शावेज-डेरेमर के नेतृत्व में, एजेंसी अमेरिकी कामगारों को प्राथमिकता देने के लिए कार्रवाई जारी रखेगी। शावेज-डेरेमर ने 'एक्स' पर कहा कि श्रम विभाग एच-1बी वीजा के दुरुपयोग को रोकने और अमेरिकी नौकरियों की रक्षा के लिए अपने हर संसाधन का उपयोग कर रहा है। भारतीय पेशेवर, जिनमें तकनीकी क्षेत्र से जुड़े कर्मी और चिकित्सक शामिल हैं, एच-1बी वीजा धारकों के सबसे बड़े समूह में शामिल हैं।

फीस जमा नहीं होने पर परीक्षा से वंचित छात्र ने खुद को लगाई आग

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर जिले के बुढ़ाना कस्बे के डीएवी कॉलेज में शनिवार को फीस जमा नहीं होने पर परीक्षा से वंचित किए गए एक छात्र ने आत्मदाह का प्रयास किया। छात्र को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पुलिस ने बताया कि डीएवी कॉलेज में बीए द्वितीय वर्ष के छात्र उज्ज्वल राणा (22) ने शुल्क जमा नहीं होने पर परीक्षा से वंचित किए जाने से क्षुब्ध होकर खुद पर पेट्रोल उड़ेलकर आत्मदाह की कोशिश की। पुलिस ने बताया कि 70 प्रतिशत तक जल चुके छात्र उज्ज्वल को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। बाद में उसे बेहतर उपचार के लिए बड़े अस्पताल में रेफर कर दिया गया।

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर 400 पार, रेड जोन में

- वजीरपुर में 420 और बुराड़ी में 418 दर्ज किया गया

नई दिल्ली। दिल्ली के कई हिस्सों में शनिवार को वायु प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया, जिससे राष्ट्रीय राजधानी देश के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक बन गई।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, प्रतिदिन शाम 4 बजे दर्ज किया जाने वाला 24 घंटे का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) शनिवार को 361 रहा, जिससे दिल्ली रेड जोन में पहुंच गई और यह देश का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर बन गया।

शहर के कई इलाकों में वायु प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। राजधानी के 38 निगरानी केंद्रों से प्राप्त सीपीसीबी के समीर एप के आंकड़ों के अनुसार, अलीपुर में एक्यूआई 404, आईटीओ पर 402, नेहरू नगर में 406, विवेक विहार में 411, वजीरपुर में 420 और बुराड़ी में 418 दर्ज किया गया। सीपीसीबी के आंकड़ों के अनुसार, एनसीआर क्षेत्र में नोएडा में एक्यूआई 354, ग्रेटर नोएडा में 336 और गाजियाबाद में 339 दर्ज किया गया, जो बहुत खराब श्रेणी में आते हैं।

मोदी आज उत्तराखंड में, देंगे बड़ी सौगात

मुख्य संवाददाता, देहरादून

- एफआरआई में राज्य रजत जयंती समारोह को संबोधित करेंगे
- 8260 करोड़ की परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास करेंगे

अमृत विचार: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को उत्तराखंड राज्य गठन की रजत जयंती पर देहरादून में फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट (एफआरआई) में आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि भाग लेंगे। इस अवसर पर प्रधानमंत्री एक स्मारक डाक टिकट जारी करेंगे तथा समारोह में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करेंगे।

राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ के इस अवसर पर प्रधानमंत्री 8260 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास करेंगे। ये परियोजनाएं पेयजल, सिंचाई, तकनीकी शिक्षा, ऊर्जा, शहरी विकास, खेल और कौशल विकास जैसे प्रमुख क्षेत्रों से संबंधित हैं। प्रधानमंत्री जिन परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे, उनमें अमृत योजना के अंतर्गत देहरादून जलापूर्ति कवरेज, पिथौरागढ़ में विद्युत सबस्टेशन, सरकारी भवनों में सौर ऊर्जा संयंत्र, तथा हल्द्वानी स्टेडियम (नैनीताल) में एस्ट्रोटर्फ हॉकी मैदान प्रमुख हैं। वहीं, दो महत्वपूर्ण पेयजल परियोजनाओं-सोंग बांध पेयजल परियोजना (देहरादून) और जमरानी बहुउद्देशीय बांध परियोजना (नैनीताल) का शिलान्यास करेंगे। अन्य परियोजनाओं में चम्पावत में महिला खेल महाविद्यालय की स्थापना, नैनीताल में अत्याधुनिक डेयरी संयंत्र, विद्युत सब स्टेशन परियोजनाएं शामिल हैं।

नो ड्रोन फ्लाई जोन

प्रधानमंत्री के देहरादून आगमन पर सुरक्षा की दृष्टि से हाई अलर्ट घोषित किया गया है। डीजीपी दीपम सेठ की अध्यक्षता में शनिवार को सुरक्षा व्यवस्था को लेकर समीक्षा और ब्रीफिंग में त्रुटिरहित सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। डीजीपी के अनुसार, प्रधानमंत्री की अचूक सुरक्षा व्यवस्था में 3000 से अधिक पुलिस कर्मी तैनात किए गए हैं जबकि खुफिया एजेंसियां पूरी तरह से सतर्क हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि कार्यक्रम स्थल एवं आसपास के क्षेत्रों में ड्रोन संचालन पूर्णत: प्रतिबंधित रहेगा।

सम्मान | उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश और बिहार के 30,000 से अधिक गांवों में निरक्षरता के चक्र को तोड़ा

बेटियों का भविष्य सुधारने वाली 'एजुकेट गर्ल्स' को रेमन मैग्सेसे

मनीला, फिलीपींस एजेंसी

- फिलीपींस की राजधानी मनीला में हुआ समारोह का आयोजन

भारतीय गैर-लाभकारी संस्था 'एजुकेट गर्ल्स' को प्रतिष्ठित रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संस्था ने यह सम्मान उन हजारों क्षेत्रीय समन्वयकों, स्वयंसेवकों और युवा मार्गदर्शकों को समर्पित किया है, जिन्होंने दूरदराज के गांवों में स्कूल न जाने वाली लड़कियों की शिक्षा के लिए काम किया है।

इस पुरस्कार की सार्वजनिक रूप से घोषणा 31 अगस्त को की गई थी और औपचारिक समारोह शुक्रवार को फिलीपींस की राजधानी स्थित मेट्रोपॉलिटन थिएटर में आयोजित हुआ। वर्ष 2007 में स्थापित 'एजुकेट गर्ल्स' उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश और बिहार के 30,000 से अधिक गांवों में गरीबी और निरक्षरता के चक्र को तोड़ने के लिए काम करती है। 55 हजार से अधिक समुदाय-आधारित स्वयंसेवकों के समर्थन से यह गैर-लाभकारी संगठन 20 लाख से अधिक लड़कियों को स्कूल वापस लेकर लाया है और शिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 24 लाख से अधिक बच्चों को सहायता उपलब्ध कराई है। 'एजुकेट गर्ल्स' की स्थापना 2007 में 'लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स' की स्नातक सफीना हुसैन ने की थी। संस्था की सीईओ गायत्री नायर लोबो ने कहा कि यह सम्मान लड़कियों को शिक्षित करने के एक उद्देश्य से एकजुट होकर एक साथ आने वाले लोगों की अद्भुत शक्ति की याद दिलाता है। यह हमारे सामूहिक प्रयासों, नवोन्मेषी कार्यक्रमों और सरकार की प्रभावशाली योजनाओं का सम्मान करता है। क्षेत्रीय समन्वयकों, स्वयंसेवकों और प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों समेत 25 सदस्यीय 'एजुकेट गर्ल्स' टीम पुरस्कार समारोह के लिए फिलीपीन्स की राजधानी पहुंची थी।

रेमन मैग्सेसे पुरस्कार

सफीना हुसैन

साहस व धैर्य से हमें प्रेरित करती हैं लड़कियां : सफीना हुसैन

पुरस्कार स्वीकार करते हुए 'एजुकेट गर्ल्स' संस्था की सफीना हुसैन ने कहा कि यह पुरस्कार हमारी लड़कियों के लिए है, जो अपने साहस और धैर्य से हमें प्रेरित करती हैं। वे लड़कियां जो घरेलू जिम्मेदारियों को संभालती हैं और अपने-अपने परिवार और अपने देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए देर रात तक पढ़ाई करती हैं। उन्होंने कहा कि इस सम्मान के माध्यम से हम उन अभिभावकों, शिक्षकों, समुदाय के सदस्यों और 'टीम बालिका' के 55,000 स्वयंसेवकों का सम्मान करते हैं जो हर दिन हमारी लड़कियों के साथ खड़े होते हैं। उनका समर्पण दर्शाता है कि जब समुदाय लड़कियों को शिक्षित करने के लिए एकजुट होते हैं, तो हर लड़की को अवसर, विकल्प, आवाज और स्वतंत्रता मिलती है।

अमृत विचार

हल्द्वानी , रविवार,9 नवंबर 2025

स्टेट ब्रीफ

विकास यात्रा और भी गतिशील होगी

देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देहरादून स्थित डाट काली मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना की। कहा कि, पिछले 25 वर्षों में उत्तराखंड ने संघर्ष, समर्पण और संकल्प के साथ अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। डबल इंजन सरकार के मजबूत नेतृत्व में प्रदेश ने विकास की नई ऊंचाइयाँ छुई हैं। आने वाले वर्षों में यह विकास यात्रा और भी गतिशील होगी और उत्तराखण्ड दोगुनी रफ्तार से आगे बढ़ते हुए विकसित भारत के निर्माण में अपनी सशक्त भूमिका निभाएगा।

छठी कक्षा से सहकारिता आंदोलन का पाठ

देहरादून : अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष और उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती के मौके पर शनिवार को संस्कृति विभाग के दीप नगर स्थित ऑडिटोरियम में सहकारिता मंत्री धन सिंह रावत ने कहा कि, राज्य में छठी कक्षा से छात्र-छात्राओं को सहकारिता आंदोलन का पाठ अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाएगा। इसको लेकर निबंधक को समिति गठित किए जाने के लिए कहा गया है। राज्य स्तर पर तैयार इस प्रस्ताव को भारत सरकार को भी भेजा जाएगा, ताकि केंद्रीय विद्यालयों में भी इस पाठ्यक्रम को हिस्सा बनाए जा सके।

25 वर्षों में ऐतिहासिक प्रगति: धामी

बोले सीएम-अर्थव्यवस्था 26 गुना, पीसीआई 18 गुना, बजट 20 गुना से ज्यादा बढ़ा

मुख्य संवाददाता, देहरादून

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राज्य की रजत जयंती के अवसर पर प्रदेश वासियों को बधाई देते हुए कहा कि, राज्य के गठन से लेकर आज तक की इन 25 वर्षों की सफल विकास यात्रा में उत्तराखंड ने अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक संरक्षण जैसे क्षेत्रों में ऐतिहासिक प्रगति की है।

मुख्यमंत्री ने राज्य निर्माण के सभी अमर शहीदों, राज्य आन्दोलनकारियों एवं देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उत्तराखंड की मजबूत नींव रखने वाले पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी को भी राज्य की जनता की ओर से नमन किया है। उन्होंने कहा कि, 25 वर्षों में राज्य की अर्थव्यवस्था का आकार 26 गुना, प्रति व्यक्ति आय 18 गुना और बजट 20 गुना से अधिक बढ़ा है। समान नागरिक संहिता लागू करने वाला पहला राज्य बनकर उत्तराखंड ने फिर एक बार अपनी विशेष भूमिका को रेखांकित किया है। राज्य की मातृशक्ति, युवा शक्ति, राज्य आंदोलनकारी, पूर्व सैनिक और प्रवासी उत्तराखंडियों की भागीदारी से एक शक्तिशाली और आत्मनिर्भर उत्तराखंड का निर्माण किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का देवभूमि उत्तराखंड तथा उत्तराखंडियों से अपार आत्मिक स्नेह है। प्रधानमंत्री ने केदारनाथ धाम के पुनर्निर्माण कार्यों तथा बद्रीनाथ धाम के विकास कार्यों की भांति ही अब मानसखंड के विकास पर भी स्वयं की इच्छा और रूचि व्यक्त की है। प्रधानमंत्री मोदी ने हमें वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने का लक्ष्य दिया है। इस विकास यात्रा में विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर उत्तराखंड के रूप में हम अपना अग्रणी योगदान देने के लिए संकल्पबद्ध हैं।

देहरादून में प्रधानमंत्री मोदी के कार्यक्रम स्थल का जायजा लेते मुख्यमंत्री धामी।

आयोजन में न रह जाए कोई कोर कसर

मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड राज्य स्थापना के रजत जयंती समारोह में चल रही तैयारियों का शनिवार को कार्यक्रम स्थल एफआरआई पहुंचकर स्थलीय निरीक्षण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। सीएम ने अधिकारियों को सभी व्यवस्थाएं समयबद्ध एवं सुव्यवस्थित रूप से पूर्ण करने के निर्देश दिए। कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा के उच्चतम मानक बनाए रखने एवं यातायात व्यवस्था सुचारू रखने तथा आमजन की सुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। सीएम ने कहा कि, हमारा प्रयास है कि रजत जयंती वर्ष का यह ऐतिहासिक आयोजन पूरी गरिमा, अनुशासन और जनभागीदारी के साथ संपन्न हो।

कई उपलब्धियां, अभी हमें बहुत आगे जाना है

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य को इस रजत जयंती वर्ष में 38वें राष्ट्रीय खेलों के आयोजन का गौरव प्राप्त हुआ। इन राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड ने 103 पदक प्राप्त कर नया रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने कहा कि इन 25 वर्षों में राज्य ने कई उपलब्धियां प्राप्त की हैं, किन्तु अभी हमें बहुत आगे जाना है तथा देवभूमि उत्तराखंड को एक प्रगतिशील, उन्नत एवं हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाना है। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति जनसहयोग से ही संभव है।

विकल्प रहित संकल्प पूरे करने को प्रतिबद्ध

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि जन सेवा, सुशासन, संवेदनशीलता और गरीब कल्याण हमारा ध्येय है। रजत जयंती वर्ष 2025 के अंत तक उत्तराखंड देश के अग्रणी राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हो, यह हमारा संकल्प है। इस विकल्प रहित संकल्प को पूरे मनोयोग से पूर्ण करने के लिये हम प्रतिबद्ध हैं। मुख्यमंत्री ने सशक्त, समृद्ध, आत्मनिर्भर एवं विकसित उत्तराखंड के निर्माण में सहयोगी बनने की भी प्रदेशवासियों से अपेक्षा की है।

यह आत्ममंथन का समय: आर्य

मुख्य संवाददाता, देहरादून

- स्थापना दिवस की रजत जयंती पर बोले नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य

अमृत विचार: नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि, हर उत्तराखंडवासी के जीवन में 9 नवंबर एक अति विशिष्ट दिन है। 25 वर्ष का कालखंड किसी भी राज्य की दशा-दिशा को देखने के लिए एक बड़ा समय होता है। पृथक राज्य की खुशियां मनाने के साथ-साथ अब आत्ममंथन का भी समय आ गया है। अपनी उपलब्धियों की चर्चा के साथ इस यक्ष प्रश्न का जवाब भी हमें ही खोजना होगा कि जिस उत्तराखंड का सपना राज्य आंदोलनकारियों ने देखा था, क्या वह आज तक पूरा हो पाया है?

नेता प्रतिपक्ष ने शनिवार को जारी बयान में दावा किया कि, कर्ज के बोझ से राज्य निरंतर दब रहा है। आज राज्य पर कर्जा 1 लाख 10 हजार करोड़ रुपये पार कर चुका है। राज्य में उत्पादकता लगातार घट रही है, सरकार इस परेशानी का अभी तक स्थायी समाधान नहीं ढूंढ पाई है। आज हर माह सरकार को 200-300 करोड़ रुपये तक का ऋण बाजार से उठाना पड़ता है। आय के संसाधन बढ़ाने की कोई चेष्टा नहीं हो रही है। वर्ष 2016-2017 में हमारी राजस्व वृद्धि दर 19.50 प्रतिशत वार्षिक थी जो आज घटकर 11 प्रतिशत वार्षिक पर आ गई है। इसका मतलब है कि वर्ष 2017 के बाद आय के संसाधन बढ़ाने की कोई चेष्टा नहीं हुई। वर्ष 2014-2015 में जो प्रति व्यक्ति आय 71,000 रुपये वार्षिक थी वह वर्ष 2016- 2017 में बढ़कर 1,73,000 रुपये प्रति व्यक्ति हो गई थी अब पिछले 6 वर्षों में 2 लाख रुपये के आसपास ठहर सी गई है।

स्थिति चिंताजनक

नेता प्रतिपक्ष के अनुसार, मानव सूचकांक में उत्तराखंड की स्थिति चिंताजनक है। आज भी जच्चा-बच्चा मृत्यु दर से लेकर सभी सूचकांक में उत्तराखंड राज्य राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर से कई नीचे है। यहां तक कि हंगर इंडेक्स में भी हमारी स्थिति चिंतनीय है। इसका अर्थ है लोक कल्याण और रोजगार के क्षेत्र में खर्च में गिरावट आई है।

प्रदेश में 15 लाख पंजीकृत बेरोजगार

नेता प्रतिपक्ष के अनुसार, प्रदेश में 15 लाख पंजीकृत बेरोजगार हैं। करीब इसी संख्या से ज्यादा अपंजीकृत बेरोजगार राज्य मे दर-दर भटक रहा है। करीब एक लाख पद रिक्त हैं। परीक्षाओं में गड़बड़ियों से राज्य चयन सेवा आयोगों से बेरोजगारों का भरोसा उठ सा गया है। स्वास्थ्य सुविधाएं लचर हैं। पहाड़ के अस्पताल रेफरल सेंटर से अधिक नहीं हैं। राज्य की राजधानी का प्रश्न उलझावपूर्ण बना हुआ है। राज्य के 90 प्रतिशत माध्यमिक स्कूल बिना प्रधानाचार्यों और प्रधानाध्यापकों के संचालित हो रहे हैं। राज्य की प्रमुख परियोजनाओं में पारिस्थितिक प्रभावों को बार-बार नजरअंदाज किया गया है, आम बोलचाल की भाषा में भू-कानून जमीनों की लूट को रोकता नहीं है, बल्कि लूट के रास्ते को घुमावदार बनाता है।

1200 से अधिक पर्वतीय गांव 'घोस्ट विलेज'

कहा कि पहाड़ी इलाकों से पलायन राज्य के लिए एक बड़ा नासूर बन चुका है। बीते दो दशकों में पलायन के कारण 1200 से अधिक पर्वतीय गांव वीरान यानी 'घोस्ट विलेज' बन चुके हैं। इन भुतहा गांवों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। पृथक राज्य बनने के बाद तकरीबन 35 लाख लोग पलायन कर चुके हैं। पलायन आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, लोग रोजगार, शिक्षा और लचर स्वास्थ्य सुविधा के कारण पलायन करने को मजबूर हुए हैं। पलायन रोकने को राज्य के पास कोई ठोस रणनीति नहीं दिखाई दे रही है।

प्रदर्शनी: 15 साल भाजपा बनाम 10 साल कांग्रेस

मुख्य संवाददाता, देहरादून

अमृत विचार: राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ पर शनिवार को प्रदेश कांग्रेस ने 15 साल भाजपा बनाम 10 साल कांग्रेस थीम पर आधारित विशेष प्रदर्शनी लगाई है।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने पार्टी मुख्यालय परिसर में तीन दिवसीय प्रदर्शनी के उद्घाटन मौके पर कहा कि अगर हम राज्य गठन की 25 वर्षों की यात्रा का अवलोकन करें तो इस प्रदर्शनी में 25 वर्षों के उतार चढ़ाव के सारे दृश्य सिलसिलेवार तौर पर नजर आएंगे। आरोप लगाया कि, चाहे राज्य की स्थायी राजधानी का मुद्दा हो या राज्य आंदोलनकारी के मसले हों, किसी पर भी भाजपा सरकार ने कोई कदम न उठाकर इन सभी गंभीर मुद्दों को लटकाने का काम किया है। पहली चुनी गयी सरकार के तौर पर प्रदेश की जनता ने कांग्रेस को जनादेश दिया और एनडी तिवारी के नेतृत्व में बनी सरकार ने राज्य को पहले भू कानून देने का काम किया। राज्य की जनता जानती है कि भाजपा ने इन 25 वर्षों में आठ मुख्यमंत्री थोपने का काम किया, जिन्होंने प्रदेश को आर्थिक रूप से कमजोर करने का काम किया।

कांग्रेस की प्रदर्शनी से घपले घोटालों की तस्वीर गायब: भाजपा

देहरादून : भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रमुख मनवीर सिंह चौहान ने कांग्रेस की विकास को लेकर आयोजित प्रदर्शनी पर तंज कसते हुए कहा कि जहां तक भाजपा का सवाल है तो जनता जानती है कि राज्य मे विकास की बयार बही है लेकिन कांग्रेस को तथाकथित तुलनात्मक विकास मे अपने काल के घपले, घोटालों और विधायकों के खरीद फरोख्त जैसे आरोपों का ब्यौरा भी सामने रखना चाहिए। कांग्रेस की प्रदर्शनी को भ्रम और जनता की आंखों मे धूल झोंकने जैसा बताते हुए कहा कि भाजपा ने राज्य को बुनियादी सुविधाएं दी लेकिन कांग्रेस की दो सरकारों के कार्यकाल अंतर्द्वंद, गुटबाजी और घपले घोटालों के लिए ही जाने जाते हैं।

मैंने विकास का दिया हर वचन निभाया: भगत

- नहर कवरिंग व चौड़ीकरण होने पर विधायक भगत ने यह कहा
- चार ग्राम सभाओं के लोगों ने किया विधायक का अभिनंदन

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: कालाढूंगी विधानसभा क्षेत्र में चौफुला से तीनमूर्ति मंदिर तक नहर कवरिंग एवं सड़क चौड़ीकरण कार्य के पूर्ण होने पर शनिवार को लोहरियासाल तल्ला, हिम्मतपुर तल्ला, भगवानपुर एवं हिम्मतपुर मल्ला क्षेत्र के सैकड़ों ग्रामीणों ने विधायक आवास पहुंचकर सड़क निर्माण के लिए विधायक बंशीधर भगत का माल्यार्पण कर एवं स्मृति चिन्ह देकर धन्यवाद किया।

इस दौरान विधायक भगत ने भावुक होते हुए कहा कि, अपने राजनीतिक जीवन में बहुत से कार्य किए लेकिन कार्य होने पर कभी कोई धन्यवाद कहने नहीं आता। आज आप लोगों ने इतनी बड़ी संख्या में आकर मेरा खून बढ़ा दिया है। कुछ अच्छा कार्य करने पर प्रोत्साहन मिले तो आगे और अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरणा एवं हौसला मिलता है। कहा कि, आज तक के अपने राजनीतिक जीवन में जिस विकास कार्य के लिए वचन दिया, उसे अंजाम तक भी पहुंचाया है। दिवंगत पूर्व सीएम एनडी तिवारी के ननिहाल भदयूनी कभी पैदल गया था, ग्रामीणों से वादा किया था कि अगली बार सड़क मार्ग से आऊंगा और ऐसा ही किया। मेरी विधानसभा में 150 ग्रामसभाओं के होने एवं लगातार नई-नई कालोनियों के कटने से सड़कों का दबाव हमेशा बना रहता है, फिर भी प्रयास रहता है कि अधिकतम सड़कों का निर्माण करा सकूं।

भाजपा नेता महेश शर्मा, जिला उपाध्यक्ष प्रताप बोरा, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता विकास भगत ने भी सभा को संबोधित किया। इस दौरान मंडल अध्यक्ष संदीप सनवाल, कंचन उप्रेती, कमल नयन जोशी, प्रकाश पटवाल, आनंद दुर्गापाल, गोविंद बरती, प्रमोद पंत, मनोज जोशी, प्रधान गणेश शाह, ललित नेगी, सुरेश गौड़, कुंदन बिष्ट, हरीश बिष्ट, संजय भोजक, चंद्र प्रकाश, दया किशन जोशी, रविन्द्र बिष्ट, उमेश बिनवाल, सुशीला पांडे, नवीन शर्मा आदि मौजूद रहे।

कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत का अभिनंदन करते चार ग्राम सभाओं के ग्रामीण। ● अमृत विचार

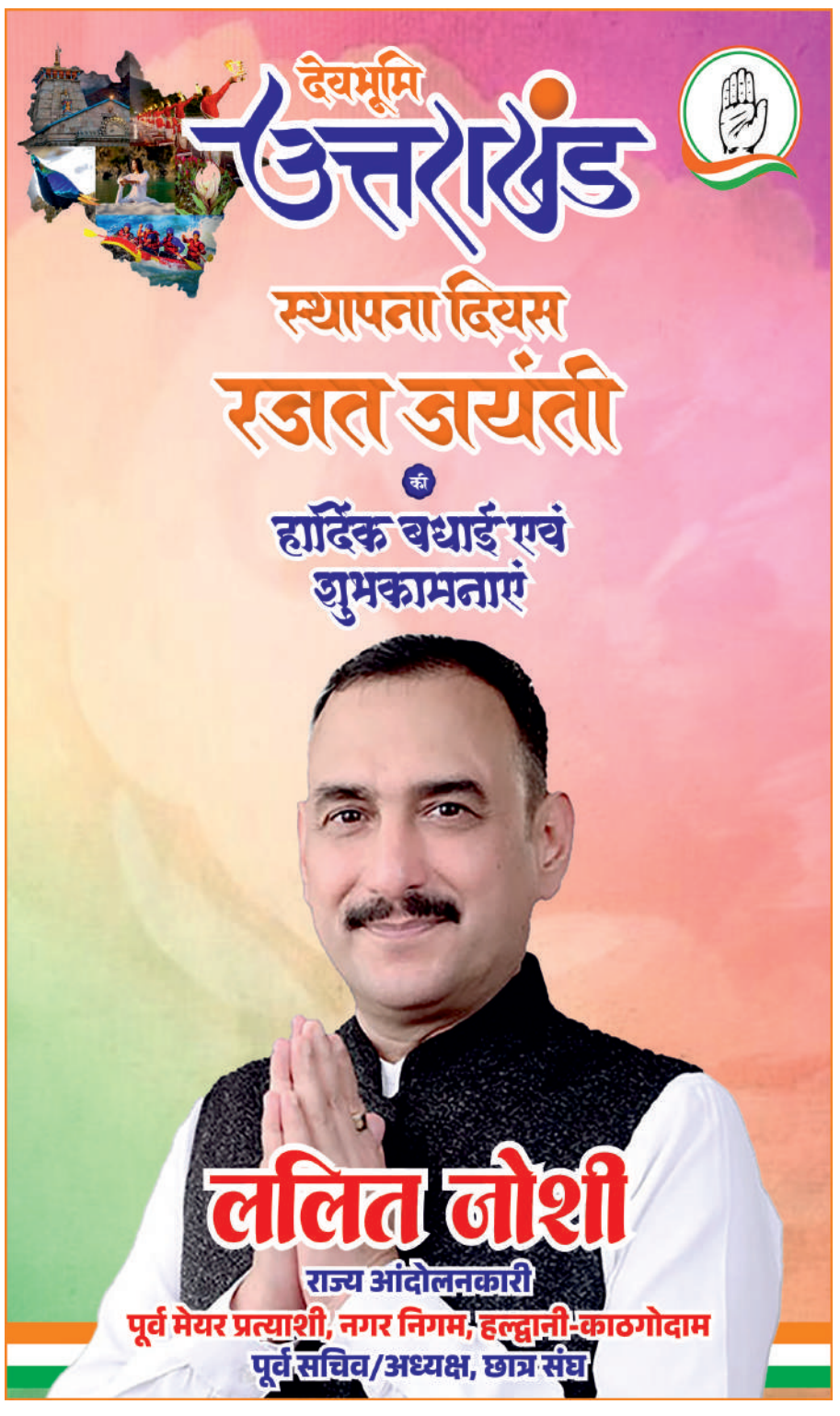

विषाक्त पदार्थ खाने से छात्रा की मौत

रामनगर: रामनगर में एक छात्रा ने परिजनों की गैर मौजूदगी में जहरीला पदार्थ खा लिया। परिजन छात्रा को अस्पताल लेकर आए, जहां छात्रा की मौत हो गई। एसएसआई मो युनूस ने बताया कि कोटाबाग के पास ओखलढूंगा निवासी रूपा (21) पुत्री प्रताप के जहर खाने की जानकारी मिली थी।

बताया कि छात्रा रामनगर महाविद्यालय में पढ़ती थी। वह रामनगर में रिश्तेदार के घर रहकर पढ़ाई करती थी। बताया कि शनिवार को रिश्तेदार कही गए थे। जब वह लौटे तो छात्रा बेहोश पड़ी थी। उसके पास जहरीले पदार्थ की शीशी भी थी और उसके मुंह से झाग निकल रहे थे। पुलिस ने पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया गया है। छात्रा के पिता गांव में ही खेती बाड़ी करते हैं।

उक्रांद ने स्थापना दिवस पर की गोष्ठी

नैनीताल: राज्य स्थापना दिवस के पर उत्तराखंड क्रांति दल की ओर से नैनीताल क्लब सभागार में विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में शहीदों के सपने कितने पास, कितने दूर विषय पर चर्चा की गई। अध्यक्षता प्रताप सिंह चौहान ने की। पूर्व विधायक डॉ. नारायण सिंह जंतवाल ने कहा कि बड़ी शहादतों के बाद उत्तराखंड का गठन हुआ, लेकिन राज्य के 85 फीसदी भूभाग की पीड़ा आज भी जस की तस है। राजधानी, मूल निवास, भू-कानून और पलायन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान नहीं हो सका है। वरिष्ठ अधिवक्ता प्रकाश पांडे, प्रेम कुलियाल, रवि बोरा, मनोज सिंह बिष्ट, हेमचंद्र वारियल, मुकेश वर्मा, भुवन बिष्ट ने भी विचार रखे।

सिटी ब्रीफ

घर के भीतर पुलिस ने बरामद की शराब

हल्द्वानी : मुखानी थाना क्षेत्र के लामाचौड़ में पुलिस ने पूरन चंद्र सागर (53 वर्ष) निवासी नाथूपुर पड़ली लामाचौड़ को कच्ची शराब के साथ दबोचा। उसके घर की अलमारी के पास सफेद डिब्बे से 5 भरे और 1 खाली पाउच बरामद हुए। उप निरीक्षक अविनाश मौर्य की टीम ने कार्रवाई शुरू की। पूरन पुलिस देख भागने लगा पत्नी चंद्र किरण को रोका गया। पुलिस ने घर के कमरे की तलाशी में अलमारी से शराब के अंदर से बरामद की।

मोमबत्ती जलाकर राज्य आंदोलन के शहीदों को किया याद

हल्द्वानी : राज्य स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर रामपुर रोड ट्रांसपोर्ट नगर चौक पर मोमबत्ती जलाकर राज्य आंदोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की और जिस सोच को लेकर पहाड़ी राज्य उत्तराखंड बनाया गया था। उसे साकार करने का संकल्प लिया गया। कहा कि राज्य आंदोलन के दौरान शहीद हुए आंदोलनकारियों का राज्य के निवासी ऋणी हैं। राज्य की जनता उन्हें सदैव याद रखेगी। श्रद्धांजलि अर्पित करने में युवा कांग्रेस नेता प्रदीप नेगी, मेहुल जोशी, कपिल नेगी, चेतन निगलटिया, हेमू रंगवाल, प्रियांशु, शुभम नेगी, भूपेंद्र सिंह, कपिल कोरंगा, प्रबल पाल आदि मौजूद रहे।

मातृशक्ति उत्तराखंड राज्य के विकास का मूल आधार: रेखा

रजत जयंती पर मानसखंड खेल परिसर में हुआ मातृ शक्ति उत्सव, कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या बोलीं- लक्ष्य 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : राज्य स्थापना की रजत जयंती के अवसर पर गौलापार स्थित मानसखंड खेल परिसर में शनिवार को महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग की ओर से "मातृ शक्ति उत्सव-अमृत काल की नारी शक्ति जननी भी, जननेता भी" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या रहीं।

कार्यक्रम में राज्य स्थापना से लेकर अब तक महिलाओं के संघर्ष, उपलब्धियों और योगदान को सजीव प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। उत्तराखंड आंदोलन के दौर की झलक से लेकर आज के विकासशील उत्तराखंड की कहानी में नारी शक्ति की भूमिका को रेखांकित किया गया। मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि राज्य की स्थापना में मातृशक्ति ने निर्णायक योगदान दिया था और आज राज्य की प्रगति यात्रा में महिलाओं की भूमिका अग्रणी है। अब हमारा अगला लक्ष्य 2047 के विकसित भारत के निर्माण में अपनी पूरी सामर्थ्य और समर्पण से योगदान देना है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड की महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और परिश्रम के दम पर राज्य का मान बढ़ा रही हैं। उन्होंने मातृशक्ति से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आगे आने का आह्वान किया। कार्यक्रम में राज्य मंत्री शांति मेहरा, जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल, महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग के निदेशक बीएल राणा, दुग्ध संघ लालकुआं अध्यक्ष मुकेश बोरा, ब्लॉक प्रमुख हरीश बिष्ट, ब्लॉक प्रमुख केडी रुपाली, पूर्व ब्लॉक प्रमुख शांति भट्ट, राशन डीलर्स यूनियन प्रदेश अध्यक्ष रेवाधर बृजवासी आदि रहे।

कार्यक्रम में सम्मानित मातृशक्ति के साथ कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या। ● अमृत विचार

आंचल मैराथन के विजेता किए सम्मानित

हल्द्वानी : राज्य स्थापना की रजत जयंती पर शनिवार को इंपीरियम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आंचल मैराथन का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन नैनीताल दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड की ओर से किया गया। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। खेल मंत्री ने प्रदेश को देश का अग्रणी राज्य बनाने के लिए खिलाड़ियों को कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। मंत्री आर्या ने बताया कि राज्य सरकार खेलों को बढ़ावा देने के लिए पूरा सहयोग दे रही है। कहा कि प्रदेश के लिए पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को आउट ऑफ टर्न नौकरी दी जा रही है। अन्य सरकारी नौकरियों में भी 4% आरक्षण दिया जा रहा है। इस दौरान दुग्ध संघ के अध्यक्ष मुकेश बोरा, पूर्व विधायक नवीन चंद्र दुमका, दीपेंद्र कोश्यारी आदि मौजूद रहे।

रैंप वॉक में संस्कृति व विकास का दिखा संगम

कार्यक्रम में उत्तराखंड की संस्कृति और साथ ही महिलाओं की विकास यात्रा का संगम देखने को मिला। इसमें न सिर्फ उत्तराखंड में परंपरागत रूप से खेती किसानी करने वाली महिलाओं को दर्शाया गया, बल्कि इंजीनियर, डॉक्टर, एयर होस्टेस, खिलाड़ी के रूप में भी प्रतिभागियों ने रैंप वॉक किया।

कार्यक्रम में बटोरी नृत्य नाटिका ने तालियां

कार्यक्रम के दौरान एक नृत्य नाटिका के जरिए मातृ शक्ति के संघर्ष, परिश्रम और साहस को बहुत सुंदर तरीके से चित्रित किया गया। इसमें गौरा देवी के चिपको आंदोलन, राज्य निर्माण आंदोलन में महिलाओं की भूमिका, कमला देवी जैसे कलाकार और एकता बिष्ट जैसी क्रिकेटर, इन सभी का सफर दर्शाया गया।

336 आंदोलनकारी हुए सम्मानित

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती पर जिले के सभी तहसील मुख्यालयों में राज्य आंदोलनकारियों को सम्मानित किया गया। यहां हल्द्वानी और लालकुआं क्षेत्र के 336 आंदोलनकारियों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

एमबीपीजी कॉलेज के सभागार में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ दायित्वधारी मंडी परिषद अध्यक्ष डॉ. अनिल कपूर डब्बू, हुकुम सिंह कुंवर और एसडीएम राहुल शाह ने संयुक्त रूप से किया। डॉ. डब्बू ने कहा कि उत्तराखंड राज्य गठन के 25 साल पूरे होना प्रत्येक उत्तराखंडवासी के लिए गर्व का विषय है। राज्य ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पर्यटन और रोजगार जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य में विकास हो रहा है। बीते चार सालों में नीतिगत निर्णयों से लेकर जमीनी स्तर तक कार्यसंस्कृति में सकारात्मक बदलाव आए हैं, जिससे राज्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। डॉ. डब्बू ने कहा कि राज्य आंदोलनकारियों के संघर्ष और बलिदान से ही आज प्रदेश का सपना साकार हुआ है। इस मौके पर रेखा कोहली, तहसीलदार कुलदीप पांडे, पूजा शर्मा सहित बड़ी संख्या में राज्य आंदोलनकारी, समाजसेवी रहे।

कार्यक्रम में साथ बैठे भाजपा मेयर गजराज सिंह बिष्ट और कांग्रेस के ललित जोशी।

आंदोलनकारियों के लिए उठाया गया कदम ऐतिहासिक

हल्द्वानी : मंडी परिषद के अध्यक्ष और प्रमुख राज्य आंदोलनकारी डॉ. अनिल कपूर डब्बू ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के राज्य आंदोलनकारियों की पेंशन वृद्धि, सरकारी गेस्ट हाउस में छूट और चिन्हीकरण के मामले 6 महीने में निपटाने की घोषणा और गंभीर बीमारी के लिए एक अटेंडेंट उपलब्ध कराने की घोषणा को राज्य आंदोलनकारियों के लिए ऐतिहासिक कदम बताते हुए आभार व्यक्त किया है। डॉ. कपूर ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी स्वयं एक राज्य आंदोलनकारी रहे हैं। युवा मुख्यमंत्री अपने हर निर्णय से राज्य आंदोलनकारियों के सपने को साकार करने में लगातार काम कर रहे हैं।

बहिष्कार: सिर्फ 7 आश्रित ही पहुंचे

संवाददाता, रामनगर

अमृत विचार: राज्य स्थापना दिवस पर शनिवार को रामनगर तहसील सभागार में राज्य आंदोलनकारियों के सम्मान समारोह का आयोजन हुआ।

सम्मान समारोह में 94 राज्य आंदोलनकारियों को चिह्नित किया गया था, जिनमें रामनगर के 64 और कालाढूंगी के 30 आंदोलनकारी शामिल थे। लेकिन आयोजन में सिर्फ 7 लोग ही पहुंचे, वो भी आंदोलनकारियों के आश्रित, इस कम उपस्थिति ने आयोजन की गंभीरता पर सवाल खड़े कर दिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दर्जा राज्य मंत्री सुरेश भट्ट और रामनगर विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने शॉल ओढ़ाकर और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। जिन्हें सम्मानित किया गया उनमें रामनगर तहसील के 64 में से केवल तीन आंदोलनकारियों के परिजन सम्मान लेने पहुंचे। जिनमें स्व. सुमित्रा बिष्ट के बेटे संजय बिष्ट, स्व. सुरेश गुप्ता की पत्नी बृजेश गुप्ता, और स्व. ओमप्रकाश सारस्वत के पुत्र अखिलेश प्रताप सारस्वत एवं कालाढूंगी तहसील से स्व. गंगा पाठक के पुत्र सोनू पाठक, नवीन चंद्र भट्ट, चंद्रशेखर डुंगरियाल, और तारा नेगी को सम्मानित किया गया। समारोह में रामनगर एसडीएम प्रमोद कुमार, तहसीलदार मनीषा मारकाना, कालाढूंगी एसडीएम विपिन चंद्र पंत, ब्लॉक प्रमुख मंजू नेगी, और ज्येष्ठ ब्लॉक प्रमुख संजय नेगी सहित कई अधिकारी और जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

उधर राज्य आंदोलनकारियों ने इस समारोह का बहिष्कार कर सरकार के खिलाफ नाराजगी जताई। उनका कहना है कि सरकार दिखावटी सम्मान कर रही है जबकि उनकी पुनर्वास, पेंशन और पहचान से जुड़ी मांगे आज तक पूरी नहीं हुई हैं। राज्य आंदोलनकारी प्रभात ध्यानी एवं चंद्र शेखर जोशी ने कहा कि जहां आंदोलनकारियों की समस्याओं का निदान न हो वहां ऐसा सम्मान प्राप्त करना सरासर बेइमानी है। बोले हम सम्मान के भूखे नहीं हैं, हमें हमारे हक चाहिए। उन्होंने कहा कि जिन्होंने उत्तराखंड राज्य के लिए संघर्ष किया, जेल गए, या अपने परिवार के सदस्य खोए, उन्हें सिर्फ शॉल और प्रमाणपत्र से नहीं बल्कि अधिकारों से सम्मान मिलना चाहिए।

रामनगर में एक आंदोलनकारी के आश्रित को सम्मानित करते दर्जा मंत्री सुरेश भट्ट।

डॉ. केशव अग्रवाल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

- **बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति हैं डॉ. केशव अग्रवाल**
- **जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज में यूपीएएसआई कॉन-2025 का आयोजन**

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार: जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज, कानपुर के सर्जरी विभाग द्वारा बिठूर स्थित थीम पार्क में आयोजित यूपीएएसआई कॉन-2025 के दूसरे दिन शनिवार को सम्मेलन में देश भर से आए विशेषज्ञ शामिल हुए।

इस अवसर पर बरेली इंटरेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. केशव अग्रवाल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जीडी यादव, डॉ. आर के मौर्या व डॉ. विकास कटियार ने उन्हें अवार्ड प्रदान किया। सम्मेलन में वरिष्ठ चिकित्सकों ने सर्जरी की आधुनिक पद्धतियों, जटिल रोग प्रबंधन, रोबोटिक हस्तक्षेप, न्यूनतम इनवेसिव विधियों और अत्याधुनिक तकनीकी समागम के साथ एक ऐतिहासिक छाप छोड़ी।

सुश्रुत सभागार, धन्वंतरि मंच और प्रो. तारा सिंह गोल्डन रुबेली हॉल में समानांतर रूप से आयोजित वैज्ञानिक सत्रों में देश के सर्जन, शिक्षाविदों और विशेषज्ञों ने अपने गहन अनुभव व प्रमाण आधारित जानकारी साझा की। साथ मिलकर वरिष्ठ डॉक्टरों ने अपनी पुरानी यादें ताजा कीं। सम्मेलन में डॉ. मो.असलम ने बताया कि अत्यधिक शराब टेस्टोस्टेरोन के स्तर को कम करती है, शुक्राणु उत्पादन को नुकसान पहुंचाती है और डीएनए को नुकसान पहुंचा सकती है। ड्रग्स शुक्राणु उत्पादन और गुणवत्ता को खराब कर सकते हैं। एनाबॉलिक स्टेरॉयड और मांसपेशियों की वृद्धि के लिए उपयोग किए जाने वाले स्टेरॉयड से अंडकोष सिकुड़ सकते हैं और शुक्राणु उत्पादन कम हो सकता है। धूम्रपान से शुक्राणुओं की संख्या और गुणवत्ता में कमी आती है। अप्रत्यक्ष धूम्रपान भी हानिकारक हो सकता है। वहीं, छोटेपन में हर्निया की समस्या होने की वजह से भी बांझपन का खतरा हो सकता है।

बीते 20 वर्षों में पुरुषों में 30 फीसदी बांझपन की समस्या बढ़ी है, ऐसे में खानपान पर ध्यान देने और शारीरिक गतिविधियां बेहद जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि नशा और सेक्सवर्धक दवाएं पुरुषों में बांझपन की समस्या बढ़ा रही हैं। खासकर यह समस्या उन लोगों में अधिक देखी जा रही है, जो लोग सोशल मीडिया में दिखाई गई ताकत और टाइमिंग की दवाओं का सेवन बिना डॉक्टर के परामर्श करते हैं।

इनका अधिक सेवन व दुष्प्रभाव शुक्राणुओं की संख्या, गुणवत्ता और गतिशीलता को खराब कर सकते हैं, जबकि एनाबॉलिक स्टेरॉयड अंडकोष को सिकोड़ सकते हैं और शुक्राणु उत्पादन को कम कर सकते हैं। तंबाकू का सेवन और कुछ प्रिस्क्रिप्शन दवाएं भी प्रजनन क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं।

इस अवसर पर जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य प्रो. संजय काला, हैलट अस्पताल के प्रमुख अधीक्षक डॉ.आरके सिंह, डॉ. विकास कटियार, डॉ. प्रेमशंकर, डॉ. आरके मौर्य, डॉ. गोविंद त्रिवेदी, डॉ. प्रियेश शुक्ला, डॉ. युक्तेश्वर मिश्रा, डॉ. अंजली मिश्रा, डॉ. अमित अग्रवाल, डॉ. आनंद मिश्रा, डॉ. शालीन अग्रवाल, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अंकुर बंसल, डॉ.अवनीश कुमार, डॉ. हारित चतुर्वेदी, डॉ. मुकुल खेतान, डॉ. एएस सेंगर आदि मौजूद रहे।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. संजय काला और वरिष्ठ चिकित्सकों के साथ वार्ता करते बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. केशव अग्रवाल।

लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के साथ बरेली इंटरेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. केशव अग्रवाल।

रामपुर रोड पर बस और मैजिक में भिड़ंत, दो बच्चों समेत 12 घायल

हल्द्वानी : शनिवार शाम रामपुर रोड पर एक और भीषण हादसा हो गया। ओवरटेक की कोशिश में सवारियों से भरी टाटा मैजिक सामने से आ रही यूपी रोडवेज की बस से टकरा गई। टक्कर होते ही बस चालक फरार हो गय। हादसे में मैजिक में सवार सभी 12 लोग बुरी तरह घायल हो गए। घायलों में 2 और 11 साल के दो बच्चे भी हैं। पुलिस ने घायलों को एसटीएच में भर्ती कराया। यह बस हल्द्वानी से रामपुर जा रही थी जबकि मैजिक रुद्रपुर से सवारियां लेकर हल्द्वानी आ रहा था। मैजिक में सवार सवारियों का कहना था कि चालक, मैजिक को काफी तेजी से चला रहा था। गन्ना सेंटर के पास स्थित ऑलिविया कॉलोनी के समीप पहुंचने पर मैजिक चालक ने एक वाहन को ओवरटेक करने का प्रयास किया और तभी सामने से आ रही बस से टक्कर हो गई। हादसा इतना भीषण था कि मैजिक का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया जबकि बस का फ्रंट शीशा टूट गया।

घर में घुसकर दुष्कर्म की कोशिश, पिता को पीटा

हल्द्वानी, अमृत विचार : काठगोदाम थाना क्षेत्र में कुछ युवक एक युवती के घर में घुस गए। उसके कपड़े फाड़ डाले और उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास किया। घर में मौजूद युवती के पिता ने विरोध किया तो आरोपियों ने लोहे की रॉड मारकर उन्हें लहूलुहान कर लिया। मामले में युवती की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। जवाहर ज्योति दमुवाढूंगा निवासी पीड़िता ने बताया कि रात करीब 10 बजे उनका पूरा परिवार सोने की तैयारी कर रहा था। तभी चंदू मौर्या, राहुल मौर्या, संजू मौर्या और तनुज मौर्या उनके घर में घुस आए। उसके साथ जबरदस्ती छेड़छाड़ शुरू की, उसके कपड़े फाड़ डाले और अश्लील हरकतें करने लगे। पिता ने बेटी को बचाना चाहा तो आरोपियों ने लोहे की रॉड से उन पर हमला बोल दिया। पीड़िता ने पुलिस चौकी पहुंचकर शिकायत की। पुलिस के पहुंचने तक आरोपी पिता को अधमरा कर फरार हो गए। घायल पिता को परिजनों ने बेस अस्पताल में भर्ती कराया। थानाध्यक्ष काठगोदाम विमल मिश्रा ने बताया कि शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर मामले की गहन जांच की जा रही है।

आज कैंचीधाम तक ले जाएगी शटल सेवा

हल्द्वानी। उत्तराखंड के रजत जयंती वर्ष और रविवार की छुट्टी के चलते कैंची धाम में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ने की उम्मीद है। इसी को देखते हुए कैंचीधाम रूट पर वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित होगा। भक्तों को बाबा के दर्शन कराने के लिए शटल सेवा चलेगी जबकि भारी वाहनों के लिए अलग रूट निर्धारित कर दिया गया है। यातायात और डायवर्जन प्लान के तहत, नैनीताल व ज्योलिकोट से कैंचीधाम जाने वाले पर्यटकों के वाहनों को भवाली सैनिटोरियम में पार्क कर पर्यटकों को शटल सेवा के माध्यम से कैंचीधाम में दर्शन कराए जाएंगे। भीमताल मार्ग से कैंची धाम जाने वाले पर्यटकों के वाहनों को विकास भवन भीमताल में पार्क कर पर्यटकों को शटल सेवा के माध्यम से कैंची धाम भेजा जाएगा। जबकि हल्द्वानी से पर्वतीय क्षेत्र को जाने वाले भारी वाहन भीमताल रोड से खुटानी से मुक्तेश्वर व रामगढ़ होते हुए अपने गंतव्य को जाएंगे। इसके अलावा आवश्यक सेवा वाले भारी वाहन आदि का आवागमन सुचारू रहेगा। अल्मोडा, रानीखेत, बागेश्वर से हल्द्वानी की ओर जाने वाले भारी वाहन क्वारब से रामगढ़, मुक्तेश्वर और खुटानी होते हुए भीमताल से अपने गंतव्य को जाएंगे। पुलिस ने स्थानीय लोगों, पर्यटकों, वाहन स्वामियों व चालकों से अनुरोध किया है कि यातायात प्लान के अनुसार अपनी यात्रा करें।

पुतला फूंकने से रोका, छात्र नेता हिरासत में

हल्द्वानी : वोट चोरी के मुद्दे पर निर्वाचन आयोग के विरोध में शनिवार को जुटे एनएसयूआई कार्यकर्ताओं और पुलिस में तनातनी हुई। कार्यकर्ता एमबीपीजी गेट के बाहर आयोग का पुतला फूंकने पहुंचे थे। स्थिति बिगड़ने पर पुलिस छात्र नेताओं को चौकी ले गई, बाद में उन्हें छोड़ दिया गया।

अमृत विचार

हल्द्वानी, रविवार, 9 नवंबर 2025

सिटी ब्रीफ

जीएमसी में वंदे मातरम का सामूहिक गायन

हल्द्वानी : राष्ट्रगीत वंदे मातरम के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में देशभर में विविध कार्यक्रमों एवं सामूहिक गायन का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में राजकीय मेडिकल कॉलेज, हल्द्वानी के लैक्चर थियेटर में वंदे मातरम का सामूहिक गायन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कॉलेज के संकाय सदस्यगण, अधिकारी वर्ग, कर्मचारीगण तथा छात्र-छात्राओं ने अत्यंत उत्साह और उल्लास के साथ भाग लिया। पूरा वातावरण राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत रहा। वंदे मातरम के गायन के पश्चात उपस्थित जनसमूह ने भारत माता के जयघोष के साथ देश की अखंडता और एकता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस अवसर पर राजकीय मेडिकल कॉलेज, हल्द्वानी के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) जीएस तितियाल ने कहा कि वंदे मातरम केवल एक राष्ट्रगीत नहीं, बल्कि यह हमारे राष्ट्र की आत्मा और अस्मिता का प्रतीक है। इस दौरान एमएस डॉ. अरुण जोशी व अन्य मौजूद रहे।

सतपाल महाराज, बीसी. खंडूरी, तीरथ सिंह रावत व अनिल बलूनी जैसे दिग्गजों के यहां से सांसद बनने के बावजूद नहीं मिली सुविधा

पच्चीस साल में सारे दिग्गज फेल, नहीं चल सकी रामनगर-दून रेल

विनोद पपनै, रामनगर

अमृत विचार: उत्तराखंड राज्य अपनी 25वीं सालगिरह पर रजत जयंती समारोह मना रहा है, लेकिन यह विडंबना है कि राज्य के गठन के इन पच्चीस सालों में भी कुमाऊं के महत्वपूर्ण केंद्र रामनगर के लोगों को राजधानी देहरादून के लिए एक अदद यात्री ट्रेन तक मयस्सर नहीं हो पाई है। यह जनहित से जुड़ा ऐसा बड़ा सवाल है, जिसका जवाब केंद्र व प्रदेश में यहां से चुने गए जन प्रतिनिधियों की चुप्पी में छिपा है।

राज्य निर्माण के बाद से लेकर अब तक सत्ता पर काबिज रहे कांग्रेस और भाजपा दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों की सरकारें रहीं, लेकिन

रामनगर रेलवे स्टेशन पर खड़ी ट्रेन। ● फाइल फोटो

जनता से जुड़ी इस महत्वपूर्ण मांग को किसी भी राजनीतिक दल या उनके नुमाइंदों ने पूरा नहीं किया। रामनगर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले जनप्रतिनिधियों की सूची काफी प्रभावशाली रही है, जिनमें सतपाल महाराज को 2009, बीसी. खंडूरी को 2014, तीरथ सिंह रावत को 2019 और अनिल बलूनी को 2024 में जनता ने चुनकर संसद में भेजा। वहीं विधानसभा में 2002 में योगंबर सिंह रावत, 2002 के उपचुनाव में मुख्यमंत्री एनडी तिवारी, 2007 में दीवान सिंह बिष्ट, 2012 में कैबिनेट मंत्री अमृता रावत, और 2017 में दीवान सिंह बिष्ट को विधायक चुना गया। बावजूद इसके रामनगर से देहरादून को ट्रेन नहीं चल पाई। सीधी रेल सेवा शुरू करना तो दूर, रामनगर की पुरानी और महत्वपूर्ण रेल सेवाएं भी बंद कर दी गईं, जिससे लोगों की मुश्किलें और बढ़ गईं हैं इसमें लखनऊ को चलने वाली महत्वपूर्ण ट्रेन को बंद हुए नौ साल का लंबा समय गुजर चुका है। वहीं 2019 से रामनगर से हरिद्वार को चलने वाली ट्रेन भी बंद कर दी गई। लखनऊ में पर्वतीय अंचलों के लाखों लोग निवास करते हैं और क्षेत्र के लोगों की वहां नातेदारी-रिश्तेदारी भी है। ऐसे में लखनऊ के लिए रेल सेवा न होने से रामनगर ही नहीं, बल्कि आधे कुमाऊं और लोअर गढ़वाल के लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें महानगरों में जाने के लिए रामनगर आना पड़ता है।

भविष्य के गर्भ में छिपा सवाल

राज्य निर्माण के पच्चीस साल पूरे होने पर, स्थानीय जनता की निगाहें अब भी राजधानी के लिए सीधी रेल सेवा शुरू किए जाने की बाट जोह रही हैं। जनहित की यह महत्वपूर्ण मांग कब पूरी होगी, यह सवाल आज भी भविष्य के गर्भ में छिपा है। जनता को उम्मीद है कि आगामी वर्षों में इस उपेक्षा को समाप्त किया जाएगा और रामनगर को रेल कनेक्टिविटी का उसका उचित अधिकार मिलेगा।

धन और समय की बर्बादी

रामनगर कुमाऊं-गढ़वाल का प्रवेश द्वार होने के साथ-साथ विश्व प्रसिद्ध कॉर्बेट नेशनल पार्क का भी केंद्र बिंदु है। इसके बावजूद, राजधानी देहरादून के लिए सीधी रेल सेवा न होने से लोगों को बसों और टैक्सियों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह निर्भरता यात्रियों के समय और धन की बर्बादी का कारण बनती है। अगर भाजपा और कांग्रेस से संसद और विधानसभा में चुनकर गए नुमाइंदों ने दृढ़ निश्चय से प्रयास किए होते, तो रामनगर से पटरी पर लखनऊ और देहरादून के लिए ट्रेनें आज कब की दौड़ गई होतीं।

महिलाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करें

कालाढूंगी: विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान ने सरस्वती शिशु मंदिर चकलुवा में महिला सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम का आयोजन किया। मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख मनीषा जंतवाल ने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनमें आत्मविश्वास व नेतृत्व क्षमता विकसित करना जरूरी है। मीनाक्षी जलाल ने पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं व छात्रों के योगदान की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य वक्ता भावना गुरो ने कहा कि परिवार में शिक्षा व संस्कार का विकास, बच्चों में संस्कार, चरित्र निर्माण, नारी सम्मान, समानता की भावना का विकास होता है। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता व उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य बच्ची सिंह बिष्ट, अनु सैनी, हेमा देवी, ज्योति चुफाल आदि मौजूद रहीं।

लेक्स में धूमधाम से मना रजत जयंती कार्यक्रम

लेक्स में राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती पर कार्यक्रम प्रस्तुत करतीं बालिकाएं।

संवाददाता, भीमताल

अमृत विचार: लेक्स इन्टरनेशनल स्कूल, भीमताल में उत्तराखंड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। शिक्षिका डॉ. नीता पंत ने दैणी है जाए सरस्वती माता के माध्यम से कार्यक्रम की शुरूआत की। 11वीं की छात्रा अर्पिता बिनवाल ने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे।

विद्यार्थियों ने गढ़वाली गीत 'जख आदी हवा सरारारा, कंप्यूटर शिक्षिका उर्वशी पांडे ने कुमांउनी गीत उत्तराखंड मेरी मातृ भूमि, संगीत विभाग के शिक्षक अजय कुमार व राजेश चन्द्रा ने कुमांउनी गीत म्यर होसी हुड़की बाजली घमाघम, कक्षा-6 के छात्र सार्थक पांडे ने कुमांऊनी भजन देवी मैया महाकाली प्रस्तुत किया। छात्राओं ने कुमांऊनी गीत स्वर्गी तारा ज्युनाली राता पर लोक नृत्य प्रस्तुत किया। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक हेमंत बिष्ट के लिखे गढ़रत्न नरेन्द्र सिंह नेगी और मीना राणा द्वारा गाए गए राज्य गीत उत्तराखंड शत-शत वन्दन अभिनन्दन सभी विद्यार्थियों को सुनाया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य एसएस नेगी ने उत्तराखंड से जुड़ी विस्तृत जानकारी से सभी विद्यार्थियों को अवगत कराया। संचालन समन्वयक कंचन जोशी ने किया।

पालिका में अनियमितता का आरोप

सभासदों ने मुख्यमंत्री पुष्कर धामी को ज्ञापन सौंप की मजिस्ट्रीयल जांच कराने की मांग

संवाददाता, रामनगर

अमृत विचार: नगर पालिका परिषद रामनगर में वित्तीय एवं प्रशासनिक अनियमितताओं को लेकर नगर पालिका के कई सभासदों ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को ज्ञापन सौंप मजिस्ट्रेट जांच की मांग की है। सभासदों ने आरोप लगाया कि पालिका प्रशासन नियमों एवं प्रक्रियाओं की लगातार अनदेखी कर रहा है। पालिका की बैठकों में बिना चर्चा और स्वीकृति के निर्णय लिए जा रहे हैं।सदस्यों की आपत्तियों को नजरअंदाज किया जा रहा है और बिना बोर्ड की अनुमति के टेंडर और वर्क ऑर्डर जारी किए जा रहे हैं।

सभासदों ने यह भी कहा कि बोर्ड गठित हुए लगभग आठ माह से अधिक समय हो चुका है, फिर भी अब तक पालिका की स्थायी समितियों का गठन नहीं किया गया है, जो शासन के निर्देशों की खुली अवहेलना है। इन परिस्थितियों में पालिका के कार्यों में पारदर्शिता समाप्त होती जा रही है और जनहित के कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। सभासदों ने मांग की है कि नगर पालिका परिषद रामनगर में हो रही सभी वित्तीय व प्रशासनिक अनियमितताओं एवं भ्रष्टाचार की उच्च स्तरीय मजिस्ट्रेट जांच कराई जाए। ताकि दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई हो सके और जनता का भरोसा पुनः स्थापित किया जा सके। कहा यदि समय रहते जांच नहीं कराई तो भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा। यहां सभासद पारस गोला, सभासद राहुल रावत, सभासद निदा अंजुम, सभासद कौशल्या शर्मा, सभासद मोहम्मद अजमल शामिल रहे।

रामनगर में उप जिलाधिकारी को समस्याओं से अवगत कराते भाजपा कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

नगर पालिका की पार्किंग व शुल्क वसूली पर भाजपाइयों ने जताया विरोध

रामनगर : भाजपा नेताओं ने पालिका पर अवैध पार्किंग शुल्क लेने की का आरोप लगाते हुए एसडीएम से मामले की शिकायत की है। भाजपा जिला उपाध्यक्ष गणेश रावत, ग्रामीण मंडल अध्यक्ष घनश्याम शर्मा, छात्रसंघ उपाध्यक्ष, मनोज पाण्डे, जिला मीडिया सहसंयोजक संजय डोर्बी ने उपजिलाधिकारी को पत्र देकर नगरपालिका परिषद की ओर से पार्किंग व प्रवेश शुल्क के नाम पर की जा रही वसूली को तत्काल रोकने की मांग की है। उप जिलाधिकारी को सौंपे पत्र में कहा गया कि पालिका ने पार्किंग के लिए नगण्य स्थान विकसित किए हैं, फिर भी शुल्क वसूलना तर्कहीन है। वहीं बाहरी पर्यटक व ट्रांसपोर्टरों के वाहन राष्ट्रीय राजमार्ग से मात्र नगर की सीमा से होकर गुजरते हैं, लेकिन उनसे जबरन टैक्स लिया जा रहा है। जबकि वह राष्ट्रीय राजमार्ग या प्रांतीय मार्ग का इस्तेमाल परिवहन हेतु करते हैं। यह पुरानी चुंगी व्यवस्था को पुनर्जीवित करने जैसा है, जो राज्य में पहले ही समाप्त हो चुकी है। ठेकेदारों द्वारा अभद्र व्यवहार की शिकायतें भी सामने आई हैं। पूर्व में ऐसी व्यवस्था शिकायत पर बंद हुई थी, लेकिन अब फिर से शुरू हो गई, जिससे पर्यटक नगरी की छवि खराब हो रही है। भाजपा नेताओं ने जनहित में पालिका द्वारा की जा रही वसूली बंद करने की मांग की।

राज्य आंदोलनकारियों को किया गया सम्मानित

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: उत्तराखंड राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर नैनीताल कलक्ट्रेट में भव्य समारोह का आयोजन कर राज्य आंदोलनकारियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि नैनीताल विधायक सरिता आर्या, विधायक भीमताल राम सिंह कैड़ा, नगर पालिकाध्यक्ष डॉ. सरस्वती खेतवाल, एडीएम शैलेन्द्र सिंह नेगी आदि ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम के दौरान राज्य आंदोलनकारी और वीर नारियों को सम्मानित किया गया। समारोह में उत्तराखंड के सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हुए पारंपरिक लोक गीत, लोकनृत्य एवं वाद्य यंत्रों की प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध किया। इस दौरान उत्तराखंड राज्य आंदोलन के वीर शहीदों के चित्रों को देख लोग भावुक हो उठे। कार्यक्रम के दौरान इन वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम के दौरान जिला प्रशासन ने राज्य आंदोलनकारियों और शहीदों के परिवार जनों को पुष्पमाला और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से आए राज्य आंदोलनकारी, अपर जिलाधिकारी शैलेंद्र नेगी, एसडीएम नैनीताल नवाजिश खलिक उप जिला अधिकारी कैंची धाम मोनिका, तहसीलदार अक्षय भट्ट सहित वरिष्ठ नागरिकों व स्कूली बच्चे मौजूद रहे।

नैनीताल में राज्य आंदोलनकारी को सम्मानित करतीं विधायक सरिता आर्या।

SAHAS Homeo Homeopathic Clinic & Medical Store
साहस होम्यो मेडिकल स्टोर एवं क्लीनिक
जर्मन तथा सभी प्रकार के होम्योपैथिक व बायोकेमिक दवाईयों के विक्रेता

डॉ. यश पाण्डेय
होम्योपैथिक फिजिशियन
बी.एच.एम.एस., जयपुर
चर्म रोग | गुर्दा रोग | पेट रोग
गुदा रोग | लिवर सम्बन्धी रोग
अन्य रोग • स्पॉन्डिलाइटिस • श्वास रोग • मोटापा • दमा
• प्रोस्टेट • माइग्रेन • टान्सिल • एलर्जी • ब्रोनकाइटिस
बच्चों के रोग • पेट का दर्द • अपच • कान में संक्रमण / दर्द • खांसी
• जुकाम • निमोनिया • बुखार • दांत निकलना
साहस होम्यो क्लीनिक
निकट गुरुद्वारा, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी
मो. 9456727473, 9410514531 शनिवार अवकाश

रैगिंग रोकने के लिए प्रचार की जरूरत

रामनगर: पीएनजी महाविद्यालय में एंटी रैगिंग समिति की बैठक में रैगिंग को पूर्णता निषेध बनाने को सुझाव मांगे गए। तय हुआ कि हर तिमाही में रैगिंग को रोकने को प्रचार-प्रसार किया जाएगा। प्राचार्य प्रोफेसर एमसी पांडेय, एंटी रैगिंग समिति की नोडल अधिकारी प्रो. अनुमिता अग्रवाल, मुख्य शास्ता प्रो. एसएस मौर्य, प्रो. जेएस नेगी, डॉ सुमन कुमार, डॉ. प्रमोद जोशी, डॉ. शरद भट्ट, डॉ. पवन टम्टा, डॉ. दीपक खाती, डॉ. कृष्णा भारती, डॉ. संगीता सिंह, गोविंद सिंह जंगपांगी एवं छात्र प्रतिनिधि रहे।

इनरव्हील क्लब ने राज्य स्थापना समारोह मनाया

राज्य स्थापना दिवस पर केक काटतीं क्लब की सदस्य। ● अमृत विचार

संवाददाता, रामनगर

अमृत विचार: इनरव्हील क्लब की महिलाओं ने उत्तराखंड की 25वीं स्थापना दिवस पर ग्रेट मिशन पब्लिक स्कूल के साथ मिलकर मनाया। स्थापना दिवस के अवसर पर बच्चों ने विशेष प्रस्तुति दी। बच्चों ने तरह-तरह के उत्तराखंडी व्यंजन बनाए। जिसे उन्होंने पिछौड़ा, नथ और हंसुली आदि उत्तराखंडी वस्त्र पहनकर व्यंजन परोसा गया। विजेता बच्चों को इनरव्हील क्लब पुरस्कृत किया। क्लब की अध्यक्ष कविता अग्रवाल ने सभी प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं। बच्चों को श्रीमद्भागवत गीता, हनुमान चालीसा जैसी धार्मिक पुस्तकें भेंट की गईं। यहां क्लब की सचिव अंजली जिंदल, सीजीआर पीयूषी अग्रवाल, मीना मित्तल, चारुल जिंदल, विद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ. नलिनी श्रीवास्तव मौजूद थीं।

उपयोगी सिद्ध होगी वन हेल्थः डॉ. त्रिवेणी

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर में आयोजित भारतीय पशु प्रतिरक्षा एवं जैव प्रौद्योगिकी सोसाइटी (आईएसवीआईबी) के 30वें वार्षिक अधिवेशन के समापन पर विभिन्न सत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अनेक वैज्ञानिकों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. प्रवीण मलिक, सीईओ, एग्री इन्नोवेट इंडिया एवं पशुपालन आयुक्त, भारत सरकार ने अपने संबोधन में कहा कि वन हेल्थ में फूड सिस्टम, कृषि, वन्यजीव और पर्यावरण जैसे समग्र पहलू शामिल हैं। आईवीआरआई के निदेशक डॉ. त्रिवेणी दत्त ने कहा कि वन हेल्थ कार्यक्रम शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में एक बहुविषयी एवं अंतरविषयी पहल है, जो न केवल संस्थान बल्कि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। कहा आईवीआरआई का लक्ष्य उद्योगों, विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से भारत को वैश्विक अनुसंधान में अग्रणी बनाना है। अब तक 23 औद्योगिक प्रायोजक संस्थान के अनुसंधान कार्यक्रमों से जुड़े हैं। कहा आईवीआरआई ने हाल ही में ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग के माध्यम से वन हेल्थ पर डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू किया है अगले सत्र से वन हेल्थ में मास्टर डिग्री कार्यक्रम प्रारंभ करने की योजना है, जिसे शैक्षणिक परिषद द्वारा स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। डब्ल्यूएचओ के दक्षिण-पूर्व एशिया के क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. ज्ञानेंद्र गोंगल ने भारत को नवाचार और विशेषज्ञता का अग्रणी देश बताया। आईसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ. बिमलेश मान, डॉ. आरपी सिंह, निदेशक, एफएमडी, भुवनेश्वर, संयुक्त निदेशक (मुक्तेश्वर) डॉ. यशपाल मलिक, डॉ. अमित कुमार रहे।

मुक्तेश्वर में कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथि। ● अमृत विचार

BAREILLY INTERNATIONAL UNIVERSITY
Rohilkhand Medical College Campus, Pilibhit Bypass Road,
Bareilly-243006 (UP) India, Phone : 0581-2526051, 053, 153
Email : registrar@biu.edu.in, Website : www.biu.edu.in
For any query contact : 9520876189, 9105500202, 9105500404
Applications are invited from Indian/NRI/Foreign National Students for Admission to Ph.D. Programmes January 2026 session in the following disciplines
• Faculty of Medical Sciences (All Clinical and Non-Clinical Specialities)
• Faculty of Dental Sciences (All Specilities)
• Faculty of Pharmacy
• Faculty of Allied Health Sciences (Faculty of Paramedical Sciences) (Ph.D. in Medical Laboratory Technology/Physiotherapy)
• Faculty of Nursing M.Sc. (N) with 3 years teaching or clinical experience
• Humanities and Journalism English
• Faculty of Management
Application Fee
■ For Indian Candidate Rs. 2000/-
■ NRI/Foreign National Candidate Rs. 5000/- or $60 USD
Last Date of Receiving Application : 30th November, 2025
Application Submission Address : To, The Registrar, Administrative Block, Bareilly International University, Bareilly-243006 (U.P.) India
For more details and application form & application fee, visit univerisity website : www.biu.edu.in
(https://biu.edu.in/reseach/Latest-Application-form-for-PHD-programme.pdf)

सुविधा

धूल के साथ-साथ जाम से भी निजात मिली, स्थानीय जनता ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया

सड़क चौड़ी हुई तो भीमताल में सरपट दौड़ने लगे वाहन

संवाददाता, भीमताल

अमृत विचार: भीमताल बाईपास मोटर मार्ग में लोक निर्माण विभाग ने लगभग 300 मीटर में सड़क चौड़ीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया है। डामरीकरण का कार्य भी लगभग समाप्ति पर है। इससे जहां क्षेत्र से लगी आबादी को धूल से निजात मिलेगी वहीं दूसरी तरफ लगातार प्रतिदिन लगने वाले यातायात जाम से भी निजात मिल गई है।

स्थानीय जनता ने प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और क्षेत्रीय विधायक राम सिंह कैड़ा का आभार व्यक्त किया है। आभार व्यक्त करने वालों में जिला मंत्री मनोज भट्ट मंडल अध्यक्ष कमल जोशी पूर्व मंडल अध्यक्ष पंकज जोशी, पूर्व जिला पंचायत सदस्य अनिल चनौतियां, नितेश बिष्ट, पूर्व सभासद भारत लोशाली, व्यापारी भास्कर भगवाल, पूर्व मंडल अध्यक्ष कमला आर्य, समेत दर्जनों लोग शामिल है।

अतिक्रमण बरकरार: लोनिवि ने सड़क तो चौड़ी कर दी लेकिन मार्ग किनारे अतिक्रमण अभी भी बरकरार है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अतिक्रमण हट जाता तो स्थिति और बेहतर होती। लोगों ने इसके लिए कुमाऊं मंडल आयुक्त से गुहार लगाने की बात कही है। यदि फिर भी कोई कार्रवाई नहीं की गई तो न्यायालय की शरण में जाएंगे। उन्होंने नवनिर्मित मोटर मार्ग में रामलीला ग्राउंड के पीछे स्पीड ब्रेकर लगाने की मांग भी की है।

भीमताल में चौड़ीकरण के बाद बाइपास सड़क में सफर हुआ आसान। ● अमृत विचार

क्षेत्र की जनता की समस्या को देखते हुए मुख्यमंत्री से चौड़ीकरण की मांग की गई थी। सड़क के चौड़ा होने के बाद स्थानीय जनता को राहत है। आगे का मार्ग भी चौड़ा हो इसका प्रयास भी किया जा रहा है।
–राम सिंह कैड़ा, विधायक भीमताल

इस मोटर मार्ग को चौड़ा करने की मांग कई समय से लंबित थी। मोटर मार्ग कै चौड़ा होने से कई समस्याओं का एक साथ समाधान हुआ है। –मनोज भट्ट, जिला मंत्री भाजपा

सिटी ब्रीफ

शिव के 100 अवतारों का प्रसंग सुनाया

हल्द्वानी : बिठौरिया स्थित प्राचीन भूमिया मंदिर में चल रही शिव महापुराण ज्ञान कथा के नवें दिन व्यास बसंत बल्लभ त्रिपाठी ने भगवान शिव के 100 अवतारों और 12 ज्योतिर्लिंगों की कथा सुनाई। कार्यक्रम में पंडित उमेश चंद्र त्रिपाठी ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजा कराई। लगभग पांच सौ वर्ष पुराने हल्दू वृक्ष के नीचे स्थित इस मंदिर में प्रतिदिन सैकड़ों श्रद्धालु कथा श्रवण के लिए पहुंच रहे हैं। मंदिर समिति ने बताया कि 9 नवंबर को हवन तथा 10 नवंबर को पूर्णाहुति व भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

लाइन मेंटेनेंस के लिए छह घंटे बिजली ठप

हल्द्वानी : लाइन मेंटेनेंस के लिए यूपीसीएल ने शनिवार को दो बिजलीघरों में छह घंटे बिजली की आपूर्ति बंद रखी। सुबह से ही सप्लाई बंद होने से पेयजल के ट्यूबवेल भी नहीं चल सके। जिससे लोगों को बिजली के साथ ही पानी का संकट भी झेलना पड़ा। शनिवार को रानीबाग और गौलापार बिजलीघर से सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक सप्लाई बंद रही। बिजली नहीं होने से पेयजल के ट्यूबेल भी छह घंटे तक नहीं चल सके। इससे घरों तक पीने का पानी भी नही पहुंच सका। ऊर्जा निगम ने ईई प्रदीप कुमार ने बताया कि लाइन मेंटेनेंस कार्य किए जाने से आपूर्ति बाधित रही।

एमबी मैदान में बिखरे जोहार संस्कृति के रंग

तीन दिवसीय जोहार महोत्सव का शुभारंभ, भव्य शोभा यात्रा में लोकसंस्कृति और परंपराओं की मिली झलक

हल्द्वानी में आयोजित जोहार महोत्सव में परंपरागत वेशभूषा में जोहार समाज की महिलाएं। ● अमृत विचार

हल्द्वानी में शोभायात्रा में परापरागत वाद्य यत्रों के साथ नाचते-गाते जोहार समाज के लोग।

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचारः एमबी इंटर कॉलेज मैदान में शनिवार को तीन दिवसीय जोहार महोत्सव का शुभारंभ हुआ। जोहार सांस्कृतिक व वेलफेयर सोसायटी की ओर से आयोजित इस 16वें महोत्सव की शुरुआत शनिवार दोपहर जोहार मिलन केंद्र से महोत्सव स्थल तक निकाली गई भव्य शोभायात्रा के साथ हुई। यह तीन दिवसीय आयोजन 10 नवंबर तक चलेगा।

शोभायात्रा में शौका समाज की समृद्ध परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहरों का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिला। शौका समाज के लोग अपने पारंपरिक परिधानों में सजे नजर आए, जिसने सभी का ध्यान आकर्षित किया। महोत्सव का उद्घाटन मेयर गजराज बिष्ट ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि राजेंद्र पांगती ने जोहार महोत्सव जैसे आयोजनों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे आयोजन किसी भी समाज की संस्कृति को संरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वंदना से हुआ, जिसके बाद कई मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। तीन दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में हर दिन सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रमों की श्रृंखला जारी रहेगी। महोत्सव का एक खास आकर्षण यहां लगाए गए पारंपरिक भोजन और पोशाकों के विशेष स्टॉल हैं। ये स्टॉल मेले में आने वाले लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं, जहां आगंतुक पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद ले सकते हैं। सीमांत क्षेत्र के लोगों की पारंपरिक पोशाकें, वाद्य यंत्र और नृत्य प्रस्तुतियां विशेष आकर्षण का केंद्र होंगी।

महोत्सव में पर्वतीय सीमांत क्षेत्र की जड़ी-बूटियों, औषधियों, हस्तशिल्प, लोककला और लोकसंस्कृति का अनोखा संगम देखने को मिलेगा। जोहार समिति के अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह पांगती ने बताया कि यह महोत्सव न सिर्फ जोहार घाटी की संस्कृति का प्रदर्शन है, बल्कि सीमांत क्षेत्र के लोगों के आपसी जुड़ाव और विरासत को सहेजने का माध्यम भी है। कहा कि हमारा उद्देश्य नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ना है। इस महोत्सव के माध्यम से उन्हें आधुनिक पीढ़ी तक पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। आयोजन में लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक व्यंजन, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं और लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां होंगी, महोत्सव न सिर्फ सीमांत संस्कृति की झलक दिखाएगा बल्कि उत्तराखंड की लोक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का सशक्त प्रयास साबित होगा।

नई पीढ़ी का अपनी जड़ों से जुड़ना जरूरी: मठपाल

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : दीक्षांत इंटरनेशनल स्कूल में राज्य स्थापना दिवस की 25वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वार्षिक उत्सव और कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय "रंगीलो पहाड़" रखा गया, जो उत्तराखंड की जीवंत संस्कृति, परंपराओं और प्राकृतिक सौंदर्य पर आधारित था।

मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. यशोधर मठपाल ने कहा कि हमें अपनी समृद्ध संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। नई पीढ़ी जब अपनी जड़ों से जुड़ती है, तभी समाज तरक्की करता है। इस दौरान विद्यार्थियों ने लोकनृत्य, छोलिया, झोड़ा, तांदी व हरेला, इगास, बसंत पंचमी, बैठी-खड़ी होली जैसे लोक पर्वों की झलक से दर्शकों का मन मोह लिया। प्रधानाचार्य रूपक पांडे ने कहा कि विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों की सराहना की। प्रबंधक समित टिक्कू ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना का विकास करते हैं। इस मौके पर नगर आयुक्त पारितोष वर्मा, कुलदीप पांडे, दीक्षांत जूनियर स्कूल की प्रधानाचार्या प्रभलीन सलूजा, हितेश पंत, रमेश द्विवेदी, पीके रौतेला, मनि पुष्पक जोशी, सुनील जोशी, अरविंद और सौरभ मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

दीक्षांत स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देते विद्यार्थी। ● अमृत विचार

लोक संस्कृति के कार्यक्रमों ने बांधा समां

क्वींस स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मौजूद शिक्षक व प्रधानाचार्य।

ऑर्डन प्रोग्रेसिव स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देती छात्राएं।

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : नैनीताल रोड स्थित क्वींस सीनियर सेकेंडरी स्कूल में उत्तराखंड स्थापना दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों ने सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, जिनमें लोकगीत, लोकनृत्य और राज्य की संस्कृति पर आधारित नाट्य मंचन शामिल रहा। बच्चों ने पारंपरिक वेशभूषा में उत्तराखंड की झलक प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया।

स्कूल के प्रधानाचार्य बीबी पांडे ने कहा कि प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, वीर सपूतों और प्राकृतिक सौंदर्य पर सभी को गर्व होना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को राज्य के विकास में योगदान देने का संदेश दिया। कार्यक्रम के अंत में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

चिपको आंदोलन पर आधारित नाटिका ने जीता दिल

हल्द्वानी : लामाचौड़ स्थित स्वस्त्ययन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती पर स्कूल की विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की श्रृंखला में कक्षा 7 की सेजल व कल्पिता ने प्रदेश के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी। साथ ही छात्र- छात्राओं ने चिपको आंदोलन से चर्चित गौरा देवी के जीवन पर आधारित नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। कुमाऊनी लोकगीतों और विद्यार्थियों की ओर से कुमाऊनी बैंड की प्रस्तुति ने सभी का मन-मोह लिया। इस मौके पर उपप्रधानाचार्या ने उत्तराखंड के इतिहास पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एमआईआईटी कॉलेज आफ नर्सिग की प्रधानाचार्या प्रो. स्वप्ना वर्गीज ने किया। इस मौके पर विद्यालय की उपप्रधानाचार्या लवी शर्मा, समन्वयिका मुक्ता नेगी सहित अन्य मौजूद रहे।

ऐपण प्रतियोगिता हुई

हल्द्वानी : उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस रजत जयंती कार्यक्रम में राजकीय महिला डिग्री कॉलेज में ऐपण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रतियोगिता में छात्राओं ने उत्तराखंड की लोककला की सुंदर झांकियां प्रस्तुत कीं। प्रतियोगिता में नीतू पौड़ियाल प्रथम स्थान, अंजलि पांडे द्वितीय और पिंकी बिनवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य डॉ. आभा शर्मा ने छात्राओं के प्रयासों की सराहना करते हुए लोक कलाओं को जीवंत बनाए रखने के महत्व पर प्रकाश डाला।

कांग्रेस एससी प्रकोष्ठ के नियुक्ति पत्र दिए

हल्द्वानी: नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने अपने आवास पर कांग्रेस कमेटी एससी प्रकोष्ठ नैनीताल के जिलाध्यक्ष इन्दर पाल आर्य के नेतृत्व में जिले के विधानसभा अध्यक्षों और ब्लॉक अध्यक्षों को नियुक्त पत्र सौंपे।

यशपाल आर्य ने कहा कि इन्दर पाल आर्य ने अपनी मेहनत और समर्पण से संगठन को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्दर पाल आर्य ने कहा हमारा लक्ष्य है नैनीताल जिले समेत पूरे उत्तराखंड में कांग्रेस पार्टी को और अधिक मजबूत बनाना और समाज के सभी वर्गों के लोगों को पार्टी से जोड़ना है।

आयुक्त ने सुनीं लोगों की समस्याएं

- मंडलायुक्त दीपक रावत का जनता मिलन कार्यक्रम
- कई समस्याओं का मौके पर ही किया गया समाधान

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचारः कुमाऊं आयुक्त व मुख्यमंत्री के सचिव दीपक रावत ने शनिवार को कैम्प कार्यालय हल्द्वानी में आयोजित जनता मिलन कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से आए आम लोगों की समस्याओं को सुना।

आयुक्त दीपक रावत ने प्रत्येक प्रकरण पर विस्तार से विचार किया और कई शिकायतों व जनसमस्याओं का निस्तारण मौके पर ही किया। जिन मामलों में तत्काल समाधान संभव नहीं था, उनके लिए उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों को त्वरित कार्यवाही करने और निर्धारित समय सीमा में कार्यवाही पूर्ण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। जन समस्याओं के समाधान करते हुए आयुक्त ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे जनता की समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहें और त्वरित व प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित करें।

जनता मिलन कार्यक्रम में लोगों की समस्याएं सुनते मंडलायुक्त दीपक रावत।

घर के पास घेरकर युवक को पीटा

हल्द्वानी : काठगोदाम में व्हाट्सएप पर हुई गाली-गलौज ने मारपीट का रूप ले लिया। आरोप है कि तीन सगे भाइयों ने अपने साले की मदद से युवक को अपने ही घर के पास बुलाकर घेर लिया और फिर बेरहमी से पीट डाला। इतना ही नहीं आरोपियों ने खुद को चोट पहुंचाकर घटना को मोड़ देने की कोशिश की। पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

आदर्श कालोनी काठगोदाम निवासी विजय भंडारी ने पुलिस को दी तहरीर में लिखा, 13 अक्टूबर की रात चांदमारी निवासी राजू गोराई ने उसे व्हाट्सएप मैसेज कर गालियां दी और अपने घर के पास बुलाया। वहां राजू अपने तीन भाइयों और साले के साथ मौजूद था। सभी ने मिलकर विजय पर हमला बोल दिया। लात-घूसों से पीट कर उसे बुरी तरह घायल कर दिया।

एसटीएच में डिजिटल एक्स-रे मशीन लगाई

- मरीजों को अब नहीं लगानी पड़ेगी लंबी लाइन

संवाददता, हल्द्वानी

अमृत विचारः डॉ. सुशीला तिवारी अस्पताल (एसटीएच) में मरीजों की सुविधा को देखते हुए नई डिजिटल एक्स-रे मशीन स्थापित कर दी गई है। मशीन के इंस्टॉलेशन के बाद अब इसके ट्रायल शुरू हो गए हैं। अस्पताल प्रशासन का कहना है कि नई मशीन के चालू होने से एक्स-रे विभाग में कामकाज की गति दोगुनी हो जाएगी और मरीजों को अब लंबे समय तक लाइन में खड़ा नहीं रहना पड़ेगा।

अस्पताल के एमएस डॉ. अरुण जोशी ने बताया कि अब अस्पताल में दो एक्स-रे मशीनें हो जाएंगी। इससे मरीजों को तेज़ी से एक्स-रे सुविधा उपलब्ध कराई जा सकेगी। उन्होंने बताया कि एसटीएच में रोजाना 400 से अधिक एक्स-रे किए जाते हैं, जिसके कारण पहले मरीजों को लंबा इंतज़ार करना पड़ता था। नई डिजिटल मशीन लगने के बाद न केवल मरीजों का समय बचेगा, बल्कि रिपोर्ट की गुणवत्ता और स्पष्टता भी पहले से बेहतर होगी। डॉक्टरों को रोग की पहचान करने में आसानी होगी और मरीजों का इलाज समय पर हो सकेगा। अस्पताल प्रशासन का कहना है कि यह कदम मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए उठाया गया है। अस्पताल में अन्य डायग्नोस्टिक सेवाओं को भी डिजिटल और हाई-टेक बनाने की दिशा में काम किया जाएगा।

विधायक प्रतिनिधि भगत ने किया निरीक्षण

हल्द्वानी: विधायक प्रतिनिधि विकास भगत ने शनिवार को करायल चतुर सिंह महर्षि स्कूल से प्रेमपुर लोसज्ञानी चौराहे तक नहर कवरिंग व सड़क चौड़ीकरण कार्य के प्रस्तावित स्थल का निरीक्षण किया।

इस दौरान लोक निर्माण, ऊर्जा, जल संस्थान, सिंचाई विभाग और यूयूएसडीए के अधिकारी मौजूद रहे। विकास भगत ने बताया कि मुख्यमंत्री धामी ने विधायक बंशीधर भगत के प्रयासों से डॉ. सुशीला तिवारी अस्पताल से हुंडई शोरूम तक नहर कवरिंग कार्य को स्वीकृति दी है, जिसके टेंडर जारी हो चुके हैं। कहा कि करायल से प्रेमपुर लोसज्ञानी चौराहे तक नहर कवरिंग व सड़क चौड़ीकरण कार्य को भी सहमति मिल चुकी है। विकास भगत ने लोक निर्माण विभाग को सभी संबंधित विभागों से विमर्श कर कार्य का प्राकंलन शासन को भेजने के निर्देश दिए।

शिविर में रक्तदान करते कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

व्यापार मंडल ने लगाया रक्तदान शिविर

हल्द्वानी, अमृत विचार : उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर अखिल एकता उद्योग व्यापार मंडल और बजरंग दल ने शनिवार को रक्तदान शिविर लगाया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी अतुल कुमार गुप्ता ने कहा कि हमें राज्य आंदोलनकारियों के बलिदान को कभी नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि रक्तदान कर हम किसी व्यक्ति का जीवन बचा सकते हैं, कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं। गुप्ता ने विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं के इस नेक कार्य की सराहना की और आशा जताई कि भविष्य में भी ऐसे आयोजन होते रहेंगे, ताकि जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराकर उनका जीवन बचाया जा सके। शिविर में अखिल एकता उद्योग व्यापार मंडल के पदाधिकारी अतुल कुमार गुप्ता, अंकित पाल, सोनू बेलवाल, राघवेंद्र चौहान, चंद्रशेखर पांडे, सोनू पलाडिया, मोहित तिवारी आदि अनेक कार्यकर्ताओं ने रक्तदान कर सहयोग किया।

कविता व इशिका का एकता शिविर में चयन

संवाददाता, हल्द्वानी

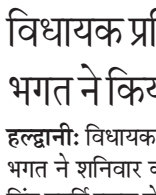

कविता फुलारा और इशिका पांडे।

अमृत विचार : राजकीय महिला डिग्री कॉलेज की दो स्वयंसेवी कविता फुलारा और इशिका पांडे का चयन राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर के लिए हुआ है। यह शिविर मंगलवार (11 नवंबर) से 17 नवंबर तक कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा में आयोजित होगा। जिसमें देशभर से चुने गए स्वयंसेवी राष्ट्रीय एकता, नेतृत्व और विविध सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेंगे।

प्रदेश से कुल चार स्वयंसेवियों का चयन होना था, जिनमें से दो स्वयंसेवी महिला कॉलेज की हैं। एनएसएस प्रभारी डॉ. रितुराज पंत ने बताया कि कविता फुलारा और इशिका पांडे ने एनएसएस की गतिविधियों में लगातार सक्रियता, अनुशासन और प्रतिबद्धता दिखाई है, जिसके आधार पर उनका चयन हुआ है। उन्होंने बताया कि शिविर के दौरान स्वयंसेवियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय एकता से जुड़े सत्र, सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यशालाएं और नेतृत्व विकास की गतिविधियों का अनुभव मिलेगा।

उत्तराखण्ड कृषि उत्पादन विपणन बोर्ड

श्री पुष्कर सिंह धामी
मा. मुख्यमंत्री
उत्तराखण्ड सरकार

श्री गणेश जोशी
मा. कृषि मंत्री
उत्तराखण्ड सरकार

डॉ. अनिल कपूर 'डब्बू'
मा. अध्यक्ष
उत्तराखण्ड कृषि उत्पादन विपणन बोर्ड

उत्तराखण्ड कृषि उत्पादन विपणन बोर्ड द्वारा सुधारात्मक एवं कलयाणकारी योजनाएं

सुधारात्मक कार्य:-
- उत्तराखण्ड कृषि उत्पाद (विकास एवं विनियमन)
- अधिनियम 2011 में
- संविदा खेती
- निजी मण्डियाँ
- उपज की सीधी खरीद जैसे सुधारात्मक कदम

आधुनिकीकरण
- कम्प्यूटरीकृत मण्डियों
- इलैक्ट्रॉनिक धर्मकॉटे व सीसीटीवी नेटवर्क
- www.ukapmb.org, agmarknet.nic.in तथा डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से बाजार भावों का प्रदर्शन
- ई-राष्ट्रीय कृषि बाजारो (ई-नाम) की स्थापना 20 मण्डियां।
- कृषकों को ई-पेमेन्ट की सुविधा
- कृषकों को pop plate form की सुविधा उपलब्ध कराना।
- कृषकों के उत्पादकों की ई-नाम लेब में गुणवत्ता जाँच की सुविधा।
- कृषि प्रयोगशालाओं की स्थापना।

विकास कार्य :-
- राज्य स्थापना से वर्तमान तक
- 1330 कि०मी० सड़कें
- 4118 हैण्ड पम्प
- 07 रज्जू मार्ग
- 21 संग्रह केन्द्र
- 07 कृषक उपभोक्ता बाजार

कल्याणकारी योजनायें :-
- कृषि छात्रों को छात्रवृत्ति
- किसानों को कृषि कार्य के दौरान दुर्घटना पर त्वरित सहायता
- कृषक उत्पादक क्षति सहायता योजना
- पर्वतीय जैविक उत्पाद हेतु मल्टी ग्रेन प्रोसोसिंग प्लान्ट (रुद्रपुर)

डा० अनिल कपूर (डब्लू)
अध्यक्ष
उत्तराखण्ड कृषि उत्पादन विपणन बोर्ड
रूद्रपुर (उधम सिंह नगर)

पत्रांक : उ.कृ.उ.वि. बोर्ड/विज्ञापन/150-XII/2025-1766 दिनांक : 07-11-2025

सम्मानित राज्य आंदोलनकारियों के साथ महापौर, डीएम, पूर्व विधायक ठुकराल व अन्य अधिकारी। ● अमृत विचार

काशीपुर में सम्मानित हुए आंदोलनकारियों के साथ अतिथि। ● अमृत विचार

रजत जयंती पर राज्य आंदोलनकारी हुए सम्मानित

राज्य स्थापना दिवस पर शहीदों के चित्रों पर पुष्प अर्पित किए गए, जिला कार्यालय सभागार में आयोजित हुआ कार्यक्रम

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार: राज्य स्थापना रजत जयंती दिवस के अवसर पर राज्य आंदोलनकारियों को सम्मानित किया गया। इस दौरान महापौर विकास शर्मा, जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया, पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल, एसपी उत्तम सिंह नेगी समेत राज्य आंदोलनकारियों व अन्य अधिकारियों ने राज्य आंदोलन में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले शहीदों के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गयी। साथ ही राज्य आंदोलनकारियों को को पुष्पमाला व अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

शनिवार को जिला कार्यालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महापौर शर्मा ने राज्य की रजत जयंती की बधाई देते हुए कहा कि राज्य आंदोलनकारियों के कारण ही हमें उत्तराखंड राज्य मिला है। लम्बे आंदोलन व मांग के बाद 9 नवंबर 2000 को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने मानवीय संवेदनाओं, मूल भावनाओं का सम्मान करते हुए राज्य गठन कर आंदोलनकारियों के के सपनों के अनुरूप राज्य का तोहफा दिया।

उन्होंने कहा कि युवा राज्य के इन 25 वर्षों के सफर में बहुत कुछ पाया है और भी बहुत कुछ पाना बाकी है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने संकल्प लिया है कि राज्य को देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाएंगे। उन्होंने कहा कि शहीदों के सपनों के अनुरूप राज्य के चहुंमुखी विकास के लिए सभी को एकजुट होकर कार्य करना होगा। जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया ने राज्य स्थापना रजत जयंती को बधाई देते हुए शहीदों को नमन किया। उन्होंने कहा कि राज्य आंदोलनकारियों ने जिन अपेक्षाओं आकांक्षाओं को लेकर राज्य गठन के लिए आंदोलन किया गया था उनकी भावनाओं के अनुरूप निरंतर कार्य किये जा रहे हैं।

चित्रकला में मनीष और भाषण में कामिनी अव्वल

रुद्रपुर : राज्य स्थापना रजत जयंती के अवसर पर विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करायी गयी जिनके विजेताओं को अतिथियों ने प्रमाण पत्र दिए। चित्रकला में मनीष चावला ने पहला, अमन सागर ने दूसरा व दीपक ने तीसरा, भाषण प्रतियोगिता में कामिनी ने पहला, राधा मौर्य ने दूसरा, कोमल तिवारी ने तीसरा, निबंध प्रतियोगिता में परी ने पहला, दुर्गेश कुमार ने दूसरा, अनिकेत राठौर ने तीसरा, क्विज प्रतियोगिता में देवा विश्वास ने पहला, मयंक ने दूसरा, अभिजीत ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। तहसील रुद्रपुर में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों को भी सम्मानित किया गया। वहीं सनातन धर्म कन्या इंटर कॉलेज व गुरुनानक कन्या इंटर कॉलेज के बच्चों ने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। जिस पर मुख्य अतिथियों ने नकद पुरस्कार दिया गया।

ये लोग रहे मौजूद

एसपी सिटी उत्तम सिंह नेगी, उप जिलाधिकारी मनीष बिष्ट, मुख्य शिक्षा अधिकारी केएस रावत, राज्य आंदोलनकारी राजकुमार ठुकराल, अनिल चौहान, देवकी बिष्ट, कमला बुधानी, कान्ति भाकुनी, जानकी जोशी, सावित्री जोशी, माधवानंद जोशी, जहांगीर उबेद कुरैशी, अवतार सिंह, केवल कृष्ण बत्रा, सुनील चौहान, एसके नैयर, पीसी शर्मा, जैड एम सिद्दीकी, बलराज सिंह, कमल पांडे, हरीश जोशी समेत कई लोग मौजूद रहे।

काशीपुर में राज्य आंदोलनकारियों को किया गया सम्मानित

काशीपुर : उत्तराखंड के रजत जयंती उत्सव के अवसर पर ब्लॉक काशीपुर में उत्तराखंड राज्य आंदोलन के आंदोलनकारियों का सम्मान किया गया। उक्त आयोजन में राज्य आंदोलनकारी रवि शर्मा, भारत भूषण, दीपक बाली, शगुन बत्रा पत्नी संजय बत्रा, संजय आर्य, वीरेंद्र कुमार, संजीव कुमार, शोभित शर्मा, राजेंद्र पाल, जयंत बशिष्ठ, नरपत सिंह राजपूत का माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। साथ ही उत्तराखंड राज्य आंदोलन के अमर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। वहीं स्कूल के बच्चों द्वारा अपनी अद्भुत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। वहां पर ब्लॉक प्रमुख चंद्रप्रभा, विधायक त्रिलोक सिंह चीमा, महापौर दीपक बाली, एसडीएम अभय प्रताप सिंह, तहसीलदार पंकज चंदोला, बीडीओ कमल किशोर पांडे, एएसपी स्वप्न कुमार सिंह, सीओ दीपक सिंह, कोतवाल हरेंद्र चौधरी, आईटीआई थाना एसओ कुंदन रौतेला, पार्षद विजय कुमार बॉबी आदि मौजूद रहे।

खटीमा में राज्य आंदोलनकारी शेर सिंह दिगारी को सम्मानित करते एडीएम।

खटीमा में भी हुआ सम्मान समारोह

खटीमा : उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस के रजत जयंती वर्ष पर प्रदेश सरकार और जिला प्रशासन के तत्वावधान में आयोजित सम्मान समारोह में राज्य आंदोलनकारियों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। शहीद स्थल पर पालिकाध्यक्ष रमेश चंद्र जोशी की अध्यक्षता में आयोजित सम्मान समारोह में अपर जिलाधिकारी पंकज उपाध्याय, उपजिलाधिकारी तुषार सैनी, भाजपा जिलाध्यक्ष कमल जिंदल, प्रमुख राज्य आंदोलनकारी कैप्टन शेर सिंह दिगारी, गोपाल सिंह बिष्ट, नंदन सिंह खड़ायत, हिमांशु बिष्ट, प्रकाश तिवारी, भैरव दत्त पांडे, रमेश जोशी आदि ने शहीद स्मारक पर शहीद आंदोलनकारियों को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। पालिकाध्यक्ष जोशी, राज्य आंदोलनकारी गोपाल बिष्ट, कैप्टन शेर दिगारी ने सभा को संबोधित करते हुए राज्य प्राप्ति के लिए उठाई गई दिक्कतों और अनुभवों को जनता के साथ साझा किया। समारोह में एडीएम उपाध्याय और एसडीएम सैनी ने 23 दिन जेल में रहे हयात सिंह बुंग्ला, रामपाल मेहता, प्रतिमन सिंह कन्याल सहित शहीदों के आश्रितों और क्षेत्र के आंदोलनकारियों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। समारोह में स्कूली बच्चों ने कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। संचालन अमित कुमार पांडे और गुणवंत जोशी ने किया। इस अवसर पर अनिल ठाकुर, शिवशंकर भाटिया, कपिल सामंत, पूरन बिष्ट, किशन सिंह बिष्ट, भूपेंद्र भंडारी, शांति ज्याला, विमला मुंडेला, जानकी गोस्वामी, चंचल सिंह खोलिया, राम सिंह, दुर्गा सिंह सामंत, राज कपूर, कमला जोशी, भागीरथी देवी, भुवन भट्ट, महेंद्र ठाकुर, योगेंद्र पुनेरा, तरुण ठाकुर, अनिल ओली, मनोज वाधवा, पार्वती चंद, तारा चंद, नवीन ओली, सावित्री कन्याल, देवेंद्र भट्ट आदि मौजूद रहे।

स्कूलों में मनाया गया राज्य स्थापना दिवस

रजत जयंती पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते नोज़गे पब्लिक स्कूल के बच्चे।

संवाददाता, खटीमा

अमृत विचार: उत्तराखंड स्थापना दिवस पर नोजगे पब्लिक स्कूल में प्रबंध निर्देशिका सुरेंद्र कौर और प्रधानाचार्य आरिज अल्वी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, रंगोली और खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया। एमडी कौर ने बच्चों को देवभूमि उत्तराखंड राज्य की स्थापना से अवगत कराया।

डायनेस्टी मॉडर्न गुरुकुल एकेडमी में स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के मध्य कुमाउनी व्यंजन, पहाड़ी रसोई प्रतियोगिता संपन्न कराई गई। प्रतियोगिता में उत्तम व्यंजन बनाने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय कुमाउनी परिधानों में उपस्थित छात्राओं ने पहाड़ की संस्कृति पर आधारित अनेक सुंदर कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रबंध निदेशक धीरेंद्र चंद्र भट्ट ने कहा कि उत्तराखंड को देवभूमि या "देवताओं की भूमि" के रूप में जाना जाता है। इस अवसर पर डायरेक्टर प्रेमा भट्ट, प्रधानाचार्य चंद्रकांत पनेरु, मनीष चंद, विक्टर आईवन, सुरेश ओली आदि उपस्थित रहे। सरस्वती एकेडमी, बिगराबाग में कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की चेयरपर्सन ज्योति पाल और प्रधानाचार्य रामयश जी ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बच्चों के लिए रंगारंग सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उत्तराखंड सामान्य ज्ञान में अंशिका, भाषण में अनुज कुमार ने प्रथम स्थान हासिल किया। शाहजी पब्लिक स्कूल में राज्य स्तरीय क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। विभिन्न राउंड के बाद प्रतियोगिता में प्रथम टीम बी रामिजा, सोमिया, शायनूर, टीम सी इरानूर, सिप्टैन, इकरा द्वितीय, टीम डी फैजान रजा, सुब्हान, उमम तृतीय रहे। विजयी टीमों को मैनेजिंग डायरेक्टर मोहम्मद कैफ अली सिद्दीकी ने प्रोत्साहित किया।

डायनेस्टी मॉडर्न गुरुकुल एकेडमी में कार्यक्रम प्रस्तुत करते बच्चे।

राज्य स्थापना दिवस शुभकामना संदेश
महिला कल्याण विभाग, उत्तराखण्ड

जनपद में महिला कल्याण विभाग के अन्तर्गत मिशन वात्सल्य योजना के तहत संचालित चाइल्ड हेल्प लाईन 1098 चाईल्ड हेल्पलाईन 1098 (24x7) संचालित है जिसके अन्तर्गत आवश्यकता की श्रेणी के बच्चों एंव अपराध के शिकार बच्चों हेतु त्वरित एंव आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है। चाईल्ड हेल्पलाईन 1098 के अन्तर्गत निम्न श्रेणी बच्चों को त्वरित सहायता दी जाती है।

1. गुमशुदा बच्चे
2. निराश्रित लावारिस बच्चे
3. घर से भागे हुए बच्चे
4. दिव्यांग बच्चे
5. गंभीर बीमारी से ग्रसित बच्चे
6. देखरेख एंव संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चे
7. बाल श्रम एंव कूड़ा बीनने वाले बच्चे

अन्य सुविधाएं :- आपातकालीन स्थिति में पुलिस के साथ समन्वय विधिक सहायता, परामार्श सेवाऐ यदि कोई बच्चा (0 से 18 वर्ष) खोया हुआ, अकेले घूमता हुआ, अनाथ, मुसीबत में फंसा हुआ बाल श्रम, भिक्षावृत्ति या बाल विवाह होते हुए दिखाई दे तो वे 1098 पर सूचित कर सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु :-

1. कार्यालय जिला प्रोवेशन अधिकारी / बाल संरक्षण अधिकारी विकास भवन कक्ष संख्या 108 रूद्रपुर उधमसिंह नगर
2. चाईल्ड हेल्प लाईन 1098 राजकीय सम्प्रेक्षण गृह रूद्रपुर उधमसिंहनगर सम्पर्क सूत्र - 997804097 पर भी सम्पर्क किया जा सकता है।

(व्योमा जैन)
जिला प्रोबेशन अधिकारी, ऊधमसिंह नगर

कार्यालय जिला प्रोवेशन अधिकारी/जिला बाल संरक्षण अधिकारी उधमसिंह नगर

पत्रांक : 1095 म०क०/विज्ञप्ति/2025-26 दिनांक : 06 नवम्बर, 2025

"समस्त विश्व में भारत का मान बढ़ाएं,
प्लास्टिक पर हो पूर्ण प्रतिबन्ध,
ऐसी जन चेतना की अलख जगायें"

राज्य स्थापना दिवस 09 नवम्बर, 2025 की
स्थापना दिवस के अवसर पर जिला पंचायत ऊधमसिंह नगर
की ओर से हार्दिक शुभकामनायें।

जनपद उधम सिंह नगर के ग्रामीण क्षेत्र के समस्त व्यवसायियों से अनुरोध है कि वे जिला पंचायत के सम्पत्ति एवं विश्व कर एवं लाइसेंस का भुगतान यथाशीघ्र इसी वितीय वर्ष में जमा करने का कष्ट करें। जिला पंचायत जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों हेतु सदैव तत्स है।

जनपद ऊधम सिंह नगर के समस्त व्यवसायियों/ग्रामवासियों से यह अपेक्षा की जाती है कि सिगंल यूज पॉलिथीन और प्लॉस्टिक/थर्माकोल हानिकारक है। इससे पर्यावरण/स्वस्थ्य हो नुकसान होता है। हमें अब संकल्प लेना है कि प्लास्टिक / धर्माकोल आदि से बने उत्पादों का उपयोग नहीं करेगे।

(गणेश कुमार भट्ट) (अजय मौर्य)
अपर मुख्य अधिकारी अध्यक्ष
एवं समत्त सम्मानित सदस्य जिला पंचायत उधम सिंह नगर

कार्यालय जिला पंचायत उधमसिंह नगर

पत्रांक : 1418/लेखा-02/जि०पं०ऊ०सि०न०/2025-26 दिनांक : 07-11-2025

सितारगंज में राज्य स्थापना दिवस पर हुए रंगारंग कार्यक्रम

सितारगंज : तहसील परिसर में राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती वर्ष पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजित किया गया। इस दौरान राज्य आंदोलनकारियों को सम्मानित किया। शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में राज्य के 25 वर्षों की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। कहा कि आंदोलनकारियों के संघर्ष के बलबूते हमें राज्य मिल पाया है। इसको हमें मिलकर विकास के पथ पर ले जाना है। साथ ही पहाड़ को खुशहाल बनाना है। इस मौके पर ब्लॉक प्रमुख उपकार सिंह बल, पालिकाध्यक्ष सुखदेव सिंह, पूर्व विधायक नानकमत्ता डॉ. प्रेम सिंह राणा, नगरपंचायत अध्यक्ष नानकमत्ता प्रेम सिंह टुरना, तहसीलदार हिमांशु जोशी, सुन्दरम शर्मा आदि मौजूद रहे।

न्यायालय सिविल जज (डिवीजन) गोरखपुर
द्वारा निकाली गई उद्घोषणा

उत्तराधिकारी वाद संख्या 521 सन् 2025

सायल का नाम व पता आशुतोष शुक्ल बालिग पुत्र स्व. धनेश्वर प्रसाद शुक्ल, निवासी 312 पदमा निकुंज, नार्मल स्कूल रोड, अलहदादपुर, पो. सदर, पन्नालाल प्रेस के सामने गोरखपुर ने मृतक 69,181/- की देय ऋण की प्रतिभूतियों को वसूली करने के लिए प्रमाण-पत्र अभिप्राप्ति अन्तर्गत धारा 372 भारतीय उत्ताधिकार 1925 के तहत का आवेदन-पत्र उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र के लिए।

साययललान का नाम व पूरा पता - श्रीमीत रीता पाण्डेय बालिक उम्र लगभग 58 साल पत्नी अनिल कुमार पाण्डेय पुत्री स्व. धनेश्वर प्रसाद शुक्ल निवासनी ग्राम किशनपुर, किच्छा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड-263148

मृतक का नाम व पूरा पता - धनेश्वर प्रसाद शुक्ल पुत्र स्व. लक्ष्मीशंकर शुक्ल, मृत्युक दिनांक व स्थान - 15-09-2023, मृत्यु स्थान : घर पर।

चूंकि सायल ने प्रमाण-पत्र की अभिप्राप्ति के लिए आवेदन किया है और सन् 200 मैं का दिवस आवेदन की सुनवाई के लिए नियत हुआ है।

अतः यह उद्घोषणा की जाती है कि जिस किसी को आवेदन के सम्बन्ध में आपत्ति हो वह स्वयं या अधिवक्ता द्वारा 10 बजे पूर्वान्ह न्यायालय सिविल जज (डिवीजन) गोरखपुर में नियत दिनांक पर उपसंजात होकर अपनी आपत्ति पेश करें। उक्त दिनांक अवशासन पर फिर किसी की आपत्ति न सुनी जायेगी, और आवेदन के सम्बन्ध में यथोचित आदेश पारित होगा।

आदेश पेशी 28-11-2025 वास्ते सुनवाई।

मुन्सरिम

किच्छा में रंगारंग कार्यक्रमों से बांधा समां

संवाददाता, किच्छा

अमृत विचार: उत्तराखंड स्थापना की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर नगर स्थित अटल उत्कृष्ट राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जीजीआईसी में राज्य स्थापना दिवस हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया।

इस मौके पर विद्यालय की छात्राओं द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए और विद्यालय को सुंदर तरीके से सजाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी प्रधानाचार्य श्रुति वर्मा, अभिभावक संघ अध्यक्ष शिखा चौधरी एवं कोषाध्यक्ष हरीश कुमार ने संयुक्त रूप से मां सरस्वती एवं माता नंदा सुनंदा के चित्र के सम्मुख दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रधानाचार्य श्रुति वर्मा ने कहा कि लंबे संघर्षों के बाद उत्तराखंड राज्य का गठन हुआ और हम सभी को मिलजुल कर प्रदेश के विकास में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। इस दौरान उत्तराखंड के पारंपरिक परिधान में छात्राओं ने कुमाउनी एवं गढ़वाली गीतों पर नृत्य की सुंदर प्रस्तुति दी। स्थापना दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय की शिक्षिकाओं एवं छात्राओं द्वारा पर्वतीय व्यंजनों की प्रदर्शनी लगाई गई।

छात्राओं के साथ-साथ विद्यालय की शिक्षिकाओं ने भी कुमाऊनी गढ़वाली गीतों पर सामूहिक नृत्य किया। मौके पर नीता सहगल, रीता पनेरु, सुनीता कैड़ा, वैशाली जोशी, नीलिमा शर्मा, वीणा पाठक, विद्या भाकुनी, सुनीता राम सिंह, अनु गोस्वामी, रीता आर्य, सुरुचि, नाज़नीन, पीयूष वत्सल, गीतिका जोशी, नविता, दीपमाला आदि मौजूद रहे। इधर राज्य गठन के अवसर पर तहसील परिसर में कार्यक्रम का आयोजन कर उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारियों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अपर जिलाधिकारी कौस्तुभ मिश्रा, उप जिलाधिकारी गौरव पांडे, तहसीलदार गिरीश चंद्र त्रिपाठी, नारायण बिष्ट, बंटी पपनेजा, सुभाष तनेजा, दिनेश भाटिया मौजूद रहे।

जीजीआईसी किच्छा में सामूहिक नृत्य करती शिक्षिकाएं। ● अमृत विचार

बाजपुर तहसील में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करतीं बालिकाएं एवं मंचासीन अतिथि।

रजत जयंती पर हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम

बाजपुर : प्रदेश की 25वीं वर्षगांठ पर रजत जयंती समारोह का आयोजन तहसील सभागार में किया गया, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि राज्य आंदोलनकारी बलराज पासी व डॉ.नरेंद्र खत्री सहित भाजपा नेताओं द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। स्कूली बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। शनिवार को तहसील सभागार में आयोजित समारोह में बलराज पासी ने कहा कि राज्य स्थापना के समय जहां 900 करोड़ रुपये का बजट था, जो आज करीब एक लाख करोड़ के पास पहुंच गया है। दर्जा राज्यमंत्री गन्ना मंजीत सिंह राजू, भाजपा नेता राजेश कुमार, गौरव शर्मा ने राज्य के विकास में सीएम पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व की सराहना की। कार्यक्रम में सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कालेज, पीएमश्री राजकीय कन्या इंटर कालेज, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रेंहटा की बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस मौके पर एसडीएम डा.अमृता शर्मा, तहसीलदार देवेंद्र सिंह बिष्ट, एसएसआई जसविंदर सिंह, विहिप गौरक्षा विभाग के प्रांत मंत्री यशपाल राजहंस, डीआर बाराकोटी आदि मौजूद रहे।

चाकू के साथ युवक धरा

बाजपुर। पुलिस ने गश्त के दौरान वार्ड-पांच निवासी कुलविंदर सिंह उर्फ विक्की को चाकू के साथ पकड़कर धारा 4/25 आर्म एक्ट में गिरफ्तार किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

अमृत विचार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9532374039 8077909468

सूचना

मेरी उत्तराखण्ड बोर्ड वर्ष 2005-06 हाईस्कूल अनुक्रमांक 0142156 की अंकतालिका (मार्कशीट) वास्तव में खो गई है। **नवनीत कौर पत्नी अमरजीत सिंह निवासी शुक्लाफार्म, सितारगंज (ऊधम सिंह नगर) उत्तराखंड।**

कहानी संग्रह बरयात का विमोचन

कुमाऊंनी कहानी संग्रह बरयात का विमोचन करते अतिथि। ● अमृत विचार

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार: कुमाउनी भाषा साहित्य व संस्कृति प्रचार समिति कसारदेवी अल्मोड़ा व पहरू कुमाउनी मासिक पत्रिका की ओर से उत्तराखंड भाषा संस्थान और संस्कृति विभाग के सहयोग से शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान डायट में 17वें राष्ट्रीय कुमाऊंनी भाषा सम्मेलन के दूसरे दिन का विषय कुमाउनी भाषा मानकीकरण था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. देव सिंह पोखरिया थे।

शनिवार को सम्मेलन के दौरान माया रावत के कुमाउनी निबंध संग्रह बौड़ि, डॉ.कीर्ति बल्लभ शक्टा के महाकाव्य घटकुकि प्राण प्रतिष्ठा और शक्ति वाग्विलास और खुशाल सिंह खनी के कुमाउनी कहानी संग्रह बरयात का विमोचन किया गया। पहले सत्र में रमेश चंद्र सोनी को बहादुर सिंह बनोला कुमाउनी साहित्य सेवी सम्मान, दयाल पांडेय और मुन्नी पांडेय को पुष्पलता जोशी कुमाउनी साहित्य पुरस्कार, प्रो. दीपा गोबाड़ी को मुन्नी जोशी कुमाउनी साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रो. उमा भट्ट, डॉ.हयात सिंह रावत, ने किया। डॉ.पीतांबर अवस्थी, प्रो. प्रीति आर्या, प्रो. गीता खोलिया, डॉ.तारा चंद्र त्रिपाठी, प्रो. जगत सिंह बिष्ट, प्रो. दीपा गोवाडी, नीलम नेगी, प्रो. केसी जोशी, डॉ.नेहा पालनी, डॉ.शशि पांडेय, कौस्तुभ चंदोला, नीरज पंत, शशि शेखर जोशी, महेंद्र ठकुराठी, डॉ.पीतांबर अवस्थी, दिनेश भट्ट, डॉ.नीरज चंद्र जोशी, ललित तुलेरा, डीके शर्मा, दीक्षा जोशी, शशि पांडेय आदि उपस्थित रहे।

ब्रीफ न्यूज

समस्याओं को लेकर कर्मकार मुखर

बाजपुर : सहकारी चीनी मिल के कर्मचारियों एवं मिल संचालन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं को लेकर कर्मकार मुखर हो गए हैं। चीनी उद्योग कर्मचारी ट्रेड यूनियन ने समस्याओं के समाधान के लिए प्रधान प्रधानक को संबोधित पांच सूत्रीय ज्ञापन कार्यालय में सौंपा, जिसमें दस दिन के भीतर समस्याओं का समाधान न होने की दशा में आंदोलन की चेतावनी दी है। यूनियन के अध्यक्ष सुनील कुमार ने ज्ञापन के माध्यम से कहा कि सहकारी चीनी मिल की सह इकाई आसवनी में आबकारी नीति-2025 के तहत निराकरण कर ट्रेटा पैकिंग मशीन की व्यवस्था न होने तक पव्वा 180 एमएल की भाई का कार्य आसवनी में यथाशीघ्र शुरू करवाया जाए, जिससे आबकारी राजस्व, मिल कोष का लाभांश के साथ स्थाई रोजगार को बढ़ावा मिल सके। उन्होंने कहा कि चीनी मिल में कार्यरत 16 संविदा कर्मियों को हटाकर आउट सोर्स के माध्यम से कार्य लिया गया है। यूनियन की मांग है कि 14 कार्यरत कर्मियों का पुन : संविदा कर्मी के रूप में ही कार्य पर लेने के साथ ही केदारी प्रथा समाप्त की जाए।

भूपेंद्र सिंह मौत प्रकरण में मुकदमा, जांच शुरू

रुद्रपुर : 31 अक्टूबर को सड़क हादसा मौत प्रकरण में पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर ट्रक चालक की तलाश तेज कर दी है। बताया कि बाइक सवार ड्यूटी कर घर लौट रहा था। गांव बेगमाबाद बिलासपुर व हाल निवासी मोहम्मदपुर शेरगढ़ बहेड़ी निवासी राम तुलाराम ने बताया कि 31 अक्टूबर को उसका बेटा भूपेंद्र वर्मा अपने चाचा वीर सिंह के साथ बाइक से रात्रि ड्यूटी कर घर लौट रहा था। रात्रि साढ़े 12 बजे नैनीताल हाईवे पर तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। आनन-फानन में घायलों को जिला अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने बेटे भूपेंद्र को मृत घोषित कर दिया। शिकायतकर्ता ने चालक पर लापरवाही से वाहन का संचालन करने का आरोप लगाया।

नाली निर्माण के विवाद में घर में घुसकर मारपीट

बाजपुर : मार्ग निर्माण के दौरान घर के आगे नाली न बनने देने को लेकर हुए विवाद ने तूल पकड़ लिया है। पीड़ित सफाई कर्मचारी ने पड़ोसी पर घर में घुसकर गाली-गलौज और मारपीट करने का आरोप लगाया है। इससे भी गंभीर यह है कि पीड़ित ने पड़ोसी पर लंबे समय से धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने का भी आरोप लगाया है। शनिवार की शाम उत्तराखंड वाल्मीकि दलित समाज सुधार संगठन के अध्यक्ष अनिल वाल्मीकि के नेतृत्व में नगरपालिका परिषद बाजपुर में सफाई कर्मचारी संजीव अपने परिवार के साथ कोतवाली पहुंचे।

एक बार फिर पूर्व प्रधान पर हमले का प्रयास

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार: कोतवाली इलाके के गांव लंबाखेड़ा में निकाय चुनाव की रंजिश थमने का नाम ही नहीं ले रही है। प्रधान पद के दावेदार रहे पूर्व प्रधान पर दोबारा जानलेवा हमला किए जाने का प्रयास किया गया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

गांव लंबाखेड़ा जाफरपुर निवासी ध्यान सिंह ने बताया कि उसका भाई विक्रम सिंह जो कि पूर्व प्रधान भी है और वर्ष 2025 में प्रधान पद का चुनाव लड़ा था। भाई के सामने ही प्रधान पद के दावेदार दिलशाद भी चुनावी मैदान में था। बता दें कि इसी चुनावी रंजिश के कारण पूर्व प्रधान एवं दावेदार विक्रम सिंह पर जानलेवा हमला हुआ था। एक बार फिर घटना को अंजाम देते हुए 21 सितंबर की सुबह भाई बिक्रमजीत जाफरपुर मोड़ पर खड़ा था कि तभी क्रेटा कार सवार मोनिस हुसैन, साजिम हुसैन उतरता है और अभद्रता करते हुए साजिश के तहत अपने साथी आबिद हुसैन के साथ मिलकर धक्का-मुक्की करने लगते हैं। कुछ ही देर बाद फिर स्कॉर्पियो कार सवार कयूम हुसैन, मुराद अली, मुबारक हुसैन, साजिद हुसैन, इरशाद उर्फ बटलर सहित 20 हमलावर धारदार से हमला बोल देते हैं। जिसे देखकर वह भागा और शोर मचाकर लोगों को एकत्रित किया। जिसे देखकर हमलावर फरार हो गए और धमकी दी कि तू हमारे सामने चुनाव लड़ा तो उसका अंजाम खतरनाक होगा। बताया कि भाई ने घर में छिपकर अपनी जान बचाई। चुनावी रंजिश के कारण भाई का परिवार भयभीत है।

युवती हत्याकांड में फरार आरोपी धरा

किच्छा: उत्तराखंड के किच्छा अंतर्गत लालपुर में 4 नवंबर की शाम महिंद्रा एंड महिंद्रा कंपनी में कार्यरत 23 वर्षीय युवती की हत्या के मामले में फरार चल रहा दूसरा आरोपी सुमित सिंह पुलिस के हत्थे चढ़ गया है। युवती के मकान मालिक के पुत्र अमित सिंह ने दुष्कर्म के प्रयास में असफल होने पर गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी थी। अमित ने अपने सगे भाई सुमित सिंह की मदद से शव को चादर में लपेटकर जंगल स्थित नाले में ठिकाने लगा दिया था। मुख्य आरोपी अमित सिंह को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी थी। प्रभारी निरीक्षक प्रकाश सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम ने फरार सुमित सिंह को मुखबिर की सूचना पर लालपुर रोड, ग्राम मेहराया से दबोच लिया। आरोपी रामपुर भागने की फिराक में था। पुलिस ने उसकी निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त मोटरसाइकिल और चादर बरामद की है।

दो फायर यूनिट की तत्परता से पाया काबू, नुकसान का आकलन किया जा रहा

महुआखेड़ागंज की फैक्ट्री में लगी आग

- रबड़ के कट्टों में आग भयंकर रूप से भड़क रही थी

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: महुआखेड़ागंज फेज-2 स्थित पिपलिया सेग इंडस्ट्रीज के रोटरी यार्ड में शनिवार तड़के अचानक आग लग गई। घटना की सूचना फायर स्टेशन को मिलते ही लीडिंग फायरमैन चंदन सिंह बिष्ट के नेतृत्व में फायर यूनिट की दो गाड़ियां मौके पर पहुंच गईं।

फैक्ट्री परिसर के रोटरी यार्ड में रखे रबड़ के कट्टों में आग भयंकर रूप से भड़क रही थी। आग की लपटें ऊंची उठने से क्षेत्र में अफरातफरी मच गई। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए फायर कर्मियों ने तुरंत मोटर फायर इंजन से दो होज लाइन फैलाकर

फैक्ट्री में आग बुझाते फायरकर्मी। ● अमृत विचार

आग पर काबू पाने की कोशिश शुरू की। प्रारंभिक प्रयासों से आग की तीव्रता कम की गई, लेकिन पानी समाप्त होने पर दूसरे फायर टेंडर को जोड़ा गया और लगातार पंपिंग कर घंटों की मेहनत के बाद आग को पूरी तरह बुझा दिया गया।

इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई, हालांकि फैक्ट्री के कुछ हिस्सों में रखे रबड़ के सामान जलकर राख हो गए। फायर स्टेशन के अधिकारियों ने बताया कि समय रहते कार्रवाई करने से एक बड़ी औद्योगिक दुर्घटना बच गई। घटना के कारणों की जांच की जा रही है।

फायर यूनिट में लीडिंग फायरमैन खीमानंद, लीडिंग फायरमैन बिजेंद्र सिंह, चालक सुमित पवार, चालक सोमबीर पवार, फायरमैन प्रकाश चंद, अर्जुन सिंह, भुवन कुमार, महिला फायरमैन नीतू नाथ, भावना, पंकज कुमार, राधिका, सीता, ज्योति, नमिता आदि शामिल रहे।

धान से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली ने दो बाइक सवारों को कुचला, मौत

घटना के बाद वाहन छोड़कर फरार हुआ चालक, परिजनों में मचा कोहराम, जांच शुरू

सुनील (फाइल)।

सत्यवीर (फाइल)।

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: धान से भरी अनियंत्रित ट्रैक्टर ट्रॉली ने दो बाइकों को टक्कर मार दी। घटना में दो युवकों की मौत हो गई। जबकि एक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे इलाज के लिये एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

कुंडा थाना क्षेत्र के ग्राम लालपुर बक्सोरा निवासी सुनील सिंह (20) पुत्र बिशन सिंह गांव के ही निवासी अपने साथी सत्यम सिंह (23) पुत्र धर्मवीर सिंह के साथ किसी काम से गांव भरतपुर बाइक से गया था। बीते शुक्रवार की दोपहर लगभग 2:30 बजे सुनील भरतपुर से अपने दोस्त सत्यम के साथ घर लौट रहा था। उधर जसपुर के ग्राम तालमपुर निवासी सत्यवीर उर्फ सोनू (30) पुत्र हरपाल सिंह शुक्रवार की दोपहर लगभग 2:30 बजे अपनी बहन सोनम को उसकी ससुराल गांव भरतपुर छोड़कर बाइक से घर लौट रहा था। इसी दौरान कुंडा थाना क्षेत्र स्थित कृपाल आश्रम के पास पीछे से आ रहे हैं तेज रफ्तार धान से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली चालक ने दोनों बाइक को पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर लगने से बाइक सवार सुनील, सत्यम और सत्यवीर उर्फ सोनू अनियंत्रित होकर सड़क पर गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंचे परिजन घायलों को निजी अस्पताल ले गए। जहां देर शाम सुनील और सत्यवीर उर्फ सोनू की मौत हो गई। घटना के बाद ट्रैक्टर चालक वाहन को मौके पर छोड़कर फरार हो गया।

वहीं हादसे से परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस ने शनिवार को दोनों शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों की सुपुर्दगी में दे दिया। जबकि घायल सत्यम के एक पैर में फ्रैक्चर हो गया, जिसका निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। समाचार लिखे जाने तक मामले में रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई थी।

झनकईया मेले जा रहे टुकटुक चालक की सड़क दुर्घटना में मौत

खटीमा : सीमावर्ती क्षेत्र झनकईया में चल रहे कार्तिक पूर्णिमा मेले को जा रहे एक टुकटुक को कार ने पीछे से टक्कर मार दी। जिसमें घायल टुकटुक चालक को नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इधर कार चालक कार छोड़कर फरार हो गया। जिसे पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। शनिवार को इस्लाम नगर निवासी कासिम अंसारी (27) पुत्र नसरूद्दीन अंसारी टुकटुक से झनकईया मेले जा रहा था। इसी दौरान मेलाघाट रोड पर जंगल क्षेत्र में कार के चालक ने टुकटुक में पीछे से टक्कर मार दी। जबरदस्त टक्कर से टक्कर से टुकटुक के दो टुकड़े हो गए। जबकि कार चालक कार छोड़कर फरार हो गया। हादसे में टुकटुक चालक कासिम अंसारी गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे अन्य टुकटुक चालकों ने नागरिक अस्पताल पहुंचाया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक अपने पीछे पत्नी फरीदा, छोटे दो पुत्र और एक पुत्री और माता-पिता को रोता बिलखता छोड़ गया। झनकईया पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंचकर कार और टुकटुक को कब्जे में ले लिया। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया।

घर में भारी मात्रा में मांस बरामद, दो आरोपी फरार

बाजपुर: गौवंश स्क्वायड और कोतवाली पुलिस की संयुक्त टीम ने एक घर से तीन खाल और तीन जोड़ी सींग बरामद किए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घर की तलाशी ली तो अंदर से भारी मात्रा में कटा हुआ मांस मिला। कार्रवाई के दौरान घर में मौजूद दो व्यक्ति सीढ़ी के सहारे छत से कूदकर फरार हो गए।

एसआई प्रहलाद सिंह, गौवंश सेल प्रभारी एसआई पंकज बेलवाल, टीम के साथ मौके पर पहुंचे। घर के गेट से झांकने पर उन्हें अंदर जानवरों का कटा मांस दिखाई दिया। अंदर तीन प्लास्टिक के कट्टों में मांस के छोटे-छोटे टुकड़े, सीढ़ी के नीचे खालें और सींग बरामद हुए। सूचना पर बुलाए गए वरिष्ठ पशु चिकित्सक डा.कोमल सिंह ने मौके पर जांच कर प्रथम दृष्टया मांस को भैंस का बताया तथा सैंपल लेकर भेज दिया। पुलिस के अनुसार मौके से फरार हुए व्यक्तियों की पहचान ग्राम मुड़िया कलां निवासी इमरान और सिरसखेड़ा थाना मुंडापांडे मुरादाबाद उप्र निवासी मोनिश के रूप में हुई है। इसके बाद पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से बरामद मांस को एक खेत में ले जाकर पांच फीट गहरे गड्ढे में दफन करवा दिया है।

जन सहयोग से किया जाएगा नशे पर प्रहार

क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों से रूबरू होते कोतवाल सुंदरम शर्मा। ● अमृत विचार

संवाददाता शक्तिफार्म

अमृत विचार : नवागंतुक तेजतर्रार कोतवाल सुंदरम शर्मा ने कहा कि जन सहयोग से नशे के खिलाफ व्यापक रूप से प्रहार किया जाएगा, ताकि युवा पीढ़ी को नशे के दलदल से बाहर निकाला जा सके।

पदभार ग्रहण करने के पश्चात शक्तिफार्म पुलिस चौकी पहुंचे, नवागंतुक कोतवाल सुंदरम शर्मा का क्षेत्र के तमाम बुद्धिजीवियों एवं गणमान्य लोगों ने स्वागत किया। नवागंतुक कोतवाल सुंदरम शर्मा भी सभी जनप्रतिनिधियों के साथ पूरे आत्मीयता के साथ रूबरू हुए। चौकी परिसर में आयोजित बैठक के दौरान जनप्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कोतवाल सुंदरम शर्मा ने कहा कि, जन सहयोग से नशा एवं नशे के कारोबार को जड़ से मिटाना उनकी प्राथमिकता है। इसके लिए आम जनमानस का सहयोग भी आवश्यक है।उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री का नशा मुक्त उत्तराखंड अभियान के तहत, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा भी व्यापक रूप से जिले भर में अभियान चलाया जा रहा है। इस मौके पर नगर पंचायत चेयरमैन सुमित मंडल, भाजपा मंडल अध्यक्ष गोविंद तालुकदार, रविंद्र सिंह, विधान सरकार, मधुसूदन सरकार, महेंद्र सिंह, देबू मंडल, संजय बाछाड़, मयंक अग्रवाल, रमेश राय, रवि मजूमदार, विक्रम सिंह भंडारी, प्रकाश राय, कृष्ण पद मंडल, रविंद्र अग्रवाल, देवाशीष मौजूद रहे।

मशीन की चपेट में आकर श्रमिक की मौत

संवाददाता, बाजपुर

अमृत विचार: मशीन के पट्टे की चपेट में आकर श्रमिक की मौत हो गई।

शनिवार की तड़के करीब पांच बजे विक्रमपुर इंडस्ट्री एरिया स्थित एक पेपर मिल में काम के दौरान ग्राम बाड़े थाना किर्रा, कादरचौक जनपद बदायूं उप्र निवासी 22 वर्षीय धर्मपाल शर्मा पुत्र कैलाश चंद्र शर्मा मशीन के पट्टे की चपेट में आ गया। आनन-फानन में उसे सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने जांचोपरांत उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं घटना की जानकारी से पुलिस प्रशासन में भी हड़कंप मच गया और एसआई देवेंद्र सिंह मनराल, अपर उपनिरीक्षक भरत भंडारी मय फोर्स के सरकारी अस्पताल पहुंच गए। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर जांच-पड़ताल शुरू कर दी। साथ ही पंचनामा भारकर शव पोस्टमार्ट को भेज दिया है। मृतक ग्राम नंदपुर नरकाटोपा बाजपुर में अपनी बहन के घर रहकर काम करता था और अपने पांच बहन-भाइयों में सबसे छोटा था। घटना से परिवार में कोहराम मचा हुआ है। खबर लिखे जाने तक किसी की भी ओर से पुलिस में लिखित तहरीर नहीं दी गई थी।

सरकारी अस्पताल में जमा लोगों की भीड़ व जानकारी लेती पुलिस। ● अमृत विचार

धर्मपाल (फाइल)।

शिक्षकों ने दी मृतका सुषमा को श्रद्धांजलि

रुद्रपुर: प्राथमिक शिक्षक भवन रुद्रपुर में प्राथमिक शिक्षक संघ की ओर से एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षक-शिक्षिकाओं ने मृतका की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। शनिवार को कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों ने बताया कि 28 अक्टूबर को राजकीय प्राथमिक विद्यालय सिरौली कला में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत और कौशल्या एनक्लेव निवासी सुषमा पंत की संदिग्ध मृत्यु हो गयी थी। इस अवसर पर भगत सिंह चैरिटेबल संस्था के सदस्य ललित सिंह बिष्ट, उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी अवतार सिंह बिष्ट, प्राथमिक शिक्षक संघ के वरिष्ठ नेता हरीश दनाई, रुद्रपुर इकाई के अध्यक्ष हुकुम सिंह नयाल मौजूद रहे।

महिला कर्मी की कटी अंगुली, युवाओं का प्रदर्शन

- सिडकुल की कंपनी में करती थी काम, मुआवजा देने का पनेरु ने उठाया मुद्दा

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार: सिडकुल कंपनी में काम करने वाली युवती की अंगुली कटने का मामला सामने आया है। हादसे से भड़के युवाओं ने गेट पर हंगामा काटा और प्रबंधन पर अनदेखी करने का आरोप लगाया। उन्होंने युवती को संतोषजनक मुआवजा, उपचार कराने और स्थाई नौकरी देने का मुद्दा उठाया।

शनिवार की सुबह कांग्रेस नेता हरीश पनेरू युवाओं के साथ सिडकुल की खाद्य उत्पादन कंपनी पहुंचे और नारेबाजी कर हंगामा करने लगे। उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले ओखलकांडा ब्लॉक की रहने वाली पूजा नाम की युवती हादसे का शिकार हुई और हाथ की अंगुली कट गई। आरोप था कि बिना प्रशिक्षण प्राप्त युवती को जबरन मशीन पर लगाया गया। उन्होंने कहा कि हादसे के बाद बेबस युवती खुद ही अपने पैसों से उपचार कराया, जबकि युवती के पिता दिव्यांग हैं और युवती ही परिवार का भरण पोषण करती है। आरोप था कि हादसे के बाद कंपनी प्रबंधन, सुपरवाइजर व एचआर विभाग ने कोई सुध नहीं ली। उन्होंने आगाह किया कि यदि कंपनी प्रबंधन ने स्थाई नौकरी, संतोषजनक मुआवजा, बेहतर उपचार और दोषी कंपनी अधिकारी पर कार्रवाई नहीं की तो कंपनी गेट पर आंदोलन होगा।

हंगामा काटते कांग्रेस नेता व युवा। ● अमृत विचार

पहल

पुलिस, जनप्रतिनिधि और व्यापार मंडल की हुई बैठक

भारत और नेपाल के नागरिकों में उपजा विवाद सुलझा

संवाददाता, खटीमा

अमृत विचार: भारत नेपाल सीमा पर मेलाघाट में दोनों देशों के नागरिकों के बीच चार दिन पूर्व विवाद हो गया था। जिसको लेकर पुलिस प्रशासन, व्यापार मंडल और दोनों देशों के जनप्रतिनिधियों की बैठक में मामले को सुलझा लिया गया।

बता दें कि बीते मंगलवार को मेलाघाट बाजार में एक व्यवसायी और एक नेपाली नागरिक के बीच मारपीट हो गई थी। इसके उपरांत दोनों देशों के नागरिकों में विवाद चल रहा था। ऐसे में लोगों की आवाजाही बंद हो गई थीं। वहीं विगत दो दिनों से एक नेपाली नागरिक द्वारा सोशल मीडिया पर अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए वीडियो वायरल किया गया था। इसी बीच नेपाली नागरिकों ने दर्जनों भारतीय नागरिकों से नेपाल में प्रवेश करने पर मारपीट की गई। जिस पर शनिवार को मामला गरमा गया। जिसकी वजह से भारतीय नागरिकों ने नेपाली नागरिकों की आवाजाही बंद कर दी गई। सूचना मिलने पर थाना झनकईया प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र गौरव अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने मेलाघाट व्यापार मंडल, स्थानीय जनप्रतिनिधियों तथा नेपाली एपीएफ, पुलिस प्रशासन और नेपाली जनप्रतिनिधियों के बीच बैठक कर समझा बुझाकर मामले का निपटारा कराया गया। इसके साथ ही सोशल मीडिया पर वायरल किए गए वीडियो को भी डिलीट करने की बात कही गई। वहीं प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र गौरव ने दोनों देशों के नागरिकों से आपसी भाईचारा, सौहार्द और प्रेम बनाए रखने की अपील की। इस अवसर पर उपनिरीक्षक एलडी जोशी, दोधारा चांदनी इलाका प्रहरी हेल्थ पोस्ट निरीक्षक कृष्णा सोनी, ऐपीएफ उपनिरीक्षक चम्मन चंद, नेपाल के क्षेत्रीय प्रधान ज्ञानेंद्र बहेग, मेलाघाट व्यापार मंडल अध्यक्ष अनिल कुमार, उपाध्यक्ष राजेश वर्मा, महासचिव मनोज कुमार, कादर खान, दीपक कुमार आदि मौजूद रहे।

मेलाघाट में विवाद सुलझाने को लेकर बैठक लेते प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र गौरव।

खटीमा के झनकईया में कार्तिक पूर्णिमा मेले में खरीदारी करते लोग।

विवाद सुलझने से बढ़ेगी मेले की रौनक

खटीमा : झनकईया में कार्तिक पूर्णिमा से शुरू होने वाले आठ दिन के मेले में उद्घाटन दिवस के बाद हर वर्ष की अपेक्षा काफी कम भीड़ रही। जिसको लेकर व्यापारियों में निराशा थी। भारतीय और नेपाली नागरिकों के बीच मेलाघाट में हुए विवाद के चलते मेले में नेपाली नागरिक नजर नहीं आ रहे थे। झनकईया में कार्तिक पूर्णिमा पर लगने वाले मेले में स्थानीय लोगों के साथ ही भारी संख्या में नेपाली नागरिक शिरकत करते आ रहे हैं। चार दिनों से मेलाघाट में उपजे विवाद से नेपाली नागरिक मेले नहीं आ रहे हैं। शनिवार को थाना प्रभारी निरीक्षक द्वारा नेपाल पुलिस, जनप्रतिनिधियों और नागरिकों के साथ बैठक कर विवाद सुलझा दिया गया है। मामला सुलझने के बाद रविवार को मेले की रौनक बढ़ने की उम्मीद जताई जा रही है।

निराश्रित पशुओं को पकड़ने के अभियान में जुटे स्वयं चेयरमैन व उनकी टीम।

निराश्रित पशुओं को पकड़ने को चलाया अभियान

शक्तिफार्म : नगर पंचायत शक्तिगढ़ के चेयरमैन सुमित मंडल के नेतृत्व में, नगर पंचायत की टीम ने शनिवार को सड़क पर विचरण करते निराश्रित पशुओं को पकड़ने का अभियान चलाया। शनिवार सुबह से ही टीम ने नगर पंचायत क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में घूम रहे निराश्रित पशुओं को पकड़ना आरंभ किया। नगर पंचायत की टीम अब इन पशुओं को सुरक्षित स्थान पर छोड़ने की तैयारी में है। चेयरमैन सुमित मंडल ने कहा कि गौशालाओं से बात की जा रही है। फिलहाल पकड़े गये मवेशियों के लिए चारे की व्यवस्था की गई है। बता दें कि आजाद समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष सतेंद्र कुमार के नेतृत्व में उनकी टीम ने नगर पंचायत चेयरमैन से मुलाकात कर आये दिन सड़क पर पड़े निराश्रित पशुओं को हटाने व उन्हें सुरक्षित स्थानों पर भेजने की मांग की थी। नगर पंचायत प्रशासन ने, सड़क पर विचरण करने वाले पशुओं को सुरक्षित स्थानों पर भेजने के लिए मुहिम छेड़ दी है।

ओवरऑल चैंपियन रहा सेंट थेरेसा स्कूल

सेंट पीटर स्कूल में आयोजित एथलेटिक मीट में 25 स्कूलों के करीब 815 खिलाड़ियों ने लिया हिस्सा

संवाददाता, किच्छा

अमृत विचार: नगर स्थित सेंट पीटर सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित दो दिवसीय मदर टेरेसा मेमोरियल इंटर स्कूल एथलेटिक मीट का दूसरे दिन विधिवत समापन हो गया। दूसरे दिन कार्यक्रम की शुरुआत 1500 मीटर दौड़ प्रतियोगिता से हुई। जिसमें सीनियर बालक वर्ग में एलॉयसिस कॉलेज पीलीभीत के आदित्य वर्मा ने प्रथम, जूनियर बालक वर्ग में सेंट जोसेफ स्कूल रामनगर के शौर्य रावत ने प्रथम स्थान पाया।

भाला फेंक प्रतियोगिता के सीनियर बालक वर्ग में लक्ष्य गंगवार ने प्रथम तथा चक्का फेंक एवं गोला फेक प्रतियोगिता के सीनियर बालक वर्ग में सेंट पीटर सीनियर सेकेंडरी स्कूल किच्छा के शब्द अरोड़ा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरे दिन एजुकेशन सेक्रेट्री फादर रॉयल एंथोनी एवं प्रधानाचार्य फादर एलेक्सांडर मोंटेरो के दिशा निर्देशन में विभिन्न वर्गों में दौड़ प्रतियोगिता भाला एवं चक्का फेंक प्रतियोगिता, गोला फेंक एवं लंबी कूद प्रतियोगिता संपन्न हुई।

किच्छा में चैंपियन टीम को ट्रॉफी सौंपते अतिथि। ● अमृत विचार

दो दिवसीय प्रतियोगिता में सब जूनियर बालक वर्ग में सेंट थॉमस सीनियर सेकेंडरी स्कूल नवाबगंज के मोहम्मद सकलैन हैदर, बालिका वर्ग में सेंट पीटर स्कूल बैलपड़ाव की समीक्षा राणा इंडिविजुअल चैंपियन रहे। जूनियर बालक वर्ग में सेंट टेरेसा काठगोदाम के मोक्षित बिष्ट तथा बालिका वर्ग में सेंट थेरेसा काठगोदाम की अवनी चड्ढा इंडिविजुअल चैंपियन रही। सीनियर बालक वर्ग में मारिया अस्मिता काशीपुर के अंशदीप सिंह तथा बालिका वर्ग में मारिया अस्मिता काशीपुर के देबोश्री भट्टाचार्य इंडिविजुअल चैंपियन रहे। मदर टेरेसा मेमोरियल एथलेटिक मीट में ओवरआल चैंपियन सेंट थेरेसा सीनियर सेकेंडरी स्कूल काठगोदाम रहा और ओवरऑल रनर अप मारिया अस्मिता स्कूल काशीपुर की टीम रही। सभी विजेताओं को मुख्य अतिथि फादर रॉयल एंथोनी एवं प्रधानाचार्य फादर एलेक्सांडर मोंटेरो द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं पदक देकर तथा विजेता एवं उपविजेता टीम को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रधानाचार्य फादर एलेक्सांडर मोंटेरो ने सभी टीम खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए उनका उत्साह वर्धन किया और कार्यक्रम की समापन की घोषणा की। मौके पर फादर साबू, सिस्टर लूसिया, सिस्टर सिल्वी, सिस्टर बसंती, हंसराज उपाध्यक्ष, संजय नेगी, प्रमिला पवार, इंद्र कार्की, विशाखा धीमान, रुक्मणी, एलन बर्नार्ड, मनीष थापा, मालविका, राज अरोड़ा, विजय पांडे, मीनू चौहान आदि मौजूद रहे।

छावनी स्पोर्ट्स और किंग्सफोर्ड क्रिकेट की टीम जीती

काशीपुर : क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ ऊधम सिंह नगर की ओर से आयोजित अंडर-14 क्रिकेट लीग में छावनी स्पोर्ट्स एकेडमी और किंग्सफोर्ड क्रिकेट एकेडमी की टीम ने जीत हासिल की। शनिवार को छावनी स्पोर्ट्स एकेडमी और एमके स्क्वायर क्रिकेट अकादमी के मध्य मैच खेला गया। टॉस जीतकर एमके स्क्वायर ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी छावनी की टीम ने निर्धारित 40 ओवरों में दो विकेट खोकर 285 रन बनाए। शिवांश ने नाबाद रहते हुए 151 व समरजीत सिंह ने 82 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी एमके स्क्वायर क्रिकेट अकादमी की टीम 60 रनों पर ढेर हो गई। तरुण ने 14 रन बनाए। वहीं दूसरा मैच किंग्सफोर्ड क्रिकेट अकादमी व द डेन क्रिकेट अकादमी के मध्य खेला गया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए किंग्सफोर्ड क्रिकेट अकादमी की टीम ने 101 रन बनाए। पीयूष सिंह ने 33 व अंश चौधरी ने 24 रन बनाए। करन और निर्भय जोशी ने पांच-पांच विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी द डेन क्लब की टीम 69 रनों पर सिमट गई। एकांश ने 19 रन बनाए। पीयूष सिंह ने 5 विकेट, दीपांशु व विशाल भाटिया ने दो-दो विकेट लिए।

संस्कृत छात्र प्रतियोगिता 14 से

काशीपुर: खंड स्तरीय संस्कृत छात्र प्रतियोगिता आगामी 14 और 15 नवंबर को पं. गोविंद बल्लभ पंत इंटर कॉलेज में सुबह 10 बजे से होगी। उत्तराखंड संस्कृत अकादमी (उत्तराखंड सरकार) द्वारा प्रदेश की द्वितीय राजभाषा संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, संवर्धन एवं संरक्षण के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।"संस्कृत स्पर्धा 2025-26 के नाम से आयोजित संस्कृत भाषा पर आधारित दो दिवसीय इन प्रतियोगिताओं के अंतर्गत कनिष्ठ व वरिष्ठ वर्ग में कुल छह प्रतियोगिताएं क्रमशः संस्कृत नाटक, संस्कृत समूहगान, संस्कृत समूह नृत्य, संस्कृत वाद-विवाद, संस्कृत आशुभाषण एवं श्लोकोच्चारण स्पर्धा आयोजित की जाएंगी। जिनमें पहले दिन 14 नवंबर को कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 6 से 10 तक) तथा दूसरे दिन 15 नवंबर को वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 11 से स्नातकोत्तर तक) की प्रतियोगिताएं होंगी। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व निर्धारित नकद पुरस्कार राशि दी जाएगी। बीईओ धीरेंद्र कुमार साहू व खंड संयोजक प्रीतम सिंह ने सभी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को भाग लेने का आह्वान किया है।

किच्छा में एडीएम कौस्तुभ मिश्रा को ज्ञापन सौंपते सामाजिक कार्यकर्ता।

एआरटीओ का ट्रांसफर करने की मांग उठाई

किच्छा : नगर क्षेत्र में ओवरलोड वाहनों तथा उत्तराखंड - उत्तर प्रदेश की सीमा पर अवैध रूप से चल रहे टेंपो, ई रिक्शा वाहनों के खिलाफ कार्रवाई न किए जाने का आरोप लगाते हुए सामाजिक कार्यकर्ता ने अपर जिलाधिकारी कौस्तुभ मिश्रा के माध्यम से प्रदेश के परिवहन मंत्री को ज्ञापन प्रेषित कर उधम सिंह नगर के परिवहन अधिकारी का ट्रांसफर किए जाने की मांग की है। एडीएम कौस्तुभ मिश्रा को ज्ञापन सौंपते हुए सामाजिक कार्यकर्ता राधेश्याम अरोड़ा, दिलीप अरोरा एवं बलदेव सिंह ने कहा कि किच्छा बहेड़ी मार्ग पर खुलेआम अवैध रूप से टेंपो तथा ई रिक्शा वाहनों की बेरोक टोक आवाजाही हो रही है तथा दोनों राज्यों की पुलिस की लापरवाही के कारण यात्रियों का जीवन दांव पर लगा हुआ है। उन्होंने कहा कि आए दिन हो रही दुर्घटनाओं के बावजूद नेशनल हाईवे पर खुलेआम ई रिक्शा चालकों द्वारा 10- 15 सवारियां लेकर नियम कानून की अनदेखी की जा रही है जबकि उत्तराखंड उत्तर प्रदेश की सीमा पर पुलिस चौकी एवं परिवहन विभाग की चौकी स्थित है। उन्होंने कहा कि भूसी से भरे ट्रकों एवं ओवरलोड वाहनों के कारण पूर्व में कई बार दुर्घटनाएं हो चुकी हैं।

रक्तदान करते किच्छा निवासी प्रदीप सिंह खालसा एवं हरप्रीत सिंह। ● अमृत विचार

रक्तवीर प्रदीप सिंह ने किया 29वीं बार रक्तदान

किच्छा : गुरु नानक चैरिटेबल सोसायटी के सदस्य प्रदीप सिंह खालसा ने 29 वीं बार रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया। जिला मुख्यालय स्थित केएमसी अस्पताल में भर्ती बक्शीश सिंह नामक मरीज के लिए तत्काल ब्लड की जरूरत पड़ने की सूचना पर गुरु नानक चैरिटेबल सोसायटी के सदस्य प्रदीप सिंह खालसा एवं हरप्रीत सिंह ने शहीद ऊधम सिंह ब्लड बैंक पहुंचकर स्वेच्छा से रक्तदान किया। समय पर ब्लड मिलने से बक्शीश सिंह की जान बच गई और उनके परिजनों ने समिति सदस्यों का आभार जताया। रक्तदाता प्रदीप सिंह खालसा ने कहा कि मानव सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं होता, इसलिए उनकी टीम अस्पताल में भर्ती मरीजों तथा दुर्घटना में घायल लोगों की जान बचाने के लिए लगातार युवाओं को रक्तदान के लिए प्रेरित एवं जागरूक करने का कार्य कर रही है।

रुद्रपुर में विराट कवि सम्मेलन आज

पत्रकारों को जानकारी देते कार्यक्रम संयोजक व पूर्व विधायक ठुकराल।

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार: राष्ट्र के अमर शहीदों और महान पुरुषों की स्मृति के साथ-साथ उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में इस वर्ष भी रुद्रपुर में भव्य विराट कवि सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। यह आयोजन 9 नवंबर की रात्रि आठ बजे से जनता इंटर कॉलेज परिसर में होगा। कवि सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रीय चेतना मंच के बैनर तले किया जा रहा है।

शनिवार को कार्यक्रम के संयोजक एवं पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल ने पत्रकारों को जानकारी देते हुए बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी कवि सम्मेलन का उद्देश्य समाज में राष्ट्रभक्ति, एकता और सांस्कृतिक चेतना का संदेश देना है।

कवि सम्मेलन में मेरठ से विख्यात कवि डॉ. हरिओम पंवार, नई दिल्ली से प्रताप सिंह फौजदार और दिनेश बावरा, जबलपुर से सुदीप भोला, बिहार से मधुबनी से शंभू शिखर, मुम्बई से अमित शर्मा, नैनीताल से गौरी मिश्रा, चंदौसी से हिमांशु शंकर, बाजपुर से काव्या जैन अपने काव्य पाठ से समां बांधेंगे। कार्यक्रम के संयोजक ठुकराल ने बताया कि कवि सम्मेलन की सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं।

भाजपा क्यों नहीं दे रही नमोशूद्र का दर्जा

रुद्रपुर: किच्छा विधायक तिलक राज बेहड़ ने सवाल उठाते हुए कहा

कि आखिर क्यों भाजपा सरकार बंगाली समुदाय को नमोशूद्र का दर्जा नहीं दे रही है, जबकि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के अलावा हर चुनाव में भाजपा का संकल्प पत्र बंगाली समाज को भ्रमित करता है। क्या भाजपा बंगाली समाज को महज वोट बैंक समझती है। जिसको लेकर अब कांग्रेस एक बड़ा आंदोलन करेगी, ताकि बंगाली समाज को सम्मान दिलाया जा सके। शनिवार को प्रेस वार्ता में बेहड़ ने कहा कि जिस प्रकार सदन में भाजपा के विधायक खुलेआम बयानबाजी कर रहे हैं और निर्वाचित सांसद बंगाली समुदाय को नमोशूद्र का दर्जा देने के मुद्दे पर चुप्पी साधे बैठी है। इसका पुरजोर विरोध किया जाएगा।

बाजपुर के तहसील परिसर में प्रदर्शन करते आंदोलनकारी। ● अमृत विचार

राज्य आंदोलनकारी का दर्जा नहीं मिलने पर किया प्रदर्शन

बाजपुर : राज्य बनने के 25 वर्ष बाद भी राज्य आंदोलनकारी का दर्जा नहीं मिलने पर युवकों द्वारा शनिवार को तहसील परिसर में प्रदर्शन कर एसडीएम के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया गया। ज्ञापन में मूल निवास प्रमाण पत्र बनाने, राज्य आंदोलनकारी चिह्नित करने, प्रदेश में बेकार हो चुकी स्वास्थ्य व्यवस्था को पटरी पर लाने, गैरसैंण को स्थाई राजधानी बनाने, उन्नत कृषि योजना बनाने एवं पलायन रोकने की मांग की गई। इस दौरान हरीश भट्ट, तनवीर खां गुड्डू, मकसूद अहमद, बहादुर भंडारी, विकास गुप्ता, बब्बू सागर, भवनेश उपाध्याय, रमेश नाथ, जगदीश आदि ने तहसील सभागार में चल रहे रजत जयंती के कार्यक्रम के दौरान बाहर प्रदर्शन कर अपना रोष प्रकट किया और इन 25 वर्षों में काबिज रही कांग्रेस-भाजपा की सरकारों को भी राज्य आंदोलनकारी चयन नहीं करने के लिए दोषी ठहराया गया। वहीं कार्यक्रम में मौजूद एसडीएम डॉ .अमृता शर्मा ने बाहर आकर राज्य आंदोलनकारी परिषद की ओर से मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन प्राप्त कर शासन तक उनकी बात पहुंचाने का भरोसा दिलाया गया। वहीं पूर्व सांसद, दर्जा राज्यमंत्री बलराज पासी ने राज्य आंदोलन सक्रिय भूमिका निभाने वाले विकास गुप्ता को एक सवाल का जवाब देते हुए कहा कि राज्य निर्माण में सभी की भागीदारी थी, लेकिन सबको सम्मान नहीं मिला, उनके पिता स्वयं आंदोलन के दौरान बलिया जेल में रहे, लेकिन उन्हें भी राज्य आंदोलनकारी नहीं माना गया।

खटीमा में जल निगम द्वारा बनाई जा रही रोड का निरीक्षण करते पालिकाध्यक्ष।

पालिकाध्यक्ष ने किया निर्माणाधीन सड़क का निरीक्षण

खटीमा : नगर पालिका अध्यक्ष रमेश चंद्र जोशी ने वार्ड संख्या 19 राधेश्याम कॉलोनी की निर्माणाधीन सड़क का निरीक्षण किया। जल निगम द्वारा इस रोड का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। जल निगम द्वारा राधेश्याम कॉलोनी में लगभग ढाई सौ मीटर रोड का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। वार्ड वासियों की मांग पर पालिकाध्यक्ष जोशी ने रोड का निरीक्षण किया। इस अवसर पर मनोज वाधवा, अजय सिंह अज्जू, बलवंत खड़ायत, राहुल सक्सेना, सूरज राठौर, विनोद कॉलोनी, महेश चौपाल, मनोज जोशी, हिम्मत सिंह बिष्ट, वीरेंद्र सामंत मौजूद रहे।

कार्यालय-नगर पंचायत गूलरभोज, (ऊधम सिंह नगर)

ई-मेल-eonpgularbhoj@gmail.com, टोल फ्री नम्बर- 18002573552

पत्रांक : 514/2025-26 — दिनांक : 07-11-2025

निविदा सूचना

नगर पंचायत, गूलरभोज द्वारा राज्य वित्त आयोग / 15 वें वित्त आयोग/ निकाय निधि के अन्तर्गत निम्नानुसार निर्माण कार्यों के सम्पादन के लिए नगर पंचायत, गूलरभोज में पंजीकृत ठेकेदारों से दिनांक-21-11-2025 दिन शुक्रवार को अपराह्न 1:00 बजे तक सील बन्द निविदाए आमंत्रित की जाती हैं, जो कि दिनांक-21-11-2025 दिन शुक्रवार को अपराह्न 03:00 बजे उपस्थित ठेकेदार के समक्ष शासन द्वारा गठित कमेटी द्वारा खोली जायेगी, निविदा प्रपत्र निर्धारित शुल्क अदा कर दिनांक-17-11-2025 से दिनांक-20-11-2025 सायं 5:00 बजे तक किसी भी कार्यालय दिवस में क्रय किये जा सकते है। निविदा प्रपत्र के साथ अनुबन्ध हेतु रु० 100 का नॉन ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर मय रसीद टिकट हस्ताक्षर युक्त एवं धरोहर धनराशि 03 प्रतिशत की एफ०डी०आर०/एन०एस०सी०/ पोस्ट ऑफिस सावधि के रूप में जो वित्तीय वर्ष की अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत, गूलरभोज के पद नाम से बन्धक हो, निविदा प्रपत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य होगा। किसी भी एक अथवा समस्त निविदाओं को स्वीकृत/अस्वीकृत / निरस्त करने का पूर्ण अधिकार अध्यक्ष महोदय, नगर पंचायत, गूलरभोज को निहित होगा अन्य जानकारी एवं निर्धारित शर्तें किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय में देखी व प्राप्त की जा सकती है। निर्माण कार्यों का विवरण निम्नवत् हैः-

क्र० सं०	कार्य का नाम	आगणन धनराशि (लाख में)	धरोहर धनराशि (हजार में) 3 प्रतिशत	नि० प्र० मूल्य +18% GST	अवधि
1	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-02 में भारत पुस्तक भण्डार से खजिया नहर तक इण्टरलॉकिंग कंक्रीट ब्लॉक पेवमेंट रोड व नाली निर्माण कार्य।	24.98	75,000	2,000+ 18% GST	06 माह
2	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-07 कॉलोनी नं०-02 में जनरल विपिन रावत की प्रतिमा चौक का निर्माण कार्य।	7.98	24,000	1,000+ 18% GST	06 माह
3	नगर पंचायत गूलरभोज क्षेत्रान्तर्गत विभिन्न वार्डों में सार्वजनिक स्थानों पर सीमेन्ट कंक्रीट श्री सीटेट बेंच स्थापित करने का कार्य।	7.67	23,500	1,000+ 18% GST	06 माह
4	नगर पंचायम गूलरभोज वार्ड नं०-07 में मैन रोड़ से राहूल के घर तक इण्टरलॉकिंग कंक्रीट ब्लॉक पेवमेंट रोड़ का निर्माण कार्य।	3.33	10,000	500+ 18% GST	06 माह
5	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-03 संतोष नगर में मैन रोड़ से गुरप्रीत सिंह के घर तक इण्टरलॉकिंग कंक्रीट ब्लॉक पेवमेंट रोड़ का निर्माण कार्य।	4.54	14,000	500+ 18% GST	06 माह
6	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-05 गडार बस्ती में स्वतंत्रता सेनानी पंडित गोविंद बल्लभ पंत स्मृति सामुदायिक भवन का निर्माण कार्य।	22.42	67,500	2,000+ 18% GST	10 माह
7	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-02 शिव मन्दिर में सौन्दर्याकरण का कार्य।	7.12	21,500	1,000+ 18% GST	06 माह
8	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-03 सन्तोष नगर में आई०टी०आई० दीवार के साथ रोड़ किनारे फुटपाथ का निर्माण कार्य।	16.49	49,500	1,500+ 18% GST	10 माह
9	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-03 सन्तोष नगर में आई०टी०आई० दीवार के साथ रोड़ किनारे निराले के घर के पास राजा जगतदेव पार्क का निर्माण कार्य।	17.99	54,000	1,500+ 18% GST	10 माह
10	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं०-03 सन्तोष नगर में आई०टी०आई दीवार के साथ रोड़ किनारे राजू की चक्की के पास पं० गोविन्द बल्लभ पंत पार्क का निर्माण कार्य।	7.56	23,000	1,000+ 18% GST	10 माह
11	नगर पंचायत गूलरभोज वार्ड नं0.-06 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्मृति सामुदायिक भवन का निर्माण कार्य।	24.99	75,000	2,000+ 18% GST	10 माह

नोट : शेष धरोहर राशि 7% की एफ०डी०आर०/ एन०एस०सी०/ पोस्ट ऑफिस सावधि अनुबन्ध के समय जमा करनी अनिवार्य होगी।

(राजकुमार भारती)
अधिशासी अधिकारी
नगर पंचायत, गूलरभोज (ऊधमसिंह नगर)

(सतीश चुघ)
अध्यक्ष
नगर पंचायत, गूलरभोज (ऊधमसिंह नगर)

काशीपुर में चुने गए पदाधिकारी। ● अमृत विचार

डीके तिवारी पुलिस पेंशनर्स कल्याण समिति के अध्यक्ष बने

काशीपुर : पुलिस पेंशनर्स कल्याण समिति की मासिक बैठक में सेवानिवृत्त थानेदार डीके तिवारी को अध्यक्ष चुना गया। जबकि हरिओम सिंह महामंत्री व रमेश बिष्ट खजांची चुने गए। उदयराज हिन्दू इंटर कॉलेज के प्रेक्षागृह में समिति के संरक्षक शरद शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक में निवर्तमान अध्यक्ष अरुण कुमार वर्मा ने अपना त्यागपत्र सौंप दिया। चुनाव अधिकारी शर्मा के निर्देशानुसार समिति की नई कार्यकारिणी के चुनाव की घोषणा की गयी। बैठक में सुरेश जोशी ने अध्यक्ष पद के लिए डीके तिवारी के नाम का प्रस्ताव रखा। श्यामलाल कश्यप व वीरेन्द्र कुमार मिश्रा ने तिवारी के नाम का अनुमोदन किया। जबकि उपाध्यक्ष पद पर अम्बा दत्त मंदोली, महामंत्री पद पर हरिओम सिंह, खजांची पद पर रमेश चंद्र बिष्ट, सचिव पद पर गिरीश जोशी व संचार प्रभारी पद के लिए महेश चन्द्र शर्मा चुने गए।

चिन्हीकरण की मांग को लेकर धरना

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: खटीमा की तर्ज पर चिन्हीकरण किए जाने की मांग को लेकर दूसरे दिन भी वंचित राज्य आंदोलनकारी सांकेतिक धरने पर बैठे।

शनिवार को दूसरे दिन वंचित राज्य आंदोलनकारियों ने चिन्हीकरण की मांग को लेकर सांकेतिक धरने के दौरान नारेबाजी की। इस दौरान आंदोलनकारियों ने महापौर दीपक बाली से फोन पर वार्ता कर शासन से चिन्हीकरण की वार्ता कराने की मांग की। आंदोलनकारियों ने देहरादून कूच का कार्यक्रम स्थगित कर दिया है। वहीं घोषित राज्य आंदोलनकारी नरपत सिंह राजपूत द्वारा शनिवार को ब्लॉक में आयोजित आंदोलनकारियों के सम्मान समारोह में वंचित आंदोलनकारियों के चिन्हीकरण की पुरजोर बात उठाने पर उसका स्वागत किया है। इसके अलावा राज्य स्थापना दिवस पर एसडीएम कार्यालय और बार एसोसिएशन परिसर में स्वच्छता अभियान चलाकर पौधरोपण करने का निर्णय लिया गया। सांकेतिक धरने पर युगल किशोर सिंघल, गोपाल रस्तोगी, विनय कुमार विश्नोई, वीरेंद्र शर्मा, वीरेंद्र चौहान, अर्चना लोहनी, मोहन सिंह बिष्ट, गौरव रस्तोगी, अजय अग्रवाल, अनुराग सारस्वत, अमित कुमार, भूपेंद्र कुमार, सुशील कुमार आदि शामिल रहे।

काशीपुर में धरना स्थल पर प्रदर्शन करते वंचित राज्य आंदोलनकारी। ● अमृत विचार

आयोजन

आज ज्ञानार्थी कॉलेज से शुरू होगी दौड़, टी-शर्ट की गई लांच

स्थापना दिवस पर मैराथन में भाग लेंगे काशीपुर के लोग

संवाददाता, काशीपुर

काशीपुर में मैराथन दौड़ की टी-शर्ट की लॉन्चिंग करते महापौर दीपक बाली व अन्य। ● अमृत विचार

अमृत विचार: उत्तराखंड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में "यश कीर्ति सेतु" संस्था द्वारा एक "मैराथन दौड़" का आयोजन रविवार को काशीपुर में किया जाएगा। इसमें भारी संख्या में युवा और बुजुर्ग प्रतिभाग करेंगे।

शनिवार को महापौर दीपक बाली ने प्रतिभागियों को दी जाने वाली टी-शर्ट की लॉन्चिंग की। जिसे पहनकर प्रतिभागी दौड़ में शामिल होंगे। "आइए, सिर्फ एक दिन के लिए, साथ चलें" के मोटिव के साथ "नशा मुक्त उत्तराखंड" और "फिट हैं तो हिट हैं" के स्लोगन को मजबूती प्रदान करते हुए लायंस क्लब ग्रेटर 321-B1, तराई इंडिपेंडेंट स्कूल वेलफेयर सोसाइटी (पंजीकृत) के सहयोग से 2.5 किलोमीटर से 5.0 किलोमीटर की इस मैराथन दौड़ का आयोजन रविवार सुबह 6:30 बजे गिरीताल रोड स्थित ज्ञानार्थी कॉलेज से किया जाएगा, जिसका समापन भी ज्ञानार्थी कॉलेज में ही होगा। आयोजन में 13 वर्ष से कम, 13-21 वर्ष, 21-55 वर्ष, 55 प्लस आयु वर्ग के धावक प्रतिभाग करेंगे। मैराथन दौड़ से पहले केएफसी फिटनेस द्वारा वॉर्मअप कराया जायेगा। मैराथन में पंजाब नेशनल बैंक, लायंस क्लब काशीपुर ग्रेटर, आरएस डिजाइनर काशीपुर, ज्ञानार्थी कॉलेज, आशीष बिल्डर्स एंड डेवलपर्स, एग्रोन रेमेडीज लि. और मेडिकल पार्टनर केवीआर हॉस्पिटल सहभागिता निभाएगा। गुरुकुल फाउंडेशन स्कूल, समर स्टडी हॉल, हेरिटेज सीनियर सेकेंडरी स्कूल, शेमफोर्ड स्कूल के छोटे बच्चे आदि भी सहभागिता निभाएंगे। महापौर बाली ने बताया कि वर्तमान परिवेश में बच्चों के ओपन स्पोर्ट्स में रुचि लेने और बुजुर्गों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना भी इस मैराथन का प्रमुख उद्देश्य है। मैराथन के लिये लगभग 800 रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं। बताया कि कोई भी व्यक्ति बगैर रजिस्ट्रेशन कराए आयोजन में शामिल नहीं हो सकेगा।

इस मौके पर अनुराग सोलंकी, राहुल पैगिया, अनुराग सिंह, गौतम मेहरोत्रा, मोनिका मेहरोत्रा, रश्मि अग्रवाल, अर्पणा अग्रवाल, नीतू अग्रवाल, शिल्पी अग्रवाल, डॉ. नैना अग्रवाल, आशीष पैगिया, विपिन तोमर आदि मौजूद रहे।

ब्रीफ न्यूज

अल्मोड़ा में चरस के साथ दो युवक गिरफ्तार

अल्मोड़ा : अल्मोड़ा पुलिस व एसओजी की संयुक्त टीम ने क्षेत्र में चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान फलसीमा से टाटिक हैलपैड के पास चेकिंग के दौरान मोटर साईकिल संख्या यूपी 21 एएल 3762 को रोका गया। तलाशी लेने पर वाहन में सवार पंकज कुमार वर्ष पुत्र मोहन चन्द्र और मनोज कुमार पुत्र सुरेश चन्द्र, निवासी ग्राम सिलालेख पहाड़पानी थाना मुक्तेश्वर जिला नैनीताल के कब्जे से 656 ग्राम चरस बरामद हुई। पुलिस ने चरस को सीज कर आरोपियों को गिरफ्तार किया। बरामद चरस की कीमत एक लाख से अधिक आंकी गई। पुलिस टीम में एसआई आनन्द बल्लभ कश्मीरा, कांस्टेबल राजीव जोशी, हरीश प्रसाद, चन्दन सिंह शामिल रहे।

मैक्सटन स्ट्रांग स्कूल में हुए रंगारंग कार्यक्रम

बनबसा : मैक्सटन स्ट्रांग स्कूल बनबसा में उत्तराखंड स्थापना के रजत जयंती समारोह के अवसर के अवसर पर विद्यालय में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शनिवार को मैक्सटन स्ट्रांग स्कूल में राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर हुए कार्यक्रमों का शुभारंभ विद्यालय अध्यक्ष क्लिफटन शिफवे द्वारा किया गया। सर्वप्रथम उत्तराखंड राज्य निर्माण के शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। छात्रों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। छात्रों ने उत्तराखंडी व्यंजन भी प्रस्तुत किये। इस अवसर पर प्रबंधक गिरीश चंद्र जोशी, प्रधानाचार्या फिलीस जार्ज, शशि चंद सोराडी.अनीता कालाकोटी, कुसुम लता, आरती चंद समेत समस्त अध्यापक रहे।

पुस्तक मेला कई आयामों में महत्वपूर्णः रेखा

उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस रजत जयंती समारोहों के क्रम में कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने किया शुभारंभ

चम्पावत में पुस्तक मेले का फीता काटकर शुभारंभ करतीं कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या। ● अमृत विचार

संवाददाता, चम्पावत

अमृत विचार :उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में, चम्पावत में आयोजित तीन दिवसीय तकनीकी एवं पुस्तक मेला जारी है। मेले में बड़ी संख्या में पुस्तक प्रेमी पहुंच रहे हैं। इसका शुभारम्भ बीते दिवस महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने फीता काटकर किया था।

मंत्री ने कहा कि यह मेला राज्य के युवाओं और विद्यार्थियों को विज्ञान, तकनीकी नवाचार, पर्यावरण संरक्षण और पठन संस्कृति से जोड़ने का एक सराहनीय प्रयास है। इस मेले में देश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों और संगठनों ने अपनी उल्लेखनीय भागीदारी दर्ज की। स्टॉल लगाने वाली प्रमुख संस्थाओं में नेशनल बुक ट्रस्ट, किताबघर प्रकाशन, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, जीबी. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान कोसी-कटारमल, यूकॉस्ट देहरादून उत्तराखंड जैव प्रौद्योगिकी परिषद, महिला प्रौद्योगिकी केंद्र, लैब, और लैब ऑन व्हील्स जैसी प्रमुख तकनीकी और वैज्ञानिक संस्थाएं शामिल रहीं।

इनके साथ ही डॉ. तिलक राज जोशी, रंग कारवां, हिम वत्स, और मोनिका बोहरा जैसे व्यक्तिगत योगदानकर्ताओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। मेले में लगाई गई प्रदर्शनियां युवाओं और जिज्ञासु पाठकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। इन प्रदर्शनियों में वैज्ञानिक मॉडल, जैव प्रौद्योगिकी के नए प्रयोग, हर्बल उत्पाद, तकनीकी नवाचार, महिला उद्यमिता के उदाहरण, और पर्यावरण जागरूकता पर आधारित सामग्री प्रमुखता से शामिल थी। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा को बढ़ाना और पुस्तक पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करना है। इस अवसर पर भाजपा के जिलाध्यक्ष गोविंद सामंत, नगर पालिका अध्यक्ष प्रेमा पांडे, ब्लॉक प्रमुख अंचला बोरा, जिला महामंत्री मुकेश कलखुड़िया, पूर्व जिला अध्यक्ष हिमेश कलखुड़िया, विधायक प्रतिनिधि प्रकाश तिवारी, सतीश पांडे, शंकर पांडे, सुभाष बगोली, व्यापार संघ अध्यक्ष विकास शाह, जिलाधिकारी मनीष कुमार, सोहन सिंह जीना विश्वविद्यालय के छात्र अध्यक्ष विकास चौधरी, मुख्य शिक्षा अधिकारी मेहरबान सिंह बिष्ट रहे।

विकसित भारत में राज्य की भूमिका अहम होगी

संवाददाता,टनकपुर/ चम्पावत

- **चम्पावत भाजपा कार्यालय में गिनाईं 25 साल की उपलब्धियां**

अमृत विचार : कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि 2047 के विकसित भारत में उत्तराखंड की भूमिका सबसे अहम रहेगी इसके लिए हम सभी प्रदेशवासियों को अभी से तैयार होना होगा। शुक्रवार को चम्पावत भाजपा कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उत्तराखंड द्वारा पिछले 25 साल में हासिल की गई प्रमुख उपलब्धियों पर व्यापक चर्चा हुई।

मुख्य वक्ता कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि उत्तराखंड हिमालयी राज्यों में सबसे बेहतर प्रदर्शन कर रहा है और वह दिन दूर नहीं जब ये राज्य आर्थिक एवं सामाजिक संकेतकों में देश का अग्रणी बन जाएगा।

उन्होंने बताया कि उत्तराखंड देश का पहला राज्य है जिसने समान नागरिक संहिता लागू कर अन्य राज्यों के लिए मिसाल कायम की है।मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि प्रदेश के युवाओं और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए किए गए कदम अनुकरणीय हैं। उन्होंने 2047 में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य की प्राप्ति में उत्तराखंड की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी बल दिया।इस अवसर पर मंत्री ने प्रदेशवासियों से अपील की कि वे जो भी जिम्मेदारी मिली है, उसका ईमानदारी से पालन करते हुए देश को विकसित राष्ट्र बनाने में अपना पूरा सहयोग दें।

इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष गोविंद सामंत, पालिका अध्यक्ष प्रेमा पांडे, ब्लॉक प्रमुख अंचला बोरा, जिला महामंत्री मुकेश कलखुड़िया, पूर्व जिला अध्यक्ष हिमेश कलखुड़िया, विधायक प्रतिनिधि प्रकाश तिवारी, सतीश पांडे, शंकर पांडे, सुभाष बगोली, व्यापार संघ अध्यक्ष विकास शाह, जिलाधिकारी मनीष कुमार, सोहन सिंह जीना विश्वविद्यालय के छात्र अध्यक्ष विकास चौधरी, गोविंद प्रसाद, गौरव पांडे, सूरज पहरी आदि मौजूद रहे ।

राज्य आंदोलनकारियों को किया गया सम्मानित

शहीद राज्य आंदोलनकारियों के चित्र पर पुष्प अर्पित करते डीएम मनीष कुमार।

संवाददाता,टनकपुर/ चम्पावत

अमृत विचार : उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस के रजत जयंती वर्ष पर जनपद चम्पावत में गोरलचौड़ मैदान स्थित राजकीय प्रेक्षागृह में उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राज्य निर्माण आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले राज्य आंदोलनकारियों व उनके परिवारजनों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की गई तथा उनके संघर्ष, बलिदान और योगदान को नमन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती, लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल तथा राज्य आंदोलन के अमर शहीदों की प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि अर्पित कर और दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर जिलाधिकारी मनीष कुमार ने जनपद के विभिन्न स्थानों से आये सम्मानित राज्य आंदोलनकारियों को फूलमाला पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि शहीद राज्य आंदोलनकारी प्रेरणा के प्रतीक हैं। कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। राज्य आंदोलनकारी नवीन मुरारी ने कहा कि यह आंदोलन स्वाभिमान की भी लड़ाई थी। कार्यक्रम में सरदार वल्लभभाई पटेल की जीवनी पर आधारित डॉक्यूमेंट्री भी प्रदर्शित की गई। पालिकाध्यक्ष प्रेमा पांडे व विधायक प्रतिनिधि प्रकाश तिवारी ने भी शहीदों को याद किया।

कार्यक्रम में राज्य आंदोलनकारी संघर्ष समिति अध्यक्ष बसंत तड़ागी, पूर्व विधायक हेमेश खर्कवाल, प्रकाश तिवारी, शंकर दत्त पांडेय, बालम सिंह बोरा, अर्जुन सिंह ढेक, हरीश कलखुड़िया, भुवन जोशी, कमल राजन, खीमानंद पांडे, बहादुर फर्त्याल, मोहन ढेक, शेखर कापड़ी, रविंद्र चंदेल, इंद्रेश लोहनी, गणेश चन्द, देवेन्द्र गुरूंग आदि रहे।

द्वाराहाट व्यापार मंडल के भूपेंद्र अध्यक्ष

- **अध्यक्ष पद पर त्रिकोणीय मुकाबले में दर्ज की शानदार जीत, अन्य पदों पर निर्विरोध निर्वाचन हुआ**

संवाददाता, अल्मोड़ा

द्वाराहाट व्यापार मंडल के नवनिर्वाचित पदाधिकारी। ● अमृत विचार

अमृत विचारः प्रांतीय उद्योग व्यापार मंडल द्वाराहाट के चुनाव में भूपेंद्र कांडपाल ने अध्यक्ष पद पर जीत दर्ज की। त्रिकोणीय मुकाबले में उन्होंने मनोज भट्ट को 99 मतों से पराजित किया। कांडपाल को 290 मत, जबकि मनोज भट्ट को 191 मत मिले। तीसरे प्रत्याशी मुकेश उपाध्याय को 28 मत प्राप्त हुए।

शनिवार को हुए चुनाव में कुल पंजीकृत 548 में से 510 व्यापारियों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मतदान की प्रक्रिया सुबह नौ से दोपहर दो बजे तक चली। वहीं, सचिव पद पर सुधीर हर्बोला, महिला उपाध्यक्ष पद पर ज्योति चौधरी, कोषाध्यक्ष पद पर निरंजन वर्मा, संगठन मंत्री पद पर गिरीश पुजारी, उपाध्यक्ष पद पर तारा सिंह बिष्ट निर्विरोध निर्वाचित हुए। मतगणना पूर्ण होने के बाद विजयी पदाधिकारियों को मुख्य चुनाव अधिकारी जगदीश भट्ट ने शपथ दिलाई। यहां प्रांतीय उद्योग व्यापार मंडल जिलाध्यक्ष मोहन नेगी, जिला सचिव विमल भट्ट, संरक्षक भूपेन्द्र रौतेला, लीलाधर फुलारा, विनोद जोशी, जगदीश भट्ट, डॉ. तारा लाल साह, भगवान चौधरी, दीपक चौधरी, आशीष वर्मा, जिला महामंत्री राजेंद्र पांडे आदि लोग मौजूद रहे।

खाई में गिरा डंपर चालक की मौत

अल्मोड़ाः अल्मोड़ा-घाट-पनार राष्ट्रीय राजमार्ग पर दन्या के पास एक डंपर खाई में जा गिरा। जिसमें चालक की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से रेस्क्यू अभियान चलाया।

शनिवार को डंपर चालक बलवंत सिंह पुत्र प्रेम सिंह, निवासी करोली, जिला बागेश्वर वाहन संख्या यूके-05-सीए-1167 बाड़ेछीना से कांडानौला की ओर से जा रहा था। लेकिन ग्राम बेलक धरमखोर के पास डंपर करीब 500 मीटर खाई में जा गिरा। दुर्घटना में चालक की मौके पर ही मौत हो गई। इधर, थानाध्यक्ष दिनेश नाथ महंत ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उन्होंने बताया कि दुर्घटनाग्रस्त डंपर डामर लेकर जा रहा था।

राज्य आंदोलनकारियों को किया सम्मानित

संवाददाता, टनकपुर/चम्पावत

टनकपुर में राज्य आंदोलनकारी को सम्मानित करते एसडीएम आकाश जोशी।

अमृत विचार : राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती के अवसर पर जनपद चम्पावत में सम्मान समारोहों और गोष्ठियों की श्रृंखला के माध्यम से राज्य निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने वाले आंदोलनकारियों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की गई।

टनकपुर तहसील में उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता मुख्य विकास अधिकारी डॉ. जीएस खाती और नगर पालिका अध्यक्ष विपिन कुमार वर्मा ने संयुक्त रूप से की। आंदोलनकारी संजय जोशी एवं एसडीएम आकाश जोशी ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। आंदोलनकारियों ने राज्य निर्माण संघर्ष के अपने अनुभव साझा किए। जिसके उपरांत सभी आंदोलनकारियों को सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन शिक्षक त्रिलोचन जोशी ने किया। इस अवसर पर कोतवाल चैतन रावत, प्रभाकर उनियाल, रुक्मणी उनियाल, नवीन चंद्र जोशी, विशाल बोहरा, जीत सिंह आदि मौजूद रहे।

पाटी और बाराकोट में भी उत्साहपूर्ण आयोजनः राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ पर पाटी और बाराकोट विकासखंडों में भी रजत जयंती समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख बाराकोट सीमा आर्य द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ कर राज्य आंदोलनकारियों को सम्मानित किया गया। इस दौरान खंड विकास अधिकारी पाटी अवनीश उपाध्याय और बीडीओ बाराकोट मोनिका पाल आदि मौजूद रहे।

लोहाघाट में भी हुआ सम्मान समारोह

विकासखंड लोहाघाट में भी राज्य आंदोलनकारियों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसका शुभारंभ नगर पालिका अध्यक्ष गोविंद वर्मा ने किया। इस अवसर पर तहसीलदार जगदीश नेगी और अधिशासी अधिकारी सौरभ नेगी ने विचार रखे।सम्मानित आंदोलनकारियों में भूपाल सिंह मेहता, प्रहलाद सिंह मेहता, जीवन सिंह मेहता, के.सी. चिलकोटी, मीरा शाह, नंदा देवी, देवकी देवी, कुंदन सिंह बिष्ट तथा कस्तूब चन्द शामिल रहे।

रानीखेत जिले की मांग को लेकर मशाल जुलूस निकालते लोग। ● अमृत विचार

रानीखेत जिले की मांग ने फिर पकड़ा जोर

रानीखेत : रानीखेत उपमंडल को जिला बनाने जाने की मांग पर एक बार फिर आंदोलन शुरू हो गया है। रानीखेत विकास समिति के बैनर पर नागरिकों ने सायंकाल नगर में मशाल जुलूस निकाल कर घोषित जिला रानीखेत का शीघ्र गठन करने की मांग की। विगत सायं रानीखेत विकास समिति के बैनर तले घोषित जिला रानीखेत के शीघ्र गठन को लेकर नागरिकों ने मशाल जुलूस निकाला। सुभाष चौक से मुख्य बाजार होकर विजय चौक तक निकाले गए मशाल जुलूस में शामिल नागरिक आज दोअभी दो रानीखेत जिला दो की मांग करते चल रहे थे। तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ रमेश पोखरियाल निशंक ने रानीखेत सहित चार जिलों की घोषणा की ,लेकिन बाद में मामला खटाई में पड़ गया ।अब 2027 विधानसभा चुनाव से ठीक पहले रानीखेत विकास समिति ने इस मांग पर आंदोलन का बिगुल फूंक दिया है। रानीखेत में जन आंदोलनों का इतिहास असफलताओं से भरा रहा है इसके पीछे स्थानीय राजनीति प्रमुख कारण कहा जा सकता है। इस बार यदि शुरू हुए इस आंदोलन में राजनीतिक घुसपैठ हुई तो आंदोलन के धराशायी होने में देर नहीं लगेगी।

कैंडल मार्चः दो मौतों के रहस्य से उठाओ पर्दा

संवाददाता, पिथौरागढ़

पिथौरागढ़ नगर में कैंडल मार्च निकालते विभिन्न संगठनों के लोग। ● अमृत विचार

अमृत विचारः मुनस्यारी के बोरागांव निवासी बसंती देवी और पातों निवासी प्रदीप दरियाल की मौत के रहस्य से जल्द पर्दा उठाने की मांग पर विभिन्न संगठन के लोगों ने नगर में कैंडल मार्च निकाला। लोगों ने दावा किया कि दोनों की हत्या हुई है। उन्होंने बसंती देवी की मौत के मामले की जांच के लिए भी एसआईटी का गठन करने की मांग की।

मुनस्यारी बचाओ संघर्ष समिति के आह्वान पर विभिन्न संगठन के लोगों ने गांधी चौक से सिल्थाम तिराहे तक कैंडल मार्च निकाला। सभी ने दो मिनट का मौन रख दिवंगत आत्माओं की शांति की प्रार्थना की। गांधी चौक पर हुई सभा में संघर्ष समिति के संयोजक जगत मर्तोलिया ने कहा कि दोनों की संदिग्ध हालात में मौत हुई है। सभी को इनकी हत्या की आशंका है। पुलिस लंबे समय बाद भी किसी भी निर्णय पर नहीं पहुंच सकी है। पुलिस गंभीरता से जांच नहीं कर रही है। लोगों ने प्रदीप दरियाल की तरह बसंती की मौत के मामले की जांच के लिए एसआईटी गठित करने की मांग की। कहा कि घटना के पांच दिन बाद बमुश्किल पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया। अब तक पुलिस ने कोई तकनीकी जांच नहीं की है। ऐसे में पुलिस की कार्यशैली पर भरोसा नहीं कर सकते। कहा कि जल्द ही दोनों की मौत के रहस्य से पर्दा नहीं उठा तो वे उग्र आंदोलन करेंगे। कैंडल मार्च में रं कल्याण संस्था के अध्यक्ष मान सिंह गर्ब्याल, चंद्र सिंह खम्पा, बेडूमहर के प्रधान त्रिभुवन सिंह मेहता, लक्ष्मी दत्त जोशी, खड़क सिंह कोरंगा, चंचल सिंह कोरंगा, अजय मेहता, इंद्रा मेहता, देवकी मर्तोलिया, सुशीला बोथियाल, भूप सिंह बोनाल आदि शामिल रहे।

रोजगार मेले में 54 अभ्यर्थी चयनित

टनकपुर : राज्य स्थापना के रजत जयंती पर जिला प्रशासन तथा कौशल विकास एवं सेवायोजन विभाग द्वारा राजकीय महाविद्यालय के प्रांगण में रोजगार मेले का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पालिकाध्यक्ष विपिन कुमार वर्मा ने दीप प्रज्वलन कर किया। जिला सेवायोजन अधिकारी आरके पन्त ने बताया कि रोजगार मेले में 25 प्रतिष्ठित कंपनियों ने भाग किया। मेले में कुल 520 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। इनमें से 54 अभ्यर्थियों का अंतिम रूप से चयन किया गया, जबकि 466 अभ्यर्थियों को द्वितीय चरण के साक्षात्कार हेतु चयनित किया गया। यहां सीडीओ डॉ. जीएस खाती, एसडीएम आकाश जोशी, प्राचार्य डॉ. अनुपमा तिवारी आदि रहे।

बनबसा के पदक विजेता खिलाड़ी। ● अमृत विचार

बनबसा की आकांक्षा ने स्वर्ण व प्रिंस ने जीता रजत पदक

बनबसा : तालकटोरा इंडोर स्टेडियम नई दिल्ली में आयोजित 5वीं नॉर्थ इंडिया जोन कराटे चैंपियनशिप में प्रदेश के खिलाड़ियों का दबदबा रहा। खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर कई पदक अपने नाम किए। पदक विजेता खिलाड़ियों में बनबसा की आकांक्षा मुरारी स्वर्ण पदक, प्रिंस खोलिया रजत पदक, अंशिका धामी और महक बिष्ट ने कांस्य पदक अर्जित कर चम्पावत जिले एवं उत्तराखंड प्रदेश को गौरवान्वित किया है। सभी पदक विजेता खिलाड़ी दिसम्बर महा में होने वाली ऑल इंडिया इंटर जोन कराटे चैंपियनशिप 2025 में उत्तराखंड टीम का प्रतिनिधित्व कर अपनी प्रतिभा दिखाएंगे।

आयोजन राज्य स्थापना दिवस पर शिविर का आयोजन, लोगों ने योजनाओं की जानकारी ली

बहुउद्देशीय शिविर में किया समस्याओं का समाधान

संवाददाता, अल्मोड़ा

अल्मोड़ा सिमकनी मैदान में बहुउद्देशीय शिविर में जानकारी लेते डीएम अंशुल सिंह।

अमृत विचारः राज्य स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन हुआ। इस दौरान बड़ी संख्या में पहुंचे लोगों ने समस्याएं रखने के साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया।

लोअर मालरोड स्थित सिमकनी खेल मैदान में आयोजित शिविर का शुभारंभ डीएम अंशुल सिंह ने किया। कहा कि राज्य स्थापना की रजत जयंती एक ऐतिहासिक अवसर है, जो हमें अपने राज्य के विकास, स्वावलंबन एवं जनसेवा के प्रति नई ऊर्जा देता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के शिविरों से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ एक ही स्थान पर उपलब्ध होता है। जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है। इस शिविर में सैकड़ों लोग विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों से लाभान्वित हुए। शिविर में कुल 6 शिकायतें विभिन्न विभागों से संबंधित पंजीकृत हुई। जिनके विषय में जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि इन शिकायतों का समाधान प्राथमिकता से करें। यहां मेयर अजय वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष महेश नयाल, एडीएम युक्ता मिश्र, एसडीएम संजय कुमार, विद्या कर्नाटक, ललित लटवाल, रवि रौतेला, विनोद कुमार राठौर समेत अन्य मौजूद रहे।

योजनाओं को लेकर किसानों को जागरूक किया

शिविर में स्वास्थ्य विभाग, समाज कल्याण, कृषि, पशुपालन, उद्यान, महिला सशक्तिकरण, रोजगार, शिक्षा तथा खाद्य आपूर्ति विभाग आदि ने अपने-अपने स्टॉल लगाए। स्वास्थ्य विभाग द्वारा नि :शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, रक्तचाप, मधुमेह जांच एवं दवा वितरण किया गया। समाज कल्याण विभाग द्वारा विभिन्न पेंशन योजनाओं की जानकारी दी गई, वहीं कृषि एवं उद्यान विभाग ने नवीन तकनीकों एवं योजनाओं के बारे में किसानों को जागरूक किया।

रानीखेत में माउंटेन टेरेन बाइकिंग का आयोजन

रानीखेतः रानीखेत माउंटेनियरिंग एंड आउटडोर क्लब के तत्वावधान में माउंटेन टेरेन बाइकिंग एमटीबी 3.0 का आयोजन किया गया। इस साहसिक खेल प्रतियोगिता में लगभग 149 प्रतिभागियों ने विभिन्न वर्गों में हिस्सा लिया। आयोजन का उद्देश्य साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देना और युवाओं में स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. ओबी सिंह उप महानिरीक्षक सशस्त्र सीमा बल तथा विशिष्ट अतिथि हेमंत राय, प्रधानाचार्य अशोका हॉल मजखाली और कुनाल रोहिला मुख्य अधिशासी अधिकारी, छावनी परिषद रानीखेत मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन क्लब के अध्यक्ष सुमित गोयल ने किया। सभी विजेताओं को नगद धनराशि देकर सम्मानित किया।

राजतिलक के साथ रामलीला संपन्न

- **राजतिलक के उपरांत भजन कीर्तन व प्रसाद वितरण हुआ**

संवाददाता, बैरती (अल्मोड़ा)

बसभीड़ा में श्री राम राज्याभिषेक के दौरान राम दरबार व कमेटी के सदस्य।

अमृत विचारः क्षेत्र के बसभीड़ा में आयोजित रामलीला मंचन का राजतिलक के साथ समापन हो गया। इससे पूर्व ग्यारहवें दिवस अहिरावण का छल करके राम, लक्ष्मण को पाताल लोक ले जाने, हनुमान मकरध्वज युद्ध, अहिरावण वध, रावण वध तथा विभीषण का लंका में राज्याभिषेक एवं श्रीराम, लक्ष्मण व सीता की अयोध्या वापसी तथा भरत से संवाद आदि का मंचन किया गया।

राजतिलक के उपरांत भजन कीर्तन व प्रसाद वितरण के साथ रामलीला मंचन का सौहार्दपूर्ण वातावरण में समापन हो गया। रामलीला कमेटी के अध्यक्ष नारायण दत्त तिवारी, कोषाध्यक्ष मोहन सिंह किरौला, मंच डायरेक्टर चंद्र लाल वर्मा, सह डायरेक्टर किरन कुमार पांडेय, मंच प्रभारी विजय पांडेय, पवन पांडेय, मीडिया प्रभारी हेमंत वर्मा, तारा चंद्र तिवारी, विनीता पांडेय, पवन तिवारी, पवन किरौला, कुन्दन बिष्ट, गजेंद्र किरौला, मुकेश पांडेय, आदि सदस्य व पदाधिकारियों ने जनता जनार्दन व सभी सहयोगियों का विशेष आभार व्यक्त किया।

अमृत विचार

रविवार, 9 नवंबर 2025

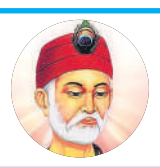

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझकौं सौंपता, क्या लागै है मेरा॥

कबीरदास जी कहते हैं, मेरे पास मेरा अपना कुछ भी नहीं है। मेरा यश, मेरी धन-संपत्ति सब कुछ तुम्हारा ही है। जब मेरा कुछ भी नहीं है, तो उसके प्रति मोह कैसा? इसमें मेरा कुछ भी नुकसान नहीं है, क्योंकि मैं तेरी दी हुई चीजें, तुझे ही समर्पित करता हूं।

वंदे मातरम् : राष्ट्रीय पुनर्जागरण का बीज मंत्र

शब्दों के घटक अक्षर और अक्षर की घटक ध्वनि। ध्वनियों के कुशल संयोजक राग गढ़ते हैं। कोई शब्द अपनी अक्षर शक्ति से मंत्र बन जाते हैं। ऐसा अक्सर नहीं होता। ऐसा तभी होता है, जब दिक्काल शुभ मुहूर्त की रचना करे। ऐसी मुहूर्त में उत्पन्न होता है शक्तिशाली शब्द, जिसका पुरुश्चरण होता रहता है। वंदे मातरम् बंकिम चन्द्र के उपन्यास 'आनंद मठ' का हिस्सा है। राष्ट्रीय आंदोलन में भारत के अवनि अंबर वंदे मातरम् के घोष से आपूरित रहे हैं। वंदे मातरम् राष्ट्रीय पुनर्जागरण का बीज मंत्र है। अभी तीन दिन पहले इसकी 150 वीं जन्म जयंती मनाई गई। दुनिया के किसी भी देश में घर-घर पहुंचने वाली ऐसी काव्य रचना नहीं मिलती।

> प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हमारे पास राष्ट्रगान की कोई रिकार्डिंग नहीं थी, जिसे हम विदेश भेज सकते। प्रतिनिधि के पास 'जन गण मन' का रिकार्ड था। इसे बजाया गया तो अनेक देशों के प्रतिनिधियों को बहुत पसंद आया। तब से यही हमारी सेना, विदेशी दूतावासों आदि में जरूरी अवसरों पर बजाया जाता है।"

'वंदे मातरम्' मंत्र का अवतरण वैदिक ऋचाओं की ही तरह 7 नवंबर, 1875 को हुआ। अंग्रेजी राज के विरुद्ध देश की सांस्कृतिक राष्ट्र भावाभिव्यक्ति वंदे मातरम् में प्रकट हुई। वंदे मातरम् 'आनंद मठ' (1882) में छपा। कांग्रेस 1885 में बनी। एक वर्ष बाद कलकत्ता में हुए अधिवेशन (1886) में हेमेन्द्र बाबू ने वंदे मातरम् गाया। अध्यक्ष मो. रहमत उल्लाह सयानी ने कोई प्रतिवाद नहीं किया। 1896 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसे देशराग एक ताल में गाया। ब्रिटिश सत्ता वंदे मातरम् से डर गई। सरकार ने बंगाल विभाजन की घोषणा की। विरोध शुरू हो गया। बंगभंग 16 अक्टूबर, 1905 के दिन लागू होना था। बंगाल धधक उठा। भारत के अवनि-अंबर में वंदे मातरम् था। 8 नवंबर, 1905 को वंदे मातरम् प्रतिबंधित हो गया। विश्वविख्यात चिंतक विल डूरेन्ट ने बाद में कहा-"इट वाज 1905, देन दैट इंडियन रिवोल्यूशन बिगैन।" वाराणसी के कांग्रेस अधिवेशन (1905) में फिर से वंदे मातरम् गूंजा। पूर्वी बंगाल में कांग्रेस ने शोभायात्रा (1906) निकाली। सेना ने लाठीचार्ज किया। कांग्रेसी नेता अब्दुल रसूल सहित सबने वंदे मातरम् का जयकारा लगाया। कांग्रेस के राष्ट्रवादी नेता विपिन चन्द्र पाल के अखबार 'वंदे मातरम्' पर वंदे मातरम् की प्रशंसा लिखने पर मुकदमा (26.8.1907) चला। विपिन पाल ने "वंदे मातरम् के खिलाफ कानूनी कार्रवाई को राष्ट्रद्रोह" बताया। उन्हें 6 माह की सजा की घोषणा हुई। अदालत के बाहर वंदे मातरम् का जयघोष हुआ। भयंकर लाठीचार्ज में दूर बैठा 15 वर्षीय शिशु सुशील कुमार भी पीटा गया। उसने प्रतिवाद किया। उसे 15 बेतों की सजा सुनाई गई। बेंत की हर मार पर उसने 'वंदे मातरम्' कहा। 1905-06 वंदे मातरम् के उत्ताप का कालखंड है। वंदे मातरम् देश के सभी क्षेत्रों में भारत भक्ति का स्वाभिमान बना।

भारत के अनेक भाषा भाषी कवियों ने 'वंदे मातरम्' अनुवाद किया। विश्वविख्यात कवि सुब्रमण्यम भारती ने तमिल में वंदे मातरम् गाया। फिर ल.न. पंतलु ने तेलगु में वंदे मातरम् की भावाभिव्यक्ति दी। भाषाएं अनेक, भारत माता और वंदे मातरम् एक का आसेतु हिमाचल प्रवाह था। 2005 में आरिफ मोहम्मद खान (सम्प्रति राज्यपाल) ने इसका एक और उर्दू अनुवाद किया है। समाज के सभी वर्गों में वंदे मातरम् की लोकप्रियता थी, लेकिन इसी मंत्र के माध्यम से सत्ता में आई कांग्रेस का इतिहास समझौतावादी ही रहा। काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन (1923) हुआ। पं. विष्णु दिगंबर पुलस्कर के वंदे मातरम् गायन के समय अध्यक्ष मो. अली ने प्रतिकार किया। पुलस्कार गाते रहे, वे चले गए। वंदे मातरम् समाज के प्रत्येक हिस्से में था, लेकिन कांग्रेस कार्यकारिणी (कलकत्ता 28.10.1937) ने इसमें काट छांट की और प्रथम दो चरण ही गाए जाने का प्रस्ताव किया। मो. अली जिन्ना के 11 सूत्री मांग पत्र में एक सूत्र 'वंदे मातरम्' को खारिज किए जाने का भी था।

हृदय नारायण दीक्षित
पूर्व विधानसभा अध्यक्ष
उत्तर प्रदेश

भारतीय स्वाधीनता (15 अगस्त, 1947) के सुप्रभात पर श्रीमती सुचेता कृपलानी ने वंदे मातरम् गाया। आकाशवाणी के निदेशक ने संगीताचार्य पं. ओंकारनाथ ठाकुर से वंदे मातरम् गायन का न्योता देते हुए कहा-"सरदार पटेल ने आपको बुलाया है।" ठाकुर ने कहा-"हम आएंगे तो 'पूरा' गाएंगे।" दिल्ली ने 'हां' किया। आकाशवाणी से वंदे मातरम् का पूरा प्रसारण हुआ, लेकिन आजादी के 1 वर्ष बाद ही राष्ट्रगान 'जन गण मन' आ गया। क्यों आ गया?

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हमारे पास राष्ट्रगान की कोई रिकार्डिंग नहीं थी, जिसे हम विदेश भेज सकते। प्रतिनिधि के पास 'जन गण मन' का रिकार्ड था। इसे बजाया गया तो अनेक देशों के प्रतिनिधियों को बहुत पसंद आया। तब से यही हमारी सेना, विदेशी दूतावासों आदि में जरूरी अवसरों पर बजाया जाता है।" पंडित जी के तर्क दिलचस्प हैं। उनके तर्क और स्पष्टीकरण गले नहीं उतरते। पंडित नेहरू ने कहा, "देश के पास राष्ट्रगान की उपयुक्त रिकार्डिंग नहीं थी।" विदेशी प्रतिनिधियों को जन गण मन भा गया। पंडित जी ने आगे कहा-"मैंने प्रदेशों के राज्यपालों से इस पर राय भेजने हेतु पत्र लिखा है। मंत्रिमंडल का फैसला है कि संविधान सभा में अंतिम निर्णय होने तक 'जन गण मन' ही राष्ट्रगान के रूप में गाया जाएगा।" (वही-संविधान सभा) पंडित जी ने मुख्यमंत्रियों के बजाय राज्यपालों से ही क्यों मशविरा मांगा? क्या राज्यपाल केन्द्र के आज्ञापालक थे? मद्रास के तत्कालीन राज्यपाल आर्ची वालग्ड एडवर्ड, उड़ीसा के आसफ अली, बंबई के धर्मांतरित ईसाई महाराज सिंह, असम के सर अकबर हैदरी आदि नेहरू विचार से भिन्न राय क्यों देते? बेशक पं. बंगाल के मुख्यमंत्री ने वंदे मातरम् पर आग्रही रुख अपनाया।

पंडित जी ने जन गण मन और वंदे मातरम् विवाद को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा-"राष्ट्रगान के रूप में वंदे मातरम् और जन गण मन में एक विवाद-सा उत्पन हो गया है। वंदे मातरम् की महान ऐतिहासिक परंपरा है। कोई दूसरा गीत इसे विस्थापित नहीं कर सकता। जहां तक राष्ट्रगान की धुन का सवाल है, शब्दों के अर्थ की बनिस्पत धुन ज्यादा आवश्यक है। यह धुन ऐसी कि भारतीय संगीत और पाश्चात्य संगीत दोनों का प्रतिनिधित्व करती हो, जिससे इसके आर्केस्ट्रा और बैंड संगीत दोनों में सरलता से विदेश में उपयोग हेतु बजाया जा सके।" (संविधान सभा वही, 25.8.1948)

पंडित जी ने बैंड, आर्केस्ट्रा राग आदि का बहाना बनाया। जबकि यदुनाथ भट्ट ने वन्दे मातरम् को 'राग मल्हार' में गाया। नोपाल चन्द्रधर ने 'देश मल्हार' में और हीराबाई बड़ोदकर ने 'तिलक कामोद' में गाया। वि.दे. अभ्यंकर ने राग 'खंभावती' व कृष्ण राव ने 'राग झिझोटी' में गाया। पुलस्कर ने कई राग मिलाकर गाए, गंगूबाई हंगल व ओंकारनाथ ठाकुर ने इसी के लिए नया रागः बनाया। लता मंगेश्कर ने इसे परवान चढ़ाया। ए. आर. रहमान को संगीत प्रस्तुतिकरण को सबने सराहा पर कांग्रेस ने हमेशा 'तुष्टीकरण राग' में ही गाया। संविधान सभाध्यक्ष ने जन गण मन को राष्ट्रगान और वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत घोषित (24 जनवरी, 1950) कर दिया। राष्ट्र ने संविधान सभा का निर्देश शिरोधार्य किया पर अलगाववादी तत्वों ने 'वंदे मातरम्' को हिकारत से ही देखा। विवादों से 'वंदे मातरम्' और राष्ट्रभाव का सम्मान बढ़ा है। कांग्रेस और अलगाववादी बेपर्दो ही गए। बंगाली वामपंथी भी अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ नहीं रहे, पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मार्क्सवादी चितक डॉ. रामविलास शर्मा ने (स्वाधीनता संग्राम, पृ. 72) लिखा था-"बंगाल और भारत के नवजागरण (इतिहास) में 'वंदे मातरम्' को स्थान देना न देना इतिहास विवेचकों के हाथ में नहीं है। इतिहास निर्माताओं ने अपने कार्यों से इसे 'राष्ट्रीयता का मंत्र' बना दिया है।"

'व्यापारी ट्रंप' की नीतियों का शुरू हुआ विरोध

पिछले सप्ताह ट्रंप की अपनी ही रिपब्लिकन पार्टी के कुछ सीनेटरों सहित कई दूसरे सीनेटरों ने अनेक प्रस्ताव पारित करके उनकी टैरिफ रणनीतियों का विरोध किया है। दूसरी ओर, राष्ट्रपति ट्रंप ने चीन के साथ अपनी व्यापार वार्ता को एक जीत बताया है और अपने चीनी समकक्ष शी जिनपिंग से मुलाकात को अद्भुत बताकर 10 में से 12 नंबर दिए हैं। दोनों शीर्ष नेताओं की यह मुलाकात एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग शिखर सम्मेलन के दौरान दक्षिण कोरिया में हुई थी। ट्रंप के लगातार भाषणों, बयानों पर दृष्टिपात किया जाए तो वे 'व्यापार सर्वोपरि' की नीति पर काम कर रहे हैं।

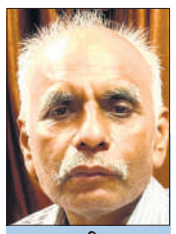

प्रकाश श्रीवास्तव
वरिष्ठ पत्रकार

दक्षिण कोरिया में एक महत्वपूर्ण बैठक के दौरान ट्रंप और शी जिनपिंग ने व्यापार समझौते पर सहमति जताई है। दुनिया की 45 फीसद अर्थव्यवस्था वाले देश के राष्ट्रपति ट्रंप ने चीन पर आयात टैरिफ 57 फीसद से घटाकर 47 फीसद कर दिया है। ट्रंप ने पहले दुर्लभ मृदा तत्वों पर नियंत्रण के कारण पहली नवंबर से चीन पर 100 फीसद शुल्क लगाने की धमकी दी थी। रेयर अर्थ यानी दुर्लभ मृदा तत्वों को लेकर विवाद कम हुआ है। यह वही मुद्दा था, जिससे दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापक व्यापार युद्ध छिड़ने का खतरा पैदा हो गया था। दोनों नेता व्यापार वार्ता को आगे बढ़ाने पर भी सहमत हो गए हैं। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार ट्रंप ने भले ही सुर्खियां बटोर ली हों, लेकिन जिनपिंग विजेता रहे हैं। शी ने ट्रंप के अहंकार को शांत किया है और अपने हितों की सुरक्षा सुनिश्चित की है। यह वही ट्रंप हैं जिन्होंने अपने 2017 के एशियाई दौरे के दौरान रूस के साथ-साथ चीन को भी रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी के रूप में पेश किया था। अपने पहले कार्यकाल में उन्होंने बीजिंग के साथ संबंधों पर चार दशकों से चली आ रही सहमति को तोड़ दिया था। टकराव की खुली नीति शुरू की थी और बीजिंग की हठधर्मिता पर लगाम लगाने के लिए क्वाड जैसे नए गठबंधनों को बढ़ावा दिया था।

> पिछले सप्ताह ट्रंप की अपनी ही रिपब्लिकन पार्टी के कुछ सीनेटरों सहित कई दूसरे सीनेटरों ने अनेक प्रस्ताव पारित करके ट्रंप की टैरिफ रणनीतियों का विरोध किया है। ट्रंप के लगातार भाषणों, बयानों पर दृष्टिपात किया जाए तो वे 'व्यापार सर्वोपरि' की नीति पर काम कर रहे हैं।

एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में, अमेरिकी सांसदों के एक समूह ने ट्रंप से एक संयुक्त अपील की है, जिसमें एच-1बी वीजा आवेदनों पर नए प्रतिबंध और 1,00,000 अमेरिकी डॉलर का शुल्क लगाने वाली घोषणा को वापस लेने का आग्रह किया है। इन सांसदों ने चेतावनी दी है कि इस कदम से अमेरिका-भारत संबंधों में तनाव आ सकता है और अमेरिका का प्रौद्योगिकी नेतृत्व कमजोर हो सकता है। उन्होंने आगाह भी किया है कि इस फैसले से अमेरिकी नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र और भारत के साथ रणनीतिक संबंधों, दोनों को नुकसान होगा। दो राय नहीं कि ट्रंप की विदेश नीति के केंद्र में व्यापार है और इसका उद्देश्य उन सभी देशों और सहयोगियों के साथ आर्थिक रिश्तों को फिर से स्थापित करना है, जिनसे अमेरिकी बाजारों का हित सधता हो।

महिला पत्रकार व डिजिटल हिंसा

पत्रकारिता का मकसद होता है सच को सामने लाना और पीड़ितों की आवाज को ताकत देना, लेकिन जब वही पत्रकार खुद हिंसा और डर का शिकार बनने लगें तो इसे केवल पत्रकारिता के लिए ही नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए खतरे की घंटी माना जाना चाहिए। पूरी दुनिया में महिलाओं को डिजिटल हिंसा का शिकार बनाया जा रहा है, लेकिन अब वह महिला पत्रकार सबसे ज्यादा निशाने पर हैं, जो सामान्य महिलाओं की आवाज उठाती हैं। संयुक्त राष्ट्र की संस्था संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की हाल में आई रिपोर्ट में इस खतरे की गंभीरता को उजागर किया गया है। इस रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में तीन-चौथाई महिला पत्रकारों को ऑनलाइन हिंसा का सामना करना पड़ा है। हर चार में से एक महिला पत्रकार को शारीरिक हमले या जान से मारने की धमकी मिली है। अब यह हिंसा केवल ट्रोलिंग या गालियों तक सीमित नहीं रही। एआई के जरिए डीपफेक, डॉक्सिंग और लैंगिक दुष्प्रचार जैसे नए हथियारों का इस्तेमाल किया जा रहा है।

अमरपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

जाहिर है, इसका उद्देश्य महिला पत्रकारों को डराना, चुप कराना और उनकी साख को खत्म करना है। ऐसे लोग चाहते हैं कि महिला पत्रकारों को इस तरह भयभीत और हतोत्साहित कर दिया जाए, जिससे वह अपना काम ठीक से न कर पाएं। वह आम महिलाओं की आवाज को बुलंद कर पाएं। यूनेस्को ने चेताया है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर शुरू होने वाली यह हिंसा अब वास्तविक दुनिया में भी दिखने लगी है। हाल के एक अध्ययन में पाया गया है कि 14 प्रतिशत महिला पत्रकारों को ऑनलाइन धमकियों के परिणामस्वरूप असली जीवन में हिंसा झेलनी पड़ी है।

बड़ा सवाल है कि आखिर महिला पत्रकार ही क्यों निशाने पर हैं? दरअसल, महिला पत्रकार ही आम महिलाओं पर होने वाले अन्याय, उनके साथ हो रही घरेलू, सार्वजनिक और डिजिटल हिंसा के मामले उजागर करती हैं। पीड़ित महिलाएं भी पुरुषों के बजाय महिला पत्रकारों के समक्ष अपनी बात को खुलकर कह पाती हैं। महिला पत्रकार लैंगिक हिंसा, सत्ता के दुरुपयोग या असमानता जैसे मुद्दों पर जब स्टोरी करती हैं, तो यह न केवल पीड़ित महिलाओं की आवाज को बुलंद करती हैं, बल्कि वह उन फासीवादी ताकतों को भी ललकारती हैं, जो महिलाओं को सीमाओं में बंधे देखना चाहती हैं। इसी कारण महिला पत्रकारों को डराने और बदनाम करने की कोशिशें की जा रही हैं।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता सम्मेलन 2020 के दौरान प्रकाशित एक स्नैपशॉट रिपोर्ट में भी यह सब उजागर हुआ था। स्नैपशॉट रिपोर्ट के अनुसार एक सर्वेक्षण में उत्तर देने वाली 73 प्रतिशत महिला पत्रकारों ने अपने कार्य के दौरान ऑनलाइन हिंसा का अनुभव किया। 25 प्रतिशत को शारीरिक हिंसा की धमकियां मिलीं। 18 प्रतिशत को यौन हिंसा की धमकी दी गई, जबकि 20 प्रतिशत महिला पत्रकारों के साथ ऑनलाइन हिंसा के संबंध में ऑफलाइन हमला किया गया। इसी प्रकार यूक्रेन में किए गए सर्वे के मुताबिक 81 प्रतिशत महिला पत्रकारों ने ऑनलाइन हिंसा का सामना किया, जबकि जिम्बाब्वे में यह संख्या 63 प्रतिशत रही।

रिपोर्ट: भूख और पोषण का गणित

सभ्यता के आरंभ में जब मनुष्य ने पहला बीज मिट्टी में दबाया, तो उसने केवल अन्न नहीं बोया था, उसने भरोसा बोया था। उसने धरती से एक वादा किया था कि दोनों एक-दूसरे की भूख नहीं, जीवन पूरा करेंगे। रोटी तब जीवन का प्रतीक थी और आज भी है। बस संदर्भ बदल गया है। अब सवाल सिर्फ अन्न के उत्पादन का नहीं, बल्कि उसके न्यायपूर्ण वितरण और पोषणीय संतुलन का है।

जब 1945 में संयुक्त राष्ट्र की संस्था खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) की स्थापना हुई थी। उस दौर में, विश्व युद्ध के बाद, जब भुखमरी, खाद्य संकट और कृषि अव्यवस्था ने मानवता की जड़ों को हिला दिया था, तब इस संगठन का लक्ष्य तय किया गया, 'दुनिया के हर व्यक्ति को पर्याप्त, सुरक्षित और पोषक भोजन उपलब्ध कराना' तथा कृषि को टिकाऊ और वैज्ञानिक दिशा देना। भारत ने 1945 में ही, स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले, खाद्य एवं कृषि संगठन की सदस्यता ग्रहण की थी। यह उस युग का भारत था, जो भले ही राजनीतिक रूप से स्वतंत्र न हुआ हो, लेकिन उसने भूख और पोषण के प्रश्न को अपनी सभ्यता की जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार किया था। आज वही भारत खाद्य एवं कृषि संगठन के सबसे सक्रिय सदस्य देशों में है और 'श्रीअन्न' (मिलेट्स) को वैश्विक पहचान दिलाने में उसकी भूमिका निर्णायक रही है।

> राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के आंकड़े भारत की पोषण-स्थिति पर एक सख्त सच्चाई उजागर करते हैं। देश में पांच वर्ष से कम आयु के 35 .5 प्रतिशत बच्चे अपेक्षाकृत लंबाई के नहीं है। 19 .3 प्रतिशत दुबले हैं और 32 .1 प्रतिशत कम वजन के हैं।

जय प्रकाश पांडेय
लेखक

खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने हाल ही में अपनी वार्षिक रिपोर्ट 'विश्व खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति-2025' का विमोचन नई दिल्ली में किया। यह केवल एक वैश्विक दस्तावेज नहीं, बल्कि उस दिशा में उठाया गया विचारात्मक कदम है, जहां भोजन को केवल अस्तित्व की आवश्यकता नहीं, बल्कि मानव गरिमा का अधिकार माना गया है। रिपोर्ट के विमोचन अवसर पर एफएओ के प्रतिनिधियों ने यह स्पष्ट रूप से कहा कि दक्षिण एशिया में भूख और कुपोषण में आई गिरावट का सबसे बड़ा श्रेय भारत की नीतिगत और सामाजिक प्रगति को जाता है।

भारत अब उस स्थिति में है, जहां उसका हर कदम न केवल अपने नागरिकों के जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि पूरे क्षेत्र की खाद्य और पोषण नीतियों की दिशा तय करता है। एफएओ की रिपोर्ट 'विश्व खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति-2025' यह दर्शाती है कि भारत ने भूख घटाने के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। रिपोर्ट के अनुसार, 2021–23 की अवधि में भारत में कुपोषण की दर घटकर 13.7 प्रतिशत रह गई है, जबकि 2014–16 में यह 16.6 प्रतिशत थी। यह आंकड़ा इस बात का प्रमाण है कि भारत की नीतिगत तत्परता जैसे प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम पोषण अभियान, मिड-डे मील योजना और आईसीडीएस आज खाद्य सुरक्षा को व्यवहारिक धरातल पर लाने का उदाहरण हैं। इन पहलों ने न केवल करोड़ों लोगों तक भोजन की पहुंच सुनिश्चित की है, बल्कि भूख संकेतकों में सुधार लाकर दक्षिण एशिया को वैश्विक औसत से ऊपर खड़ा किया है।

रिपोर्ट यह चेतावनी भी देती है कि भारत की खाद्य यात्रा अभी अधूरी है। शहरी गरीबी, आदिवासी क्षेत्रों की पोषण-वंचना और जलवायु-प्रभावित इलाकों में खाद्य असुरक्षा जैसी चुनौतियां आज भी मौजूद हैं। इनके पीछे केवल संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि पोषण-संवेदनशील नीतियों की स्थायित्व की परीक्षा भी निहित है। यदि इन्हीं आंकड़ों को गहराई से देखा जाए, तो इनके भीतर एक असमान और चिंताजनक परत भी स्पष्ट होती है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत की 55.6 प्रतिशत आबादी आज भी स्वस्थ आहार वहन करने में असमर्थ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के आंकड़े भारत की पोषण-स्थिति पर एक सख्त सच्चाई उजागर करते हैं। देश में पांच वर्ष से कम आयु के 35.5 प्रतिशत बच्चे अपेक्षाकृत लंबाई के नहीं हैं। 19.3 प्रतिशत दुबले हैं और 32.1 प्रतिशत कम वजन के हैं।

यद्यपि ये आंकड़े पिछले सर्वेक्षण की तुलना में मामूली सुधार दर्शाते हैं, फिर भी यह स्पष्ट करते हैं कि भारत में कुपोषण का बोझ अब भी गहराई से मौजूद है। बाल-पोषण सुधार की दिशा में सरकार ने कई कार्यक्रम संचालित किए हैं, लेकिन इन योजनाओं का असर समान रूप से हर वर्ग तक नहीं पहुंच पाया है। सामाजिक-आर्थिक असमानता, मातृ-शिक्षा में अंतर, आय स्तर की विषमता और शहरी-ग्रामीण खाई, ये सभी कारक इस सफलता को सीमित कर देते हैं।

माता-पिता और गुरु के साथ ही मित्र भी होते हैं देवता

जीवन में यदि कोई अचानक संकट आ जाए और उसका समाधान नहीं समझ में आ रहा। हताशा, कुंठा और मन में व्यग्रता है, उस बीच कोई मित्र आकर इतना भर कह दे, 'घबराओ नहीं, मैं हूं न?' तो जैसे मरते हुए व्यक्ति को किसी ने अमृत पिलाकर स्वस्थ कर दिया हो, ठीक वही स्थिति संकटग्रस्त व्यक्ति की भी होती है।

सलिल पांडेय
मिर्जापुर

मित्रता का काफी प्रभाव जीवन में पड़ता है, इसलिए मित्रता करें, तो इस कदर करें कि संकट आने पर मित्र डट कर खड़ा हो जाए। सनातन संस्कृति में माता, पिता, गुरु के साथ मित्र को भी देवता की संज्ञा दी गई है। मित्र से कभी छल-कपट न करने का भी मनीषियों ने जिक्र किया है।

मित्रता की व्याख्या करते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में उद्धृत किया है कि मित्रता दूध और पानी की तरह होनी चाहिए। आग पर दूध चढ़ाया जाता है, तो एक समय स्थिति ऐसी आ जाती है कि दूध गर्म होकर उबलने लगता है और आग में जाकर जलने लगता है, लेकिन उसी समय पानी की कुछ बूंदें दूध में डाल दी जाती हैं, तो मित्र को पाकर फिर दूध का उबाल कम हो जाता है और जो दूध आग में खुदकुशी करने जा रहा था, वह फिर शांत हो जाता है। मित्र पानी को पाकर दूध का वजन भी बढ़ जाता है।

इस तरह सुग्रीव और वानरी सेना से मित्रता के बल पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने महाबली रावण का संहार किया। श्री हनुमान जी भी जब पहली बार लंका में गए तो विभीषण से उनकी मित्रता हुई। ऐसी स्थिति में जिस लंका में राक्षसों का प्रभाव था, उस लंका को जलाने में विभीषण की मित्रता ही काम आई।

मित्रता का बेहतरीन उदाहरण महाभारत युद्ध के दौरान भी मिलता है। अर्जुन को श्रीकृष्ण ने मित्र की तरह विषादग्रस्त स्थिति से बाहर किया और युद्ध के लिए तैयार किया, वरना अर्जुन ने स्वजनों के मोह में युद्ध के मैदान से पीछे हटने का मन बना लिया था। महाभारत में ही कर्ण की दुर्योधन से मित्रता का प्रसंग आता है। यह जानते हुए कि दुर्योधन की पराजय निश्चित है, फिर भी कर्ण ने दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा। अतः हर इंसान को चाहिए कि वह मित्र के साथ वफादारी करे।

इतिहास है दिल्ली की बदतर आबो-हवा का

दिल्ली और आसपास के 200 मील के रेडियस में धरती से एक किलोमीटर की ऊंचाई तक हवा में प्रदूषण की कहानी सन् 1911 से ही शुरू हो गई थी, जब अंग्रेजों ने इसे देश की राजधानी घोषित किया था। नवनिर्माण के लिए पत्थर और ईंटों की जरूरत थी। पत्थर को धौलपुर, भरतपुर और जोधपुर से लाया गया, जबकि ईंटो का निर्माण दिल्ली के आसपास उत्तर प्रदेश और हरयाणा, खासतौर से बादली गुलिया चौबीसा के गांवों में बड़े पैमाने पर होने लगा। सन् 1933 तक तो हवा इतनी जहरीली नहीं थी, जितनी कि यह अब है, लेकिन सन् 1955 के बाद से हवा में सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ने लगी।

सरकारी नौकरों के लिए रामकृष्ण पुरम, लक्ष्मीबाई नगर, सरोजिनी नगर और बाद में कुछ और कॉलोनियां बनीं। डीडीए ने दिल्ली देहात की जमीनें जिस दाम में खरीदीं, वह कुछ रुपये गज के हिसाब से था। किसी किसान को एक एकड़ के लिए 1000-1500 रुपये से अधिक न मिला था। एक तरह से गांवों को बर्बाद करने का यह दीर्घकालीन प्रोग्राम साबित हुआ। इनकी जीवनशैली तबाह हो गई। मुगल शासन काल में गांव उजाड़ने जैसा कोई काम नहीं किया गया था। शुरुआती दौर में अंग्रेजों ने भी ऐसा काम कम ही किया।

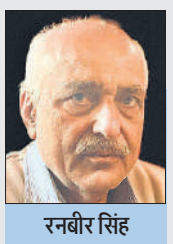

रनबीर सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

गांव और शहरों का आर्गेनिक ग्रोथ अपनी गति और जरूरत से होता गया, लेकिन आजादी के बाद जब पंजाब से विस्थापित होकर अनेक लोग दिल्ली और अन्य शहरों में आ गए, तो बहुत बड़ी संख्या में कॉलोनीज बसने लगीं और गांवों की जमीन पर दबाव पढ़ा। इस प्रक्रिया में करीब 100 से अधिक गांव तबाह हुए। बड़े पैमाने पर होने वाली निर्माण गतिविधि ने निश्चय ही हवा में धूल कणों की मात्रा बढ़ा दी, परंतु इससे इतना नुक्सान नहीं हुआ, जितना कि पश्चिमी दिशा में हजारों की संख्या में लगाए गए उन ईंट भट्ठों की चिमनी से निकले हुए धुएं ने किया, जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड्स मिले होते हैं। यह मात्रा सन् 2000 तक बढ़ती रही और इसके बाद इसका स्तर ऊपर-नीचे होता रहा।

एयर क्वालिटी मॉनीटरिंग का काम भारत मौसम विभाग का है। इसके पास सब तरह का डाटा है। सन् 1969-1975 के बीच समस्या की गंभीरता महसूस होने लगी थी। दिल्ली में वाहन ट्रैफिक में बेशुमार बढ़ोतरी हुई और सन् 1975 के बाद अब तक प्रदूषण कारकों की मात्रा शायद 500 गुना बढ़ चुकी थी। जब भी पछवा हवा नहीं चलती या विंड स्पीड 15 किलोमीटर प्रतिघंटा से कम हो जाती है, दिल्ली में हवा जहरीली हो जाती है। वर्षा के कुछ दिनों को छोड़कर करीब 150 दिन दिल्ली में हवा जहरीली बनी रहती है।

प्रदूषण के मामले में पॉलिटिक्स को अगर हम छोड़ कर साइंस के अनुसार बात करें, तो दिल्ली में क्वालिटी ऑफ लाइफ बेहद खराब है। हैवीली वुडेड एरियाज अथवा पेड़ों की अधिक संख्या वाले कुछेक इलाकों जैसे कि रिज, नयी दिल्ली का क्षेत्र, लोदी गार्डन क्षेत्र और साउथ दिल्ली की कुछ पॉकेट्स के अलावा बाकी दिल्ली नरक समान है। दिल्ली भारत की साइंटिफिक मैनेज मैनेजमेंट कैपिटल भी है। भारत में वैज्ञानिक लोग हवा और पानी में प्रदूषण की मात्रा तो बता सकते हैं, लेकिन वे प्रदूषण फैलाने वाले मानव के सामाजिक व्यवहार और तकनीकी और बैंकिंग नीतियों में सुधार नहीं कर सकते, जिनकी वजह से क्रमशः कूड़े के निपटान, ट्रेवल मोड, वाहनों के लिए सस्ता कर्ज आदि उन कारकों को बढ़ाते हैं, जिनसे प्रदूषण बढ़ता है। राज्य स्तर पर या नगर निगमों के स्तर पर जो लोग काम करते हैं, उनका प्रदूषण संबंधी साइंस और इसे दूर करने के साइंटिफिक मेथड्स से कोई लेना-देना नहीं होता। नगर स्वच्छता के लिए नियुक्त अफसर-कर्मचारी इस मामले में बिलकुल ज्ञान शून्य होते हैं। क्लाउड सीडिंग से बरसात करवाने का तजुर्बा भी कामयाब नहीं हुआ। प्रदूषण को कुदरती और व्यापक बरसात ही कम करती है। दिल्ली ही क्यों, भारत के सभी नगरों में वायु और जल स्रोत में प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए हर नागरिक को व्यवहार बदलना होगा।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं मकान नं.197/1, समता आश्रम गली, रामपुर रोड, हल्द्वानी, जिला नैनीताल, उत्तराखंड-263139 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक - अमित शर्मा*** 05946292618 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UTTHIN/2021/79698, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नैनीताल होगा)।

पॉप के बादशाह की बायोपिक 'माइकल' में नजर आएंगे उनके भतीजे जाफर जैक्सन

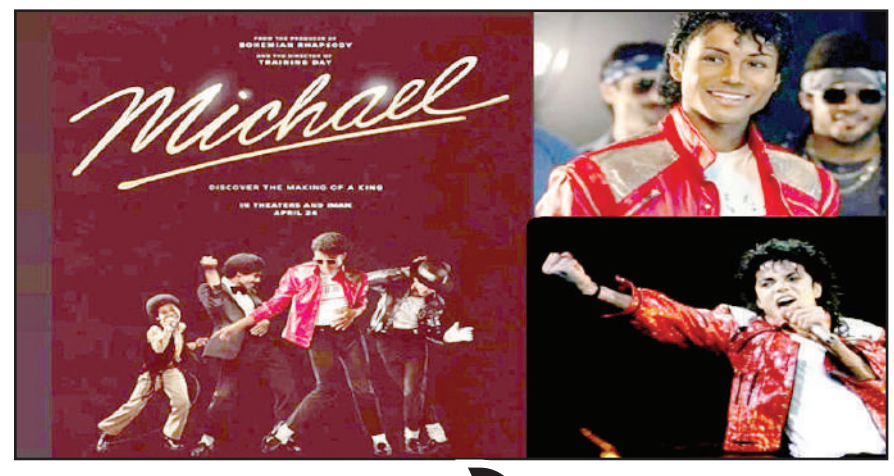

माइकल जैक्सन को दुनिया भर में 'पॉप का बादशाह' कहा जाता है। उन्होंने संगीत, नृत्य और मनोरंजन की दुनिया में ऐसा क्रांतिकारी योगदान दिया, जिसे नई परिभाषा देने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। उनके आइकॉनिक एल्बम- 'थ्रिलर', 'बैड' और 'डेंजरस' ने पॉप संगीत के इतिहास की दिशा बदल दी। उनकी विशिष्ट कलात्मकता, रिदमिक संगीत, नवोन्मेषी वीडियो और मूनवॉक जैसा दिग्गज डांस मूव पॉप संस्कृति को नई ऊंचाई तक ले गए। इसी महान कलाकार की जिंदगी पर आधारित बायोपिक 'माइकल' का टीजर हाल ही में जारी किया गया है। 6 नवंबर को जारी किए गए इस एक मिनट के टीजर में माइकल जैक्सन का किरदार उनके सगे भतीजे जाफर जैक्सन निभाते नजर आ रहे हैं। फिल्म में कोलमैन डोमिंगो, निया लॉन्ग और माइल्स टेलर जैसे प्रसिद्ध कलाकार भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

टीजर में माइकल की दुनिया की झलक

टीजर की शुरुआत स्टूडियो में जाफर जैक्सन द्वारा निभाए गए माइकल के किरदार से होती है, जहां वे हेडफोन लगाकर रिकॉर्डिंग की तैयारी करते दिखते हैं। इसके बाद स्टूडियो से सीधे दृश्य एक भरे हुए स्टेडियम पर कट होते हैं, जहां माइकल की लोकप्रियता की भव्य झलक दिखाई देती है। एक मिनट के टीजर में माइकल की दुनिया की झलक नजर आई। टीजर में माइकल के पेट के हिस्से के क्लोज़-अप शॉट्स और एक बोर्ड पर चिपके नोट्स नज़र आते हैं, जिन पर 'Beat It' और 'Billie Jean' लिखा है। गौरतलब है कि 1983 में रिलीज हुआ 'Beat It' माइकल जैक्सन की डिस्कोग्राफी में एक ऐतिहासिक पड़ाव माना जाता है। इसने उन्हें वैश्विक सितारा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 80 के दशक के संगीत का चेहरा बदल दिया। इसी दौरान टीजर में यह भी दिखाया गया है कि कैसे जाफर जैक्सन मंच पर माइकल जैसी जादुई नृत्य ऊर्जा के साथ परफॉर्म करते हैं और उनकी आवाज भी एक पल को दर्शकों को भ्रमित कर देती है कि यह माइकल ही हैं। जाफर की अदाकारी देखकर फैंस हैरान हैं और लगातार इसकी तारीफ कर रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट किया- "इस ट्रेलर को ऑस्कर मिलना चाहिए।" दूसरे ने लिखा- "जाफर को माइकल का किरदार निभाते देख बेहद खुशी हो रही है। इस फिल्म से बहुत उम्मीदें हैं।" तीसरे ने कहा- "उनकी आवाज बिल्कुल अपने चाचा जैसी है।"

अगले साल अप्रैल में रिलीज होगी फिल्म

यह फिल्म दुनिया के सबसे लोकप्रिय और रहस्यमय कलाकारों में से एक की जिंदगी के उन पहलुओं को सामने लाने का वादा करती है, जिन्हें कम लोगों ने जाना है। यह बताएगी कि माइकल जैक्सन कैसे एक अद्वितीय परफॉर्मर बने और उनकी प्रसिद्धि के पीछे कितनी मेहनत और संघर्ष छिपा था। फिल्म 24 अप्रैल 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

ईरान की निडर आवाज़ एक्ट्रेस तारानेह अलीदूस्ती

तारानेह अलीदूस्ती, एक ऐसा नाम है, जो ईरानी सिनेमा के साथ-साथ वहां के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 12 जनवरी 1984 को तेहरान में जन्मी तारानेह एक अभिनेत्री और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने अपनी कला और साहस दोनों से दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है।

अभिनय की शुरुआत और ऑस्कर तक का सफर

अलीदूस्ती ने बहुत कम उम्र में ही अभिनय की दुनिया में कदम रख दिया था। 17 साल की उम्र में उनकी पहली फिल्म 'आई एम तारानेह, 15' (2002) रिलीज हुई, जिसमें उनके अभिनय को खूब सराहा गया और उन्होंने कई पुरस्कार जीते। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी सबसे बड़ी अंतर्राष्ट्रीय सफलता 2016 में आई फिल्म 'द सेल्समैन' थी, जिसे असगर फरहादी ने निर्देशित किया था। इस फिल्म ने 89 वें अकादमी पुरस्कारों (ऑस्कर) में सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा की फिल्म का पुरस्कार जीता। इस फिल्म के माध्यम से उन्हें वैश्विक पहचान मिली। हालांकि उन्होंने तत्कालीन अमेरिकी यात्रा प्रतिबंधों के विरोध में ऑस्कर समारोह का बहिष्कार किया था, जो उनके राजनीतिक रुख का पहला बड़ा संकेत था।

सामाजिक सक्रियता और जेल यात्रा

तारानेह अलीदूस्ती की प्रसिद्धि सिर्फ उनके अभिनय तक ही सीमित नहीं है। वह ईरान में महिलाओं के अधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की एक मुखर समर्थक रही हैं। 2022 में महसा अमीनी की मौत के बाद ईरान में हुए राष्ट्रव्यापी प्रदर्शनों के दौरान, वह प्रदर्शनकारियों के समर्थन में खुलकर सामने आईं। दिसंबर 2022 में, उन्होंने सोशल मीडिया पर हिजाब के बिना अपनी एक तस्वीर पोस्ट की, जिसमें उन्होंने प्रदर्शनकारियों के समर्थन में एक बैनर पकड़ा हुआ था। इस साहसिक कदम के बाद ईरानी अधिकारियों ने उन्हें 'झूठ फैलाने' और 'देश विरोधी प्रचार' के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। 18 दिनों तक जेल में रहने के बाद, उन्हें जनवरी 2023 में जमानत पर रिहा कर दिया गया। उनकी गिरफ्तारी ने दुनियाभर में मानवाधिकार संगठनों का ध्यान खींचा और उनकी रिहाई के लिए व्यापक अभियान चलाए गए।

एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व

तारानेह अलीदूस्ती आज सिर्फ एक ऑस्कर विजेता अभिनेत्री नहीं हैं, बल्कि वह ईरान में बदलाव की एक प्रतीक बन गई हैं। उन्होंने साबित कर दिया है कि कला और सामाजिक जिम्मेदारी एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। उनका जीवन और संघर्ष उन सभी लोगों के लिए एक प्रेरणा है, जो दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ खड़े होने का साहस करते हैं।

मॉडल आफ द वीक

नाम: चिंकी सिंह

टाउन: कानपुर

एजूकेशन: स्नातक की पढ़ाई जारी

अचीवमेंट: शान-ए-कानपुर का खिताब

ड्रीम: प्रोफेशनल मॉडलिंग, एक्टर

जिंदगी का सफर

क्लासिक वहीदा

वहीदा रहमान भारतीय सिनेमा की महत्वपूर्ण अभिनेत्री हैं, जिन्हें उनकी सुंदरता, गरिमा और अभिनय क्षमता के लिए जाना जाता है। वहीदा रहमान का जन्म 3 फरवरी 1938 को तमिलनाडु के चेंगलपट्टू में एक तमिल मुस्लिम परिवार में हुआ था। वह बचपन से ही एक प्रशिक्षित भरतनाट्यम नर्तकी थीं। अपने परिवार की आर्थिक मदद के लिए, उन्होंने डॉक्टर बनने का अपना सपना छोड़ और फिल्मों में प्रवेश किया। उन्होंने सबसे पहले तेलुगु और तमिल फिल्मों में काम करना शुरू किया।

उनकी प्रतिभा को हिंदी सिनेमा में फिल्म निर्माता गुरु दत्त ने पहचाना, जिन्होंने उन्हें अपनी फिल्म 'सी.आई.डी.' (1956) से हिंदी फिल्मों में लॉन्च किया। गुरु दत्त के साथ उनकी साझेदारी ने भारतीय सिनेमा को कई क्लासिक फिल्में दीं, जिनमें 'प्यासा' (1957), 'कागज के फूल' (1959) और 'साहिब बीबी और गुलाम' (1962) शामिल हैं।

1960 के दशक के मध्य में वहीदा रहमान ने शीर्ष अभिनेत्री के रूप में अपनी जगह बनाई। उनकी सबसे यादगार भूमिकाओं में से एक 'गाइड' (1965) में 'रोजी' की थी, जिसने उन्हें व्यापक पहचान और पहला फिल्मफेयर पुरस्कार दिलाया। इसके बाद, उन्होंने 'तीसरी कसम' (1966), 'नील कमल' (1968) और 'खामोशी' (1969) जैसी कई सफल फिल्में दीं।

1974 में अभिनेता शशि रेखी (कमलजीत) से शादी करने के बाद, उन्होंने अभिनय से ब्रेक ले लिया और बंगलुरु चली गईं। 2000 में अपने पति की मृत्यु के बाद, वह मुंबई लौट आईं और सहायक भूमिकाओं में वापसी की। उन्होंने 'वाटर' (2005), 'रंग दे बसंती' (2006) और 'दिल्ली 6' (2009) जैसी फिल्मों में काम किया। भारतीय सिनेमा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। उन्हें 1972 में पद्मश्री और 2011 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 2023 में, उन्हें भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। वहीदा रहमान आज भी भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक अनमोल विरासत बनी हुई हैं।

मछुआरों के लिए केंद्र ने जारी किए नए नियम

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने देश के विशेष आर्थिक क्षेत्र में गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए नए नियम अधिसूचित किए हैं। इनका मुख्य उद्देश्य मछुआरों, सहकारी समितियों और छोटे मछुआरों को सशक्त बनाना है और विदेशी जहाजों को भारतीय जल में मछली पकड़ने से रोकना है। ये नियम चार नवंबर को अधिसूचित किए गए। ये नियम बजट 2025-26 की घोषणा के अनुरूप हैं और इनसे भारत के समुद्री मत्स्य पालन क्षेत्र में नए अवसर खुलने की उम्मीद है।

अमृत विचार

हल्द्वानी, रविवार, 9 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

जेएसडब्ल्यू सीमेंट का लाभ 75.36 करोड़ रहा

नई दिल्ली। विविध क्षेत्रों में कार्यरत जेएसडब्ल्यू समूह की इकाई जेएसडब्ल्यू सीमेंट लिमिटेड ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 75.36 करोड़ का शुद्ध लाभ कमाया। 2025-26 की जुलाई-सितंबर तिमाही में कंपनी की परिचालन आय 1,436.43 करोड़ रुपये रही, जो गत वित्त वर्ष की समान तिमाही में 1,223.71 करोड़ रुपये थी। समीक्षाधीन तिमाही के दौरान कंपनी का कुल व्यय 1,348.72 करोड़ रुपये रहा। जेएसडब्ल्यू सीमेंट ने अलग दी सूचना में बताया कि निदेशक मंडल ने बैठक में कैप्टिव संयंत्र से सौर ऊर्जा की खरीद के लिए जेएसडब्ल्यू ग्रीन एनर्जी फिफ्टीन लिमिटेड के साथ बिजली खरीद समझौते (पीपीए) पर हस्ताक्षर करने को मंजूरी दे दी।

पैनासोनिक इंडिया के चेयरमैन का इस्तीफा

नई दिल्ली। पैनासोनिक लाइफ सॉल्यूशंस इंडिया के चेयरमैन मनीष शर्मा ने एक दशक से अधिक समय तक उपकरण और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद विनिर्माता कंपनी का नेतृत्व करने के बाद कंपनी से इस्तीफा दे दिया है। शर्मा को 2012 में पैनासोनिक इंडिया के प्रबंध निदेशक (एमडी) और सीईओ के रूप में पदोन्नत किया गया था और वह तब से कंपनी का नेतृत्व कर रहे हैं। वह इस साल के अंत तक अपने पद पर बने रहेंगे। शर्मा ने कहा, यह एक निजी और सोच-समझकर किया गया फैसला है, और मैं देश के विनिर्माण क्षेत्र को आगे बढ़ाने में योगदान देता रहूंगा।

थिंक ने फिजिक्सवाला में निवेश किए 136 करोड़

नई दिल्ली। वैश्विक निवेश फर्म थिंक इन्वेस्टमेंट्स ने शिक्षा प्रौद्योगिकी स्टार्टअप फिजिक्सवाला में 136 करोड़ से थोड़ा अधिक का निवेश किया है। यह निवेश ऐसे समय में हुआ है, जब कंपनी अगले सप्ताह अपने आगामी आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) की तैयारी कर रही है। इस निवेश के तहत थिंक इन्वेस्टमेंट्स ने शिक्षा प्रौद्योगिकी फर्म के 14 कर्मचारियों से फिजिक्सवाला में 1.07 करोड़ इक्विटी शेयर खरीदे, जो 0.37% हिस्सेदारी के बराबर है। ये शेयर 127 रुपये प्रति शेयर की दर से खरीदे गए, जो निर्गम मूल्य से 17% अधिक है।

डिजिटल सेवाओं को बेहतर बना रहा डिजीलॉकर

पहचान पत्र, प्रमाण-पत्र और जरूरी सूचनाओं को डिजिटल रूप में सुरक्षित रखने में सक्षम

नई दिल्ली, एजेंसी

पहचान पत्र, प्रमाण-पत्र और जरूरी सूचनाओं को डिजिटल रूप में सुरक्षित रखने की डिजलॉकर सुविधा पर हुए सम्मेलन में कागजरहित कामकाज, समावेशी शिक्षा और सुरक्षित डिजिटल सेवाओं को सुविधाजनक बनाने में इस की परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित किया गया। सम्मेलन में कहा गया है कि डिजीलॉकर ने डिजिटल व्यवस्था के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ाने में बड़ा योगदान किया है और यह देश में डिजिटल ट्रस्ट क्रांति में महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

'डिजीलॉकर-सभी के लिए पेपरलेस एक्सेस को सक्षम बनाना' विषय पर भारत मंडपम में आयोजित सम्मेलन में डिजीलॉकर को बढ़ावा देने में उल्लेखनीय योगदान करने वाले राज्यों को सम्मानित भी किया गया। इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की शनिवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार मंत्रालय के नेशनल ई-गवर्नेंस डिवीजन (नेजीडी) द्वारा आयोजित इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इस बात पर चर्चा करना और यह दर्शाना था कि डिजीलॉकर कैसे एक साधारण सुरक्षित दस्तावेज़ भंडारण सुविधा से सरकार, शिक्षा और उद्योग क्षेत्रों में विश्वास, सुविधा और दक्षता की आधारशिला के रूप में विकसित हो रहा है।

- कागजरहित काम, समावेशी शिक्षा और डिजिटल सेवाओं को बना रहा सुविधाजनक

डिजिटल इंडिया के मुख्य स्तंभ के रूप में हो रहा विकसित

नेजीडी के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी नंद कुमारम ने डिजीलॉकर के सुरक्षित डॉक्यूमेंट स्टोरेज प्लेटफॉर्म से डिजिटल इंडिया के मुख्य स्तंभ के रूप में विकसित होने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि डिजीलॉकर नागरिकों को पहचान पत्र (आईडी), वित्तीय क्षमता के परिचय और प्रमाण-पत्रों को सुरक्षित रूप से हासिल करने, पुष्टि करने और शेयर करने में सक्षम बनाता है। सम्मेलन में वित्त विभाग में प्रधान सचिव (ए एंड टी) डॉ. ऋचा बागला ने महाराष्ट्र में पेंशन और ट्रेजरी सिस्टम के साथ डिजिलॉकर के इंटीग्रेशन पर प्रस्तुति दी। असम के प्रधान सचिव (आईटी) केएस गोपीनाथ ने राज्य में सेवा सेतु पोर्टल के माध्यम से 500 से ज़्यादा सेवाओं में डिजिलॉकर के समन्वय पर प्रस्तुति दी। सम्मेलन में डिजिलॉकर अपनाने में राज्यों की खास उपलब्धियों के लिए उन्हें 'डिजिलॉकर एक्सेलरेटर' के तौर सम्मानित किया गया। असम को बेहतर सुरक्षा और पारदर्शिता के लिए अलग-अलग सेवाओं में डिजिलॉकर के बड़े पैमाने पर इम्प्लीमेंटेशन के लिए 'इंटीग्रेशन एक्सीलेंस' सम्मान प्रदान किया गया। हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश दोनों को अपने राज्यों में सबसे बड़े डिजिटल पहचान से जुड़ी नागरिक पहलों को बनाने में डिजिलॉकर का इस्तेमाल करने के लिए पीपल फर्स्ट इंटीग्रेशन सम्मान मिला। मेघालय को डिजिलॉकर और एंटिटीलॉकर दोनों प्लेटफॉर्म को इंटीग्रेट करने के लिए डुअल प्लेटफॉर्म अचीवर सम्मान, केरल को डिजिलॉकर के ज़रिए पेपरलेस गवर्नेंस शुरू करने में नवाचार के लिए तथा महाराष्ट्र को तेज़ी से डिजिलॉकर अपनाने के लिए फास्ट ट्रैक इंटीग्रेशन सम्मान मिला। मिजोरम को सबसे ज़्यादा रिक्वेस्ट मॉडल इंटीग्रेशन हासिल करने के लिए सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय डिजीलॉकर सम्मेलन की अध्यक्षता करते मंत्रालय के सचिव एस. कृष्णन ने कहा कि डिजीलॉकर नागरिकों, मंत्रालयों और विभागों को जोड़ने वाली ट्रस्ट लेयर (विश्वास की परत) के रूप में काम करता है - जो सुरक्षित, इंटरऑपरेबल और जवाबदेह डिजिटल गवर्नेंस को सक्षम बनाता है। डिजिटल कनेक्टिविटी (सम्पर्क सुविधा) से क्षमता बढ़ी है, सर्विस डिलीवरी से आत्मनिर्भरता आ रही और अब डिजिटलीकरण से भरोसा बढ़ रहा है। डिजिटल सम्पर्क सुविधा व्यवस्था चलाने की नई अवसंरचना है। हमारा विजन ऐसा भविष्य है जहां हर डिजिटल संपर्क भरोसेमंद हो, हर नागरिक सशक्त हो, और हर संस्थान जवाबदेह हो। इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अपर सचिव अभिषेक सिंह ने टेक्नोलॉजी-आधारित गवर्नेंस में भारत की यात्रा को डिजिटल ट्रस्ट क्रांति बताया। उन्होंने गवर्नेंस सिस्टम में विश्वास बनाने में डिजीलॉकर की भूमिका पर बल दिया।

विदेश की कंपनियां भारत में तलाशेंगी संभावनाएं

नई दिल्ली, एजेंसी

- सिंगापुर-कनाडा की स्टार्टअप कंपनियां विस्तार को उत्सुक

सिंगापुर और कनाडा की कई अंतर्राष्ट्रीय स्टार्टअप कंपनियों ने भारत में अपने कारोबार का विस्तार करने में रुचि दिखाई है। स्टार्टअप कंपनियों ने हांगकांग साइंस एंड टेक्नोलॉजी पार्क्स कॉरपोरेशन (एचकेएसटीपी) द्वारा आयोजित वैश्विक पिच प्रतियोगिता ईपीआईसी 2025 के दौरान भारत में अपने कदम बढ़ाने की इच्छा जताई।

पिच एक ऐसी प्रतियोगिता है जहां उद्यमी अपने व्यावसायिक विचारों को निर्णायकों और निवेशकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। प्रतियोगिता के दौरान 70 से अधिक देशों से आए 1,200 स्टार्टअप में से 100 को तीन श्रेणियों डिजिटल स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी, वित्त प्रौद्योगिकी और हरित प्रौद्योगिकी में चुना गया। इनमें भारत के दो स्टार्टअप भी शामिल हैं। यह वार्षिक कार्यक्रम संस्थापकों को वैश्विक निवेशकों, कॉरपोरेट सहयोगियों और उभरते बाजारों से जोड़ने का अवसर देता है।

एचकेएसटीपी के चेयरमैन सनी चाई ने कहा, हम हांगकांग की कनेक्टिविटी को गति दे रहे हैं, जिससे विचारों को सीमाओं के पार ले जाने और विस्तार करने में मदद मिल रही है। सिंगापुर की कंपनी एनईयू बैटरी मैटेरियल्स के संस्थापक और सीईओ ब्रायन ओह ने कहा, हमारी प्राथमिकता सिंगापुर से परे अपने व्यवसाय को बढ़ाना है, क्योंकि बैटरी पुनर्चक्रण केवल सिंगापुर या हांगकांग की समस्या नहीं है, यह एक वैश्विक समस्या है।

नालको ने दर्ज की 35 प्रतिशत की वृद्धि

भुवनेश्वर, एजेंसी

- दूसरी तिमाही में नवरत्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम की कंपनी का लाभ बढ़कर 1,433 करोड़ रुपये पहुंचा
- खान मंत्रालय के नियंत्रण वाली कंपनी ने बैठक में तिमाही वित्तीय रिपोर्ट को दी मंजूरी

केंद्र सरकार के नवरत्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम, नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लिमिटेड (नालको) ने चालू वित्त वर्ष में सितंबर में समाप्त तिमाही में उल्लेखनीय 35 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1,433 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया। पिछले वित्त वर्ष की तिमाही में शुद्ध लाभ 1,062 करोड़ रुपये था। खान मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में काम करने वाली इस कंपनी के निदेशक मंडल ने शुक्रवार को भुवनेश्वर में बैठक में तिमाही वित्तीय रिपोर्ट को मंजूरी दी।

इसके अनुसार आलोच्य तिमाही में नाल्को की कुल परिचालन 4,292 करोड़ रुपये रही, वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही की तुलना में 7.2% वृद्धि दर्शाती है। वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) के दौरान, नालको ने 50.15% की वृद्धि दर्ज करते हुए 2,497 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 1,663 करोड़ रुपये था। उत्पादन के मोर्चे पर, कंपनी ने वर्ष की पहली छमाही के दौरान एल्युमिना हाइड्रेट, कैल्साइन्ड एल्युमिना और एल्युमिनियम कास्ट मेटल उत्पादन में अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हासिल किया। एल्युमिना हाइड्रेट उत्पादन रिकॉर्ड 11,53,000 टन तक पहुंच गया, जबकि एल्युमिनियम कास्ट मेटल उत्पादन 2,34,148 टन रहा। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में

कंपनी ने 6,99,913 टन एल्युमिना की बिक्री की जो वर्ष 2013-14 की इसी तिमाही के 6,56,480 टन बिक्री के पिछले रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। कंपनी ने इसी अवधि के दौरान 2,25,675 टन धातु की अपनी सर्वोच्च घरेलू बिक्री भी हासिल की। नालको के बोर्ड ने 2025-26 के लिए 80% की दर से 4 रुपये प्रति इक्विटी शेयर (अंकित मूल्य 5 रुपये) का अंतरिम लाभांश घोषित किया1 इस तरह कंपनी का यह अंतरिम लाभांश कुल 734.65 करोड़ रुपये होगा।

कॉर्पोरेट अर्निंग्स में सुधार के मिले सकारात्मक संकेत

- गिरावट पर खरीदारी बनी रहेगी बेहतरीन रणनीति
- चुनिंदा सेक्टरों को दूसरी तिमाही के नतीजों से मिला समर्थन

मुंबई, एजेंसी

नए घरेलू ट्रिगर्स के अभाव और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की बिकवाली के बीच भारतीय शेयर बाजार ने गुरुवार को नकारात्मक रुझान के साथ कारोबार किया। हालांकि, चुनिंदा सेक्टरों को दूसरी तिमाही के उत्साहजनक नतीजों से समर्थन मिला, जिससे कॉर्पोरेट अर्निंग्स में सुधार के संकेत मिले हैं। विशेषज्ञ गिरावट पर खरीदारी को बाजार की आगे की दिशा तय करने वाली सबसे मजबूत रणनीति बता रहे हैं।

जियोजित इन्वेस्टमेंट्स के रिसर्च हेड विनोद नायर ने बाजार कहा, पीएसयू बैंक शेयरों ने मजबूत कारोबारी प्रदर्शन, बेहतर एसेट क्वालिटी, एफडीआई लिमिट में बढ़ोतरी की संभावनाओं और सेक्टर कंसोलिडेशन को लेकर अटकलों के कारण जोर पकड़ा। वहीं, कमजोर वैश्विक संकेतों और फेड की ब्याज दर कटौती की घटती उम्मीदों से आईटी व मेटल शेयरों पर दबाव रहा। ग्लोबल स्तर पर ट्रेड व टैरिफ अनिश्चितताओं के बीच निवेशक सतर्क बने हुए हैं। घरेलू मोर्चे पर पीएमआई आंकड़े मिले-जुले रहे, लेकिन जीएसटी संग्रह में मजबूती बनी रही, जो आर्थिक विकास में तेजी और कंपनियों की कमाई में सुधार के अच्छे संकेत दे रही है।

मजबूत अमेरिकी डॉलर और भू-राजनीतिक तनाव में कमी से सोने की कीमतें हालिया उच्च स्तर से लुढ़क गईं।

स्मॉलकैप में 46% तक की भारी गिरावट, ब्रॉडर इंडेक्स लुढ़के

पिछले हफ्ते (7 नवंबर) उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में ब्रॉडर इंडेक्स 0.6-1.5% गिरे, जिससे मिडकैप व स्मॉलकैप की दो सप्ताह की बढ़त थम गई। एफआईआई ने 1,632.66 करोड़ की इक्विटी बेची, जबकि डीआईआई ने 16,677.94 करोड़ की खरीदारी की। बीएसई सेंसेक्स 722.43 अंक या 0.86% गिरकर 83,216.28 पर और निफ्टी 50 229.8 अंक या 0.89% लुढ़ककर 25,492.30 पर बंद हुआ। अधिकांश सेक्टोरल इंडेक्स लाल निशान में रहे: निफ्टी मीडिया 3.2%, डिफेंस 2%, मेटल 1.7% और आईटी 1.6% नीचे। हालांकि, निफ्टी पीएसयू बैंक में 2% की बढ़त दर्ज हुई। बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स में 1.5% की गिरावट आई। वर्थ इन्वेस्टमेंट एंड ट्रेडिंग, फिशर मेडिकल वेंचर्स, स्टैलियन इंडिया फ्लोरोकेमिकल्स, रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर, ब्लिस जीवीएस फार्मा, उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक, वीएल ई-गवर्नेंस एंड आईटी सॉल्यूशंस, रिलायंस पावर व पंजाब केमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन के शेयर 15-46% तक ढह गए।

राष्ट्रीय

ये नेताओं का नहीं, जनता का चुनाव

मोदी बोले- लोगों को डर है कि राजद के नेता सत्ता में आ गए तो सिर पर कट्टा रख देंगे

बेतियामें जनसभा में पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत करते भाजपा नेता व कार्यकर्ता।

बेतिया/सीतामढ़ी, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को दावा किया कि बिहार में लोग राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नीत विपक्ष को वोट नहीं दे रहे हैं क्योंकि उन्हें डर है कि वे सत्ता में आए तो लोगों के सिर पर कट्टा रख देंगे और उन्हें हाथ ऊपर करने का आदेश देगी। प्रधानमंत्री ने राज्य के सीतामढ़ी जिले की चुनावी रैली में कहा कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) बेहतर शिक्षा और खेल जैसे क्षेत्रों में विकास के अलावा स्टार्ट-अप उद्यमों को भी बढ़ावा दे रहा है।

बिहार संग्राम

उन्होंने कहा कि राज्य की जनता स्पष्ट रूप से कह रही है- नहीं चाहिए कट्टा सरकार, फिर एक बार राजग सरकार। मैंने प्रचार अभियान भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की धरती से शुरू किया था और अब उसका समापन चंपारण की ऐतिहासिक भूमि पर कर रहा हूं। हालांकि प्रचार कल तक जारी रहेगा, लेकिन यह मेरी अंतिम जनसभा है। यह चुनाव नेताओं का नहीं, बल्कि बिहार की जनता का चुनाव है। उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि राजग हर बूथ पर विजयी हो। एक भी बूथ पर हमें हार का सामना नहीं करना चाहिए। मोदी ने पहले चरण में रिकॉर्ड मतदान पर प्रसन्नता जताई। आप लोगों ने मतदान का नया इतिहास रचा है। बिहार ने साबित किया कि लोकतंत्र की असली ताकत जनता के हाथ में है। चंपारण की धरती को नमन करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, यह वही भूमि है, जिसने गांधी को 'महात्मा' का दर्जा दिया था। इसी धरती पर आज बिहार विकास के नए अध्याय की शुरुआत कर रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार जल्द खाद्य प्रसंस्करण का 'पावरहाउस' और वस्त्र उद्योग (टेक्सटाइल हब) का केंद्र बनेगा। बिहार विकसित भारत का प्रतीक राज्य बनने जा रहा है। राज्य में पूर्ववर्ती राजद के शासनकाल को याद करते हुए मोदी ने कहा कि बेतिया ने 'जंगलराज' के सबसे बुरे दौर को देखा है। कट्टा और रंगदारी की राजनीति ने बिहार को बर्बाद कर दिया था। हमें उस दौर से बिहार को बचाना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैंने हाल में एक वीडियो देखा।

चिंता है, तो राहुल ने अल्पसंख्यक को विपक्ष का नेता क्यों नहीं बनाया

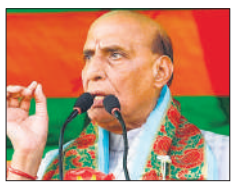

सासाराम/भभुआ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को कहा कि यदि कांग्रेस नेता राहुल गांधी वास्तव में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) या अल्पसंख्यक समुदायों के हितों को लेकर चिंतित हैं, तो उन्हें लोकसभा में विपक्ष के नेता (एलओपी) के रूप में इन्हीं वर्गों में से किसी को नियुक्त करना चाहिए था। रोहतास और कैमूर जिलों में जनसभाओं में सिंह ने राहुल गांधी के वोट चोरी के आरोप को बेवजह और निराधार बताया। उन्होंने कहा कि अगर राहुल गांधी के पास सबूत हैं, तो उन्हें निर्वाचन आयोग में शिकायत करनी चाहिए। सिंह ने कहा, राहुल गांधी 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद विपक्ष के नेता बने थे। अगर राहुल गांधी को लगता है कि बिहार में वोट चोरी हो रही है, तो उन्हें सबूतों के साथ निर्वाचन आयोग में शिकायत करनी चाहिए। लेकिन वह ऐसा नहीं कर रहे हैं। वह केवल एक संवैधानिक संस्था पर निराधार आरोप लगा रहे हैं। वह झूठ बोल रहे हैं। सिंह ने कांग्रेस पर जाति, धर्म और संप्रदाय के नाम पर समाज में दरार पैदा करने का आरोप लगाते हुए कहा कि यह उसकी विभाजनकारी राजनीति का हिस्सा है। राहुल गांधी रक्षा बलों में आरक्षण का मुद्दा उठा रहे हैं। हमारे सशस्त्र बल इन सभी बातों से ऊपर हैं। उन्हें राजनीति में नहीं घसीटना चाहिए। उन्होंने कहा, भाजपा आरक्षण का समर्थन करती है।

राहुल की दुकान बंद हो जाएगी, इंडिया ब्लॉक का सफाया तय: शाह

पूर्णिया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तंज कसा कि उनकी दुकान बिहार में बंद हो जाएगी, क्योंकि चुनाव में इंडिया गठबंधन का सफाया होने जा रहा है और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) 160 से अधिक सीट जीतकर सरकार बनाएगा। शाह ने पूर्णिया, कटिहार और सुपौल में लगातार चुनावी सभाओं में आरोप लगाया कि राहुल गांधी एवं राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव सीमांचल क्षेत्र को घुसपैठियों का गढ़ बनाने पर आमादा हैं। केंद्र सरकार हर अवैध प्रवासी की पहचान करेगी, उनके नाम मतदाता सूची से हटाएगी और उन्हें देश से बाहर भेजेगी। राहुल गांधी और तेजस्वी यादव बिहार के सीमांचल को घुसपैठियों का अड्डा बनाना चाहते हैं। हम घुसपैठिए की पहचान करेंगे, उनके नाम मतदाता सूची से हटाएंगे और उनके देश वापस भेजेंगे। गृह मंत्री ने कहा, अगर आप नहीं चाहते कि बिहार का मुख्यमंत्री घुसपैठिए तय करें, तो विपक्षी गठबंधन को हराइए जो उन्हें बचाने के लिए यात्रा निकाल रहा है।

भाजपा का लोस में 400 पार का दावा निकला था खोखला: खरगे

गया/पटना। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बिहार चुनाव में राजग की जीत संबंधी प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री के दावों को खारिज करते हुए कहा कि इन नेताओं का 400 पार वाला दावा भी लोकसभा चुनाव में गलत साबित हुआ था। खरगे ने गया में कहा, भाजपा नेतृत्व वाले गठबंधन में कुछ ठीक नहीं चल रहा। जदयू अध्यक्ष और सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार को फिर मुख्यमंत्री पद के लिए समर्थन मिलेगा या नहीं। खरगे ने कहा, मोदी यह बताएं कि क्या ट्रंप ने भी उनके सिर पर कट्टा रखा था? उनका यह तंज अमेरिकी राष्ट्रपति कई बार यह दावा कर चुके हैं कि भारत ने इस साल की शुरुआत में पाकिस्तान के साथ सैन्य टकराव रोकने का निर्णय उनकी मध्यस्थता से लिया था।

प्रधानमंत्री पद की गरिमा कट्टा जैसे शब्दों से गिर रही है : प्रियंका

किशनगंज। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कट्टा जैसे शब्दों का प्रयोग कर अपने पद की गरिमा को ठेस पहुंचा रहे हैं। बिहार के कटिहार में चुनावी रैली में प्रियंका गांधी ने कहा कि कांग्रेस आज वही लड़ाई लड़ रही है जो कभी महात्मा गांधी ने लड़ी थी। एक तरफ प्रधानमंत्री वंदे मातरम का गुणगान करते हैं, जो अहिंसा और एकता का प्रतीक है, और दूसरी तरफ कट्टा जैसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। कांग्रेस महासचिव ने कहा कि यह सरकार युवाओं को रोजगार देने में विफल रही है और उसने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को दो कॉरपोरेट मित्रों को सौंप दिया है। भाजपा को लगता है कि वह महिलाओं को 10,000 रुपए देकर उनका वोट खरीद लेगी।

ईसी ने तरनतारन की एसएसपी को किया निलंबित

चंडीगढ़। निर्वाचन आयोग (ईसी) ने 11 नवंबर को होने वाले तरनतारन विधानसभा सीट के लिए उपचुनाव से महज तीन दिन पहले शनिवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) रवजोत कौर ग्रेवाल को निलंबित कर दिया। वह सितंबर में तरनतारन के एसएसपी के रूप में तैनात हुई थीं।

पंजाब उपचुनाव

अमृतसर के पुलिस आयुक्त गुरप्रीत सिंह भुल्लर को तत्काल प्रभाव से तरनतारन के एसएसपी का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। ग्रेवाल के निलंबन का कोई कारण नहीं बताया गया है। गत माह, विपक्षी शिरोमणि अकाली दल (शिअद) अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने पंजाब के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पास एसएसपी ग्रेवाल के खिलाफ शिकायत दी थी। बादल ने एसएसपी ग्रेवाल पर आरोप लगाया था कि उन्होंने तरनतारन उपचुनाव के लिए प्रचार करने से रोकने के लिए उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं के खिलाफ झूठी प्राथमिकी दर्ज कराया। उन्होंने निर्वाचन आयोग के इस कदम की सराहना की।

ईडी ने पीएफआई के खिलाफ धनशोधन मामले में 67 करोड़ की संपत्ति कुर्क की

नई दिल्ली, एजेंसी

- प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन के खिलाफ संघीय जांच एजेंसी ने जारी किया एक नया आदेश

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शनिवार को कहा कि उसने प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के खिलाफ धन शोधन जांच के तहत 67 करोड़ की संपत्ति कुर्क करने के लिए एक नया आदेश जारी किया है। संघीय जांच एजेंसी ने कहा कि ये संपत्तियां पीएफआई के लाभकारी स्वामित्व और नियंत्रण में थीं और इसके राजनीतिक मोर्चे - सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) के अलावा, विभिन्न ट्रस्टों के नाम पर थीं।

केंद्र ने सितंबर 2022 में ईडी, राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) और विभिन्न राज्य पुलिस बलों द्वारा समन्वित छापेमारी के बाद पीएफआई पर प्रतिबंध लगाया था और इसे गैरकानूनी संगठन बताया, जो आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त था। एसडीपीआई की स्थापना 2009 में हुई थी। यह निर्वाचन आयोग (ईसी) के साथ एक राजनीतिक दल के रूप में भी पंजीकृत है। ईडी ने कहा कि 67.03 करोड़ की संपत्ति कुर्क करने के लिए 6 नवंबर को अनंतिम आदेश जारी हुआ था। कुर्की के नए मामले के साथ जब्त हुई कुल संपत्ति अब 129 करोड़ है। ये संपत्तियां विभिन्न संस्थाओं के नाम पर पंजीकृत हैं, जैसे ग्रीन वैली फाउंडेशन, अलप्पुझा सोशल कल्चरल एंड एजुकेशन ट्रस्ट, पथनमथिट्टा में पंडालम एजुकेशनल एंड कल्चरल ट्रस्ट, वायनाड में इस्लामिक सेंटर ट्रस्ट, मलप्पुरम में हरिथम फाउंडेशन (पूवनचिना), अलुवा में पेरियार वैली चैरिटेबल ट्रस्ट, पलक्कड़ में वल्लुवुनाड ट्रस्ट और तिरुवनंतपुरम में एसडीपीआई के कुछ भूखंड। ईडी ने कहा कि पीएफआई ने वल्लुवनड हाउस पट्टाम्बि और मालाबार हाउस (हरिथम फाउंडेशन) सहित कई ऐसी संपत्तियों पर प्रशिक्षण के लिए शेड बनाए गए।

पीएफआई सिखा रहा था युद्धाभ्यास

संघीय एजेंसी ने कहा, पीएफआई हथियारों से आक्रामक और रक्षात्मक युद्धाभ्यास सिखाने के लिए नकली मालिकों के नाम पर पंजीकृत संपत्तियों का प्रयोग कर रहा था। इनका उद्देश्य जिहादी एजेंडे को पूरा करने के लिए कैडर और सदस्यों को तैयार करना और गैरकानूनी गतिविधियों के लिए करना था। ईडी के अनुसार, पीएफआई के विचारक स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया' (सिमी) के पूर्व सदस्य थे, जो जमात-ए-इस्लामी की छात्र शाखा थी। पीएफआई की उत्पत्ति का इतिहास बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद जमात-ए-इस्लामी पर प्रतिबंध से जुड़ा है। उस समय, यूएपीए के तहत जमात-ए-इस्लामी की संपत्तियों को कुर्क और सील कर दिया गया था। ईडी ने पीएफआई द्वारा अपराध से अर्जित आय की मात्रा 131 करोड़ रुपये आंकी है।

साइबर अपराधियों ने सेवानिवृत्त इंजीनियर से 71 लाख ठगे

नोएडा (उप्र)। नोएडा में साइबर अपराधियों ने शेयर बाजार में निवेश के जरिए मुनाफा का झांसा देकर सेवानिवृत्त इंजीनियर से 71 लाख रुपये ठग लिए। पुलिस ने बताया कि साइबर अपराध थाने ने एक महिला ठग के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की।

अपर पुलिस उपायुक्त (साइबर अपराध) शैव्या गोयल ने बताया कि सेक्टर-78 के 80 वर्षीय राकेश जैन ने शिकायत दी कि एक अक्तूबर को सोशल मीडिया पर पूजा नामक महिला ने उनसे संपर्क किया और दोनों व्हाट्सएप से जुड़े। पूजा ने राकेश को शेयर बाजार में निवेश कर मुनाफा कमाने की सलाह देते हुए व्हाट्सएप ग्रुप से जोड़ा। ठगों ने जैन को फायर्स एसएनआई नामक एप डाउनलोड कराया। जैन को शुरुआती में निवेश करने पर मुनाफा हुआ। जैन ने 71 लाख रुपये दे दिए। ठगों ने जैन से कहा कि करों और ऋण का ब्याज देने के बाद ही रकम निकल सकेंगे। रुपये वापसी पर ठगों ने जैन को ग्रुप से बाहर कर दिया। पूजा का नंबर भी बंद आने लगा।

अफ्रीका से भारत आएंगे 8 चीते, टीम ने किया चीता पर्यावास का दौरा

भोपाल, एजेंसी

चीता पुनर्वास कार्यक्रम के तहत भारत में स्थानांतरित करने से पहले दक्षिणी अफ्रीका के बोत्सवाना में आठ चीतों को पकड़ा गया है। एक वरिष्ठ वन अधिकारी ने यह जानकारी दी।

चीतों को लाने का यह कार्यक्रम 2022 में शुरू हुआ था जब दशकों पहले यह जानवर भारत से विलुप्त हो गया था। अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि दो नर चीतों समेत इन चीतों को भारत भेजने से पहले एक महीने के लिए बाड़े में रखा जाएगा और उनका मेडिकल परीक्षण किया जाएगा। उन्होंने कहा, अंतर-महाद्वीपीय स्थानांतरण में कई औपचारिकताएं शामिल होती हैं। इन बातों तथा आने वाली क्रिसमस की छुट्टियों को देखते हुए, मैं यह नहीं कह सकता कि चीतों को मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले में कुनो नेशनल पार्क में कब भेजा जाएगा, जनवरी में। संपर्क करने पर, चीता परियोजना के क्षेत्र निदेशक उत्तम शर्मा ने कहा कि इस विषय को दोनों सरकारें देख रही हैं और वह इस पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि हमारे पास पहले से ही चीतों के तीसरी खेप के लिए बाड़े और सुविधाएं तैयार हैं, ये तब तैयार हुए थे जब जानवरों को नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से लाया गया था।

वर्ल्ड ब्रीफ

चीनी एयरलाइन दिल्ली से शंघाई के लिए उड़ान शुरू करेगी

बीजिंग। चीनी एयरलाइन 'चाइना ईस्टर्न' रविवार से दिल्ली-शंघाई उड़ान शुरू करेगी। इससे कुछ दिन पहले, 'इंडिगो' ने कोलकाता से ग्वांगझू के लिए उड़ान शुरू की थी। दोनों देशों के बीच लगभग पांच साल के अंतराल के बाद उड़ान सेवाएं फिर से शुरू हो रही हैं। 'चाइना ईस्टर्न' की उड़ान दिल्ली से रात आठ बजे रवाना होगी और सोमवार तड़के शंघाई पहुंचेगी। यह शंघाई से अपराह्न 12:30 बजे रवाना होगी और शाम छह बजे तक दिल्ली पहुंचेगी। यह एक दिन के अंतराल पर संचालित होगी। शंघाई में भारत के महावाणिज्य दूत प्रतीक माथुर ने कहा कि उड़ानें फिर से शुरू होने से बेहतर कनेक्टिविटी का एक नया युग शुरू होगा। और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था भारत और शंघाई के नेतृत्व वाले पूर्वी चीन क्षेत्र के व्यापारिक केंद्र के बीच लोगों के बीच मज़बूत संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।

रूसी संपत्तियों के उपयोग के लिए राजी नहीं हुआ बेल्जियम

मॉस्को। यूरोपीय संघ आयोग जब्त की गई रूस सम्पत्तियों का उपयोग करने के लिए बेल्जियम को राजी करने में विफल रहा है। बेल्जियम की समाचार एजेंसी बेल्गा की रिपोर्ट के अनुसार बेल्जियम यूरोक्लियर डिपॉजिटरी में जमा रूसी संप्रभु संपत्तियों का उपयोग यूक्रेन को अल्प और मध्यम अवधि के लिए वित्तपोषित करने के यूरोपीय संघ आयोग के निर्णय का विरोध कर रहा है। एजेंसी ने कहा है कि यूरोपीय संघ आयोग के प्रतिनिधियों ने शुक्रवार को बेल्जियम के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की थी, लेकिन जमा रूसी संपत्तियों के उपयोग के संबंध में बेल्जियम की कानूनी और वित्तीय चिंताओं को दूर करने में विफल रहे। मौजूदा समय में क्षतिपूर्ति ऋण के रूप में लगभग 140 बिलियन यूरो रूस से विचाराधीन है, जिसे यूक्रेन को संघर्ष की समाप्ति के बाद रूस से भौतिक क्षति के लिए मुआवजे लेकर चुकाया जाएगा।

रनवे लाइटें बंद होने के कारण काठमांडू हवाई अड्डा पर उड़ानें बाधित

काठमांडू। नेपाल की राजधानी काठमांडू स्थित त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शनिवार शाम रनवे की लाइटें बंद होने के कारण लगभग दो घंटे तक उड़ानों का संचालन बंद रहा। नेपाली मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार हवाई अड्डे के प्रवक्ता रिंजी शेरपा बताया कि रनवे की लाइटें शाम लगभग 5:30 बजे बंद हो गयीं। उन्होंने कहा, "रनवे के दोनों ओर की लाइटें बंद हो गयीं। कुछ ही आंशिक रूप से काम कर रही हैं, लेकिन अधिकांश बंद हो गयीं।" उन्होंने बताया कि खराबी का सही कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है। समस्या को ठीक करने के लिए हवाई अड्डे की इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग टीम को तैनात किया गया है।

भारत ब्राजील के नेतृत्व वाले वन कोष में बतौर पर्यवेक्षक शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी

- विकसित देशों से की अपनी वित्तीय प्रतिबद्धताएं पूरी करने की अपील

भारत उष्णकटिबंधीय वनों के लिए ब्राजील के नए वैश्विक कोष में पर्यवेक्षक के रूप में शामिल हो गया है और उसने विकसित देशों से कार्बन उत्सर्जन की कटौती में तेजी लाने एवं जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी वित्तीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करने का आह्वान किया है।

ब्राजील के बेलेम में आयोजित कॉप- 30 (कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज) के नेताओं के शिखर सम्मेलन में ब्राजील में भारतीय राजदूत दिनेश भाटिया ने शुक्रवार को भारत का वक्तव्य पेश करते हुए बहुपक्षवाद और पेरिस समझौते के प्रति देश की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। भाटिया ने कहा, भारत उष्णकटिबंधीय वनों के संरक्षण के लिए सतत वैश्विक कार्रवाई की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करने वाली 'ट्रॉपिकल फोरेस्ट्स फोरएवर फैसिलिटी' (टीएफएफएफ) की स्थापना में ब्राजील की पहल का स्वागत और समर्थन करता है।

टीएफएफएफ की बृहस्पतिवार को शुरुआत की गई। यह ब्राजील के नेतृत्व वाला एक वैश्विक कोष है जो उष्णकटिबंधीय देशों को वनों के संरक्षण और विस्तार के लिए पुरस्कृत करता है। इसका उद्देश्य सार्वजनिक और निजी निवेश के माध्यम से लगभग 125 अरब अमेरिकी डॉलर जुटाना है।

विकसित देशों की बेपरवाही से बढ़ी

जलवायु परिवर्तन के खतरों को काफी पहले महसूस किया जा चुका है लेकिन अफसोस की बात है कि पूरी मानवता दांव पर होने के बावजूद अब तक इसे रोकने की दिशा में काफी कम काम हुआ है। वर्ष 2016 में इतना जरूर हुआ कि पेरिस समझौते के तहत जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए एक खाका तैयार किया गया लेकिन इस समझौते पर भी पूरी तरह अमल नहीं हो पाया। दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने इस समझौते से अमेरिका के अलग होने की घोषणा कर कई नई आशंकाएं पैदा कर दी हैं। अमेरिका के साथ दूसरे विकसित देशों ने भी अपनी भूमिका के साथ न्याय नहीं किया है। अगले कुछ दिन बाद ब्राजील में होने जा रहे कॉप- 30 शिखर सम्मेलन में नए सिरे से जलवायु परिवर्तन के खतरों और उससे निपटने की रणनीति पर विचार किए जाने की उम्मीद है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण

- जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को बढ़ाता है, जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है।
- वनों की कटाई कार्बन डाइऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों को अवशोषित करने की ग्रह की क्षमता को कम करती है।
- जीवाश्म ईंधन के निष्कर्षण और उपयोग से भी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। इससे वैश्विक तापमान बढ़ता है।

पेरिस समझौता

जलवायु परिवर्तन पर कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय संधि जिसका उद्देश्य वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्वऔद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे सीमित करना है, और 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने के प्रयास करना है। यह समझौता 12 दिसंबर, 2015 को फ्रांस के पेरिस में किया गया और 4 नवंबर 2016 को लागू हुआ था। यह सभी देशों को उत्सर्जन कम करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध करता है।

विकसित देशों की भूमिका

- विकसित देश जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन उनकी प्रगति धीमी और असमान है।
- कुछ ही विकसित देश हैं जो निम्न-कार्बन विकास पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, जबकि अन्य देश बेपरवाह दिख रहे हैं। इससे चुनौती गंभीर होती जा रही है।
- जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए प्रस्तावित परियोजनाओं की लागत बढ़ रही है, इससे प्रगति धीमी हो गई है। कई देश दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं।
- विकसित देशों ने ही औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया में ऐतिहासिक रूप से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन किया है, इसलिए उन पर दोहरी जिम्मेदारी है।

संभावित दुष्परिणाम

- गर्मी की लहरों, बाढ़, सूखे और तूफानों जैसी चरम मौसम की घटनाओं की आवृति और तीव्रता में वृद्धि होने की आशंका है।
- पारिस्थितिक तंत्र को भारी नुकसान हो सकता है, जैव विविधता में कमी आएगी और कई प्रजातियां विलुप्त हो सकती हैं।
- बाढ़ और समुद्र स्तर में वृद्धि की आशंका, समुद्र के स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों में रहने वाली आबादी पर खतरा बढ़ेगा।
- सूखा-बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाएं कृषि को नुकसान पहुंचाकर खाद्य असुरक्षा और जल संकट पैदा कर सकती हैं।

इन देशों में स्पष्ट प्रभाव

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है। अमेजन वर्षावन के लिए खतरा बढ़ा है, इससे पूरे महाद्वीप को प्रभावित करने वाले सूखे की आशंका जताई जा रही है। कई और देशों में लू, बाढ़ और जंगल की आग जैसी घटनाएं बढ़ी हैं। कॉप- 30 शिखर सम्मेलन में देशों के बीच इन मुद्दों पर विचार किया जाना है।

शटडाउन: अमेरिका में हवाई यातायात चौपट, एक हजार से ज्यादा उड़ानें रद्द

संकट लंबा खिंचा तो और खराब होंगे हालात, रद्द हो सकती हैं 20% तक उड़ानें

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी इतिहास में संघीय सरकार के सबसे लंबे 'शटडाउन' के दौरान हवाई यातायात नियंत्रक कर्मियों और हवाई यातायात में कमी के कारण रोज हजारों उड़ानें रद्द की जा रही हैं। शुक्रवार को 1,000 से अधिक अमेरिकी उड़ानों को रद्द किया गया था। यह संख्या लगातार और बढ़ती जा रही है। हजारों उड़ानों में देरी भी हो रही है।

अमेरिकी उड़ान ट्रैकिंग वेबसाइट फ्लाइटअवेयर ने कहा कि शुक्रवार शाम पांच बजे तक 4,309 उड़ानें लेट थीं और 1,002 को रद्द किया गया। यह घटनाक्रम अमेरिकी परिवहन विभाग और संघीय विमानन प्रशासन (एफएए) द्वारा बुधवार को उस घोषणा के बाद हुआ है जिसमें कहा गया था कि संघीय सरकार शुक्रवार से 40 स्थानों पर हवाई यातायात में कमी लाएगी। एफएए द्वारा निर्धारित उड़ान निरस्त योजना के अनुसार, शुक्रवार को उड़ानों में चार प्रतिशत की कमी करने की तैयारी थी। अगले मंगलवार तक यह छह प्रतिशत, गुरुवार तक आठ प्रतिशत और शुक्रवार तक 10 प्रतिशत तक बढ़ाया जाना है।

एफएए प्रशासक ब्रायन बेडफोर्ड ने इस सप्ताह की शुरुआत में कहा था कि निर्धारित क्षमता में 10 प्रतिशत की कटौती हमारे वायु यातायात नियंत्रकों पर दबाव में कमी लाने के लिए उपयुक्त होगी और चूंकि हम कर्मचारियों की संख्या में निरंतर कमी देखेंगे इसलिए उन विशिष्ट बाजारों में अतिरिक्त उपाय किए जाएंगे।" परिवहन सचिव सीन डफी ने शुक्रवार को कहा कि अगर सरकारी कामबंदी लंबा चलता है तो उड़ानों में 20 प्रतिशत तक की कटौती हो सकती है।

सुप्रीम कोर्ट से ट्रंप को मिली राहत, गरीबों की खाद्य योजना की राशि अस्थाई रूप से रोकने को मंजूरी

वाशिंगटन। अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट ने ट्रंप प्रशासन को निम्न आय वर्ग के लोगों के खाद्यान लाभों के लिए अरबों डॉलर की धनराशि को अस्थाई रूप से रोकने की अनुमति दे दी है। सुप्रीम कोर्ट ने एक आपातकालीन आदेश में कहा है कि प्रशासन कम आय वाले अमेरिकियों को मिलने वाले खाद्य लाभों के लिए अरबों डॉलर की धनराशि को अस्थाई रूप से रोक सकता है। निचली अदालत ने पूरक पोषण सहायता कार्यक्रम (स्नैप) (जिसे फूड स्टैंप भी कहा जाता है) के लाभार्थियों को शुक्रवार तक पूरी राशि का भुगतान करने का फैसला दिया था, जिसके खिलाफ ट्रंप प्रशासन ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। अमेरिका में संघीय सरकार के चल रहे शटडाउन के कारण यह कार्यक्रम अधर में लटक गया है। ट्रंप प्रशासन का तर्क है कि वह इसे केवल आंशिक रूप से ही वित्तपोषित कर सकता है। सुप्रीम कोर्ट की ओ से शुक्रवार के फैसले का मतलब है कि आगे की कानूनी सुनवाई तक चार अरब डॉलर (3.04 अरब पाउंड) की राशि अस्थायी रूप से रोकी जा सकती है। अमेरिकी सरकार 38 दिनों से शटडाउन में है। यह अमेरिका के इतिहास में अब तक का सबसे लंबा शटडाउन है और इसके कारण लाखों सरकारी कर्मचारियों को कर्ज लेकर गुजारा करना पड़ रहा है।

हवाई अड्डों पर बिना वेतन काम कर रहे हैं 63 हजार कर्मचारी

अमेरिकी संघीय सरकार के शटडाउन के बाद से, लगभग 13,000 हवाई यातायात नियंत्रकों और लगभग 50,000 हवाई अड्डा सुरक्षा अधिकारियों को बिना वेतन के काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। डफी ने हाल ही में बताया कि कुछ हवाई यातायात नियंत्रक सप्ताह में छह दिन और 10 घंटे काम कर रहे हैं। कर्मचारियों की बड़ी संख्या में अवकाश पर जाने से विमानन उद्योग में कर्मचारियों की भारी कमी हो गई है, कई क्षेत्रों में उड़ानों में देरी की समस्या बढ़ गई है तथा विमानन सुरक्षा को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। 'फ्लाइटअवेयर' के आंकड़ों से पता चलता है कि देश में हर दिन हज़ारों उड़ानें देरी से चल रही हैं। गुरुवार को अमेरिका में आने वाली या अमेरिका से जाने वाली 7,000 से ज्यादा उड़ानों में देरी हुई थी।

लाखों लोग प्रभावित

बताया जा रहा है कि शटडाउन से रोजाना 1,800 उड़ानें रद्द हो सकती हैं। इससे करीब 2.68 लाख लोग प्रभावित होंगे। इससे थैंक्स गिविंग वीक की छुट्टियों से पहले यात्रा करने वाले लोगों की चिंता बढ़ गई हैं। रॉयटर्स की रिपोर्ट्स के मुताबिक, कई बड़े एयरलाइंस पहले ही उड़ानें कैंसिल कर चुके हैं। इसमें रीजनल और मुख्य उड़ानें शामिल हैं।

अमेरिका ने रूसी तेल गैस खरीदने पर हंगरी को प्रतिबंधों से छूट दी

वाशिंगटन। अमेरिका रूस से तेल और गैस खरीदने को लेकर हंगरी पर एक साल तक कोई प्रतिबंध नहीं लगाएगा। बीबीसी ने व्हाइट हाउस के एक अधिकारी के हवाले से अपनी रिपोर्ट में बताया है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हंगरी को रूसी तेल और गैस की खरीद को लेकर एक साल के लिए प्रतिबंधों से छूट दे दी है।

ट्रंप ने कहा था कि वह हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओर्बन को छूट देने के मुद्दे पर विचार करेंगे। ओर्बन को ट्रंप का करीबी माना जाता है, लेकिन रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान हंगरी ने रूस के साथ भी अच्छे संबंध विकसित किए हैं। ट्रंप ने शुक्रवार को ओर्बन से साथ व्हाइट हाउस में बैठक के दौरान कहा था कि हंगरी को छूट देने के पर विचार किया जा रहा है क्योंकि उसके लिए अन्य क्षेत्रों से तेल और गैस प्राप्त करना बहुत मुश्किल है। एक अमेरिकी अधिकारी के मुताबिक यह छूट सिर्फ एक साल के लिए है।

ट्रंप ने जी-20 सम्मेलन के बहिष्कार की घोषणा की

वाशिंगटन, एजेंसी

- दक्षिण अफ्रीका में श्वेत किसानों के साथ भेदभाव का आरोप लगाया

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दक्षिण अफ्रीका में श्वेत किसानों के साथ दुर्व्यवहार किए जाने का हवाला देते हुए कहा कि इस वर्ष दक्षिण अफ्रीका में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन में अमेरिका सरकार का कोई भी अधिकारी भाग नहीं लेगा।

ट्रंप पहले ही घोषणा कर चुके हैं कि वह दुनिया की अग्रणी और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के राष्ट्राध्यक्षों के वार्षिक शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे। ट्रंप की जगह अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे डी वेंस को इसमें शामिल होना था लेकिन वेंस की योजनाओं से परिचित एक अधिकारी ने अपनी पहचान गोपनीय रखे जाने की शर्त पर बताया कि वेंस अब शिखर सम्मेलन के लिए वहां नहीं जाएंगे। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच पर लिखा, यह बेहद शर्मनाक है कि जी-20 दक्षिण अफ्रीका में आयोजित होगा। ट्रंप ने अपने 'पोस्ट' में श्वेत अफ्रीकी लोगों के साथ हिंसा समेत दुर्व्यवहार किए जाने का हवाला दिया।

ट्रंप प्रशासन दक्षिण अफ्रीकी सरकार पर अल्पसंख्यक श्वेत अफ्रीकी किसानों को सताने और उन पर हमले करने की अनुमति देने का आरोप लंबे समय से लगाता रहा है। अमेरिका में सालाना आने वाले शरणार्थियों की संख्या को 7,500 तक सीमित करते हुए प्रशासन ने संकेत दिया कि अधिकतर शरणार्थी वे श्वेत दक्षिण अफ्रीकी होंगे जिन्हें अपने देश में भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ा। दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने कहा है कि वह भेदभाव के आरोपों से आश्चर्यचकित है देश में श्वेतों का जीवन स्तर अश्वेत लोगों की तुलना में सामान्यतः बेहतर है।

ब्रिटिश जासूसों ने निज्जर हत्याकांड की कनाडा को सौंपी थी खुफिया जानकारी

लंदन, एजेंसी

- इसी रिपोर्ट के आधार पर कनाडा ने किया था निज्जर की हत्या में भारत का हाथ होने का दावा

इस सप्ताह जारी एक नए वृत्तचित्र में दावा किया गया है कि ब्रिटिश खुफिया एजेंसी की ओर से 'इंटरसेप्ट' की गई फोन कॉल की मदद से ही कनाडाई अधिकारियों ने जून 2023 में हरदीप सिंह निज्जर की हत्या और भारत के बीच कथित संबंध का पता लगाया। इन फोन कॉल्स में कथित तौर पर तीन लक्ष्यों पर चर्चा की जा रही थी।

'ब्लूमबर्ग ओरिजिनल्स' के वृत्तचित्र 'इनसाइड द डेथ्स दैट रॉक्ड इंडियाज रिलेशंस विद द वेस्ट' में यह दावा किया गया है। निज्जर कनाडाई सिख था जिसे भारत ने 2020 में खालिस्तानी आतंकवाद के लिए आतंकवादी घोषित किया था। वह उन नामों में शामिल था जिनकी जानकारी ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच 'फाइव आइज' खुफिया साझेदारी समझौते के तहत कनाडाई अधिकारियों को सौंपी गई थी। वीडियो वृत्तचित्र में दावा किया गया है, जुलाई 2023 के अंत में निज्जर हत्या मामले की जांच में एक महत्वपूर्ण प्रगति तब हुई थी, जब ब्रिटेन को संबंधित जानकारी प्राप्त हुई थी। दावा किया गया है कि ब्रिटिश खुफिया जानकारी कड़े नियमों के तहत साझा की गई थी और उसे हाथ से कनाडा की राजधानी ओटावा पहुंचाया गया था तथा किसी भी इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम पर अपलोड नहीं किया गया। उसे देखने की अनुमति भी केवल लंदन द्वारा पूर्वस्वीकृत चुनिंदा कनाडाई अफसरों को ही दी गई थी।

दावा किया गया है, यह फाइल ब्रिटिश खुफिया एजेंसी द्वारा उन व्यक्तियों के बीच की बातचीत का सारांश थी, जिनके बारे में मानना है कि वे भारत सरकार की ओर से काम कर रहे थे। इसमें आरोप लगाया गया है, उन्होंने तीन लक्ष्यों पर चर्चा की थी, हरदीप निज्जर, अवतार सिंह खंडा और गुरपतवंत सिंह पन्नू। बाद में इस बारे में बातचीत हुई कि निज्जर को कैसे सफलतापूर्वक खत्म किया गया। खालिस्तान समर्थक ब्रिटिश सिख खंडा की जून 2023 में ब्रिटेन के बर्मिंघम शहर के एक अस्पताल में मौत हो गई थी। वह रक्त कैंसर से पीड़ित था और ब्रिटेन में कुछ समूहों के आरोपों के बावजूद, ब्रिटिश अधिकारियों ने कहा कि उसकी मृत्यु से जुड़ी संदिग्ध परिस्थितियां नहीं थीं।

कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने 2023 में अपनी संसद में बयान दिया था कि उनके सुरक्षा बल ब्रिटिश कोलंबिया में निज्जर की हत्या से भारतीय सरकारी एजेंट को जोड़ने वाले विश्वसनीय आरोपों की सक्रिय जांच कर रहे हैं। अक्टूबर 2024 में, भारत ने अपने उच्चायुक्त और पांच अन्य राजनयिकों को वापस बुला लिया और इतनी ही संख्या में कनाडाई राजनयिकों को निष्कासित भी कर दिया। इस वर्ष अप्रैल में संसदीय चुनाव में कार्नी की जीत के बाद संबंध फिर सुधारने की प्रक्रिया शुरू हुई थी।

ट्रंप ने किया ओहायो के गवर्नर पद के लिए रामास्वामी का समर्थन

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 2026 में ओहायो के गवर्नर पद के लिए विवेक रामास्वामी का समर्थन किया है। उन्होंने रामास्वामी को पूर्ण समर्थन देते हुए उन्हें कुछ खास बताया और ओहायो की महान राज्य के रूप में प्रशंसा की।

बायोटेक उद्यमी और पूर्व राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार 38 वर्षीय रामास्वामी ने राष्ट्रपति ट्रंप को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देते हुए सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, धन्यवाद, राष्ट्रपति ट्रंप! आइए ओहायो को पहले से कहीं बेहतर बनाएं। राष्ट्रपति ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर लिखा कि अगर रामास्वामी चुने जाते हैं तो वे एक महान गवर्नर साबित होंगे। विवेक महान राज्य ओहायो के गवर्नर पद के लिए चुनाव लड़ रहे हैं, एक ऐसा राज्य जिसे मैं प्यार करता हूं और जहां मैंने 2016, 2020 और 2024 में तीन बार बड़ी जीत हासिल की है! मैं विवेक को अच्छी तरह जानता हूं, उनके खिलाफ प्रतिस्पर्धा की है, और वह कुछ खास हैं।

यूक्रेन की आवासीय इमारत पर रूस का ड्रोन हमला, चार लोगों की मौत

कीव, एजेंसी

पूर्वी यूक्रेन में शनिवार तड़के एक रूसी ड्रोन एक टॉवर ब्लॉक से टकरा गया, जिस समय कई लोग सो रहे थे। इस हमले में तीन लोगों की मौत हो गई और 12 लोग घायल हो गए। यूक्रेन के चौथे सबसे बड़े शहर दनिप्रो में यह हमला हुआ।

यह हमला देश की बिजली अवसंरचना पर रूसी मिसाइल और ड्रोन हमलों के तहत किया गया। इसमें खारकीव में एक बिजली कंपनी के एक कर्मचारी की भी मृत्यु हो गई। पूर्वी यूक्रेन में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण शहर पोकरोव्स्क के लिए लड़ाई महत्वपूर्ण स्तर पर पहुंच गई है।

कीव और मॉस्को दोनों ही अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि वे युद्ध के मैदान में जीत हासिल कर सकते हैं। रूस ने कुल 458 ड्रोन और 45 मिसाइलें दागीं, जिनमें 32 बैलिस्टिक मिसाइलें शामिल हैं। यूक्रेनी वायु सेना ने बताया कि उसने 406 ड्रोन और नौ मिसाइलों को मार गिराया और निष्क्रिय कर दिया। साथ ही, 25 स्थानों पर हमले किए गए।

पाकिस्तान ने रक्षा बल प्रमुख का नया पद सृजित करने की तैयारी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने शनिवार को तीनों सेनाओं के बीच बेहतर समन्वय और एकीकृत कमान सुनिश्चित करने के लिए रक्षा बल प्रमुख का नया पद सृजित करने के लिए संवैधानिक संशोधन पेश किया। संसद में प्रस्तुत 27वें संविधान संशोधन विधेयक में संविधान के अनुच्छेद 243 में परिवर्तन का प्रस्ताव है।

यह अनुच्छेद अन्य मुद्दों के अलावा सशस्त्र बलों से संबंधित है। संशोधन विधेयक के तहत राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री की सलाह पर सेना प्रमुख और रक्षा बल प्रमुख की नियुक्ति करेंगे। इसमें कहा गया है कि थलसेना अध्यक्ष रक्षा बलों के प्रमुख भी होंगे। वह प्रधानमंत्री के परामर्श से 'नेशनल स्ट्रेटजिक कमांड' के प्रमुख की नियुक्ति करेंगे। 'नेशनल स्ट्रेटजिक कमांड' का प्रमुख पाकिस्तानी सेना से होगा। सरकार सशस्त्र बलों के व्यक्तियों को फील्ड मार्शल, मार्शल ऑफ द एयर फोर्स और एडमिरल ऑफ द फ्लीट के पदों पर पदोन्नत कर सकेगी।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति: 9 नवंबर, रविवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-कृष्ण पक्ष, पंचमी 10 नवंबर 01.54 तक तत्पश्चात षष्ठी।

आज का पंचांग

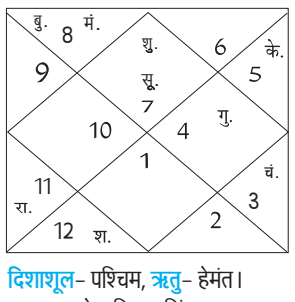

दिशाशूल- पश्चिम, ऋतु- हेमंत। चन्द्रबल- मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, मकर।

ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद। नक्षत्र- आर्द्रा 20.04 तक तत्पश्चात पुनर्वसु।

मेष आज लोग आपके ऊपर पूर्ण विश्वास रखेंगे। विदेश में शिक्षा ले रहे विद्यार्थियों को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आप कुछ दिनों की छुट्टियों के विषय में योजना बना सकते हैं। ऑनलाइन में लेन-देन में बड़ा लाभ मिल सकता है।

वृष आज दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप न करें। अनुभवी व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना लाभकारी होगा। व्यर्थ की गतिविधियों में समय नष्ट होगा। महत्वपूर्ण अवसर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसीलिये लापरवाही भारी पड़ सकती है।

मिथुन आज आप अत्यंत आनंदित रहेंगे। कारोबार में सबकुछ आपके अनुसार ही होता प्रतीत होगा। इससे आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। आपकी कार्य-कुशलता में वृद्धि होगी। परिवार के साथ अच्छा समय बिताएंगे।

कर्क आज का दिन यात्राओं के लिए सुखद नहीं रहेगा। कोई जरूरी निर्णय अचानक लेना पड़ेगा। सहयोगी आपसे किसी बात को लेकर असहमत हो सकते हैं। दांपत्य संबंधों के लिए समय अवश्य निकालें। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है।

सिंह आज दोपहर के बाद शुभ समाचार मिलने की संभावना है। कारोबार में उत्तम धन लाभ हो सकता है। रोगियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। धैर्यपूर्वक किए गए कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में बड़ी साझेदारी हो सकती है।

कन्या आज कारोबारी लक्ष्य समय पर पूर्ण हो जाएंगे। नए घर या जमीन में निवेश सकते हैं। संतान की उन्नति से गौरवान्वित महसूस करेंगे। जीवनसाथी से सलाह लेना आपके लिए हितकर होगा। दूसरों की बातों को अधिक तूल न दें।

तुला आज अनावश्यक खर्चे नियंत्रित कर पाएंगे। आपको पड़ोसियों के प्रति अपना व्यवहार अच्छा रखना चाहिए। आपके काम रुक-रुक कर होंगे। शत्रु पक्ष अचानक से आपके विरुद्ध सक्रिय हो सकता है। काल्पनिक विचारों से दूरी बनाकर रखें।

वृश्चिक आज अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को किसी से शेयर न करें। आपको अपने मान-सम्मान की चिंता रहेगी। रक्तचाप की समस्या होने की आशंका है। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी, लेकिन आप किसी कारण इससे प्रसन्न नहीं रहेंगे।

धनु आज इस समय सारी परिस्थितियां आपके अनुकूल हैं। आपके एक अच्छे मित्र की भूमिका निभाएगा। अपना मन प्रत्येक स्थिति में शांत रखें। जीवनसाथी घर के लोग आपसे अत्यंत प्रसन्न रहेंगे। अपनी जिम्मेदारियों के प्रति निष्ठावान रहेंगे।

मकर आज किसी बड़ी समस्या का समाधान होने से निश्चिंत होंगे। यदि मन में किसी प्रकार का कोई भय था, तो वह दूर हो जाएगा। धार्मिक यात्रा की योजना बना सकते हैं। जीवनसाथी के प्रति मन में सम्मान और आदर का भाव उत्पन्न होगा।

कुंभ आज गृह निर्माण के कार्य तेजी से पूर्ण होंगे। प्रेम संबंधी मामलों में निराशा हाथ लग सकती है। कला के क्षेत्र से जुड़े लोगों को सम्मान प्राप्त हो सकता है। मित्रों के परामर्श पर गंभीरता से ध्यान दें। संतान को लेकर कुछ परेशानी होने की आशंका है।

मीन आज निजी रिश्तों को लेकर गंभीर रहें। काम न बनने के कारण मन निराश हो सकता है। इस समय नया कार्य आरंभ करना उचित नहीं है। आत्मविश्वास में कमी महसूस कर सकते हैं। योग और प्राणायाम करना उत्तम होगा।

सुडोकू-155

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

			1			3	4	
4	5							
	4	5					7	8
9								5
	1	7					9	6
							6	9
	6	2	3					

सुडोकू - 154 का हल

8	1	7	4	6	5	2	9	3
4	2	5	1	9	3	6	7	8
6	3	9	2	7	8	1	5	4
5	9	6	3	2	1	8	4	7
3	7	4	6	8	9	5	1	2
1	8	2	7	5	4	3	6	9
2	5	8	9	4	6	7	3	1
9	6	1	8	3	7	4	2	5
7	4	3	5	1	2	9	8	6

ऋचा घोष ने राज्य को गौरवान्वित किया है। मुझे उम्मीद है कि वह अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखेंगी और एक दिन भारतीय महिला टीम की कप्तान बनेंगी। ऋचा को सम्मानित करने से हमें अति प्रसन्नता हो रही है।

-सौरव गांगुली

स्टेडियम

हल्द्वानी, रविवार 9 नवंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

डब्ल्यूटीए टेनिस फाइनल्स के सेमीफाइनल में बेलारूस की एरिना सबालेंका संयुक्त राज्य अमेरिका की अमांडा अनिसिमोवा के खिलाफ रिटर्न करती हुईं। एजेंसी

सबालेंका और रिबाकिना में होगा खिताबी मुकाबला

रियाद (सऊदी अरब)। विश्व की नंबर एक खिलाड़ी एरिना सबालेंका ने सेमीफाइनल में अमांडा अनिसिमोवा को 6-3, 3-6, 6-3 से हराकर तीन साल में पहली बार डब्ल्यूटीए फाइनल्स के फाइनल में जगह बनाई। सबालेंका खिताबी मुकाबले में एलेना रयबाकिना से भिड़ेंगी, जिन्होंने पहली बार इस टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया है। विश्व में छठे नंबर की खिलाड़ी रिबाकिना ने एक अन्य सेमीफाइनल में 15 ऐस के दम पर विश्व की पांचवें नंबर की खिलाड़ी जेसिका पेगुला को 4-6, 6-4, 6-3 से हराया।

टोक्यो बधिर ओलंपिक के लिए दल की घोषणा

नई दिल्ली। भारत 15 नवंबर से 26 दिसंबर तक टोक्यो में होने वाले डेफलिम्पिक्स (बधिर ओलंपिक) के लिए 73 खिलाड़ियों सहित 111 सदस्यों का अपना अब तक का सबसे बड़ा दल भेजेगा। भारतीय खिलाड़ी 11 खेल एथलेटिक्स, बैडमिंटन, गोल्फ, जूडो, कराटे, निशानेबाजी, तैराकी, टेबल टेनिस, ताइक्वांडो, कुश्ती और टेनिस में भाग लेंगे। खेल मंत्रालय ने भारतीय दल को मंजूरी दे दी है। इसका खर्चा सरकार वहन करेगी।

रविंदर बने फ्री पिस्टल विश्व चैंपियन

नई दिल्ली। भारतीय निशानेबाजी टीम को अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) विश्व चैम्पियनशिप राइफल/पिस्टल के पहले ही दिन शानदार शुरुआत मिली, जब रविंदर सिंह ने पुरुषों की 50 मीटर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर भारत को पहला गोल्ड दिलाया। इसके बाद दो बार की ओलंपियन और एशियाई चैम्पियन एलावेनिल वलारिवान ने महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल फाइनल में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया।

राहुल वी एस भारत के 91वें ग्रैंडमास्टर बने

नई दिल्ली। भारतीय शतरंज खिलाड़ी राहुल वीएस छठी आसियान व्यक्तिगत चैंपियनशिप को एक राउंड शेष रहते हुए जीतकर देश के 91वें ग्रैंडमास्टर बन गये हैं। यह 21 वर्षीय खिलाड़ी एशियाई जूनियर चैंपियन भी है। वह 2021 में अंतरराष्ट्रीय मास्टर बने थे। अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (एआईसीएफ) के अध्यक्ष नितिन नारंग ने एक्स पर लिखा राहुल वी एस को एक राउंड शेष रहते आसियान व्यक्तिगत चैंपियनशिप जीतने और इस प्रक्रिया में देश के 91वें ग्रैंडमास्टर बनने पर हार्दिक बधाई। आपको आगे भी निरंतर सफलता हासिल करने के लिए शुभकामनाएं।

भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 सीरीज जीती

बारिश के कारण पांचवां मुकाबला रद्द, मैच रोके जाने तक टीम इंडिया ने बना लिए थे बगैर विकेट खोए 52 रन

ब्रिस्बेन, एजेंसी

भारत ने शनिवार को यहां बारिश के कारण पांचवां और अंतिम मैच रद्द होने के बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैच की टी-20 सीरीज 2-1 से अपने नाम कर ली।

गाबा मैदान पर बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद भारत ने सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा (13 गेंद में नाबाद 23 रन) और शुभमन गिल (16 गेंद में नाबाद 29 रन) के साथ आक्रामक शुरुआत की। लेकिन बिजली चमकने से खेल रुक गया, तब भारत ने 4.5 ओवर में बिना किसी नुकसान के 52 रन बना लिए थे। इसके तुरंत बाद ही भारी बारिश आ गई जिससे मैच रद्द करना पड़ा। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया के पास खतरनाक अभिषेक को जल्दी आउट करने के मौके थे लेकिन वह इसका फायदा उठाने में नाकाम रहा। ग्लेन मैक्सवेल ने शुरुआती ओवर में बाएं हाथ के बल्लेबाज का एक आसान कैच छोड़ दिया, जबकि चौथे ओवर में जब अभिषेक 11 रन पर थे तब बेन ड्वारशुइस ने उनका कैच टपका दिया। तीन गेंद बाद अभिषेक ने मिडविकेट पर एक जोरदार छक्का लगाकर भारतीय प्रशंसकों को रोमांचित कर दिया। सीरीज का पहला टी-20 मैच भी बारिश की भेंट चढ़ गया था जबकि ऑस्ट्रेलिया ने दूसरा मैच चार विकेट से जीता था। भारत ने तीसरे और चौथे मैच में क्रमशः पांच विकेट और 48 रन से जीत हासिल करते हुए जबरदस्त वापसी की।

आस्ट्रेलियाई कप्तान मार्श भारतीय टीम से हुए प्रभावित

ऑस्ट्रेलियाई कप्तान मिचेल मार्श ने महत्वपूर्ण मौकों पर भारत के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को स्वीकार करते हुए अपनी टीम की गहराई और अनुकूलन क्षमता की प्रशंसा की। मार्श ने कहा मुझे याद नहीं कि पिछली बार जब हम खेले हों तो बारिश ने इतनी बार खलल डाला हो। वैसे यह शानदार सीरीज थी। भारत ने निश्चित रूप से अहम समय में मैच जीते, उन्हें बधाई। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान ने कहा कि इस दौरे से उनकी टीम को अगले साल होने वाले टी-20 विश्व कप से पहले अपनी बेंच स्ट्रेंथ और संयोजन को परखने में मदद मिली।

मैंने ऑस्ट्रेलियाई परिस्थितियों के लिए खुद को अच्छी तरह तैयार किया : अभिषेक

ब्रिस्बेन : अभिषेक शर्मा ने ऑस्ट्रेलियाई चुनौती का सामना करने के लिए महीनों तक 'मानसिक और तकनीकी रूप से' खुद को तैयार किया जिसका नतीजा भारत के ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2-1 से सीरीज जीतने के बाद इस युवा सलामी बल्लेबाज को 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' के पुरस्कार से नवाजा गया। शीर्ष क्रम में अपनी आक्रामक बल्लेबाजी से प्रभावित करने वाले 24 वर्षीय इस खिलाड़ी ने कहा कि वह लंबे समय से उछाल भरी ऑस्ट्रेलियाई पिचों और उच्च-स्तरीय तेज गेंदबाजी आक्रमण के खिलाफ खुद को परखने के लिए उत्सुक थे। अभिषेक ने पांच मैच में 163 रन बनाए जबकि दो मैच बारिश के कारण रद्द हो गए थे। उन्होंने पांचवें और अंतिम टी-20 मैच के बारिश के कारण रद्द होने के बाद कहा मैं इस टूर्नामेंट का इंतजार कर रहा था। जब मुझे पता चला कि हम टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों के लिए ऑस्ट्रेलिया जा रहे हैं तो मैं बहुत उत्साहित था। उन्होंने कहा अपने पूरे करियर में मैंने देखा है कि ऑस्ट्रेलिया बल्लेबाजी के लिए बहुत अनुकूल है और मैं खुद को इस तरह के गेंदबाजों और परिस्थितियों के लिए तैयार करना चाहता था। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने कहा कि उनकी तैयारी विश्वस्तरीय तेज गेंदबाजों का सामना करने और ऑस्ट्रेलियाई पिचों के हिसाब से अपने खेल को ढालने पर केंद्रित थी। जब उनसे पूछा गया कि क्या पिछले तीन टी20 मैच में जोश हेजलवुड की अनुपस्थिति से भारतीय खिलाड़ियों के लिए चीजें थोड़ी आसान हो गई थीं तो अभिषेक ने कहा अगर आपको अच्छा क्रिकेट खेलना है और अपनी टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करना है तो आपको विश्वस्तरीय गेंदबाजों का सामना करना होगा। मैं इस तरह के गेंदबाजों के लिए अभ्यास कर रहा था क्योंकि इसी तरह आप एक खिलाड़ी के रूप में बेहतर होते हैं। उनकी बल्लेबाजी के अति-आक्रामक रवैये के बारे में पूछने पर अभिषेक ने कहा कि भारतीय टीम प्रबंधन को उन्हें अपना स्वाभाविक खेल खेलने की आजादी दी।

अभिषेक शर्मा को 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' के रूप में सम्मानित किया गया। एजेंसी

कप्तान ने गेंदबाजों की खूब प्रशंसा की

भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने अपने खिलाड़ियों विशेषकर गेंदबाजों की खूब प्रशंसा की। उन्होंने कहा जिस तरह से सभी ने योगदान दिया और जिस तरह से हमने 0-1 से पिछड़ने के बाद वापसी की, उसका श्रेय सभी खिलाड़ियों को जाता है। यह बल्ले, गेंद और मैदान में भी अच्छी श्रृंखला रही। तेज गेंदबाज और स्पिनर, दोनों ही अपना काम बखूबी जानते हैं। सूर्यकुमार ने कहा बुमराह और अर्शदीप की जोड़ी बेहद खतरनाक है। और फिर अक्षर और वरुण भी अच्छा कर रहे हैं। और वाशी (वाशिंगटन सुंदर) ने आखिरी मैच में अच्छा प्रदर्शन किया। अब वे काफी टी20 क्रिकेट खेल चुके हैं जिससे उन्हें फायदा मिल रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि आगामी श्रृंखला भारत को अगले साल घरेलू टी20 विश्व कप के लिए अच्छी तरह तैयार करेगी। सूर्यकुमार ने कहा यह एक अच्छा सरदर्द है, कई खिलाड़ी वास्तव में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। तीन मजबूत टीम ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के साथ खेलना विश्व कप से पहले एक शानदार तैयारी होगी। उन्होंने कहा कि घरेलू मैदान पर विश्व कप खेलना चुनौतीपूर्ण, लेकिन रोमांचक होगा। सूर्यकुमार ने कहामैंने हाल में देखा कि महिला टीम ने भारत में विश्व कप जीता, दर्शकों का अविश्वसनीय समर्थन मिला। यह एक अच्छी चुनौती और रोमांचक टूर्नामेंट होगा, लेकिन यह अब भी बहुत दूर है। दो और श्रृंखला बाकी हैं।

माधव और आर्यन के नाबाद शतक से उत्तर प्रदेश मजबूत

रणजी ट्रॉफी

- नागालैंड के खिलाफ मुकाबले के पहले दिन एक विकेट पर बनाए 301 रन
- कौशिक 120 और जुयाल 118 रन बनाकर क्रीज पर डटे, आज बन सकता है बड़ा स्कोर

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। शीर्ष बल्लेबाज माधव कौशिक और विकेट कीपर आर्यन जुयाल के नाबाद शतकों के दम पर मेजबान उत्तर प्रदेश ने नागालैंड के खिलाफ अपनी स्थिति मजबूत कर ली है।

शनिवार को ग्रीनपार्क मैदान में खेले गए रणजी मुकाबले के पहले दिन उप्र ने नागालैंड के खिलाफ पहले दिन 90 ओवर में एक विकेट पर 301 रन बनाए। विकेट पर इस समय माधव 120 और आर्यन 118 रन बनाकर खेल रहे हैं। उप्र का एकमात्र विकेट अभिषेक गोस्वामी (55) का गिरा।

सीजन में तीन मुकाबलों में सात अंक लेकर एलीट ग्रुप-ए में पांचवें स्थान पर चल रही उत्तर प्रदेश की टीम शनिवार को नागालैंड के खिलाफ बड़ी जीत हासिल करने के इरादे से उतरी। कप्तान करन शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया। ओपनर अभिषेक गोस्वामी और माधव कौशिक ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए पहले विकेट के लिए 118 रनों की साझेदारी की। 37.5 ओवर में इम्लीवति ने अभिषेक को क्लीन बोल्ड कर टीम को पहली सफलता दिलायी। अभिषेक 100 गेंदों में 10 चौकों की मदद से 55 रन बनाकर आउट हुए। माधव ने पहले पायदान पर उतरे आर्यन के साथ मिलकर नागालैंड के गेंदबाजों का कड़ा इम्तिहान लेते हुए टीम को बड़े स्कोर की राह दिखायी। दोनों बल्लेबाजो ने दिन का खेल खत्म होने तक बिना किसी अन्य नुकसान के 183 रनों की नाबाद साझेदारी करते हुए टीम का स्कोर 301 रनों तक पहुंचा दिया है।

रन के लिए दौड़ते माधव कौशिक व आर्यन जुयाल। अमृत विचार

विश्व शतरंज में हरिकृष्णा व प्रणव अंतिम 32 में पहुंचे

पणजी : भारतीय ग्रैंडमास्टर पी हरिकृष्णा और वी प्रणव ने शनिवार को यहां दूसरे राउंड की दूसरी बाजी के अंत में क्रमशः बेल्जियम के डेनियल दर्धा और लिथुआनिया के टिटास स्ट्रेमाविसियस को समान 1.5-0.5 अंकों से हराकर विश्व शतरंज कप के अंतिम 32 चरण में जगह बना ली।

टूर्नामेंट में अब तक शानदार प्रदर्शन करने वाले हरिकृष्णा कट बनाने वाले पहले भारतीय बन गए क्योंकि दर्धा शुरुआती गेम में सफेद मोहरों से खेलने के बावजूद प्रभावित नहीं कर सके। प्रणव ने भी काले मोहरों से स्ट्रेमाविसियस को बराबरी पर रोकने के बाद सफेद मोहरों से जीत दर्ज की। दिप्तयान घोष हालांकि अर्मेनिया के गैब्रियल सर्गिसियन के खिलाफ अपनी लय खोकर प्रतियोगिता से बाहर हो गए। पिछले दौर में रूस के इयान नेपोमनियाची को हरने वाले इस खिलाड़ी ने पहले गेम में सफेद मोहरों से आसान ड्रॉ हासिल करने के बाद दिप्तयान दूसरे गेम में अपनी लय नहीं पकड़ पाए और 0.5-1.5 से हार गए। बेहतर रैंकिंग वाले भारतीय खिलाड़ियों में अर्जुन एरिगैसी और प्रज्ञानानंदा ने भी क्रमशः उज्बेकिस्तान के शमसिद्दीन और आर्मेनिया के रॉबर्ट को हराकर अंतिम 32 में जगह बनाई।

ध्रुव जुरेल ने भारत ए के लिए जड़ा लगातार दूसरा शतक

बेंगलुरु, एजेंसी

विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल ने शनिवार को यहां चार दिवसीय मैच के तीसरे दिन दक्षिण अफ्रीका 'ए' के खिलाफ दूसरी पारी में लगातार दूसरा शतक जड़कर भारतीय टेस्ट एकादश में अपनी जगह पक्की करने की तरफ कदम बढ़ाने के साथ भारत 'ए' की स्थिति मजबूत कर दी। जुरेल (नाबाद 127) ने छठे विकेट के लिए हर्ष दुबे (84) के साथ 184 रनों की साझेदारी की जिससे भारत ए ने अपनी दूसरी पारी सात विकेट पर 382 रन बनाकर घोषित कर दी जिससे टीम की कुल बढ़त 416 रन की गई।

दक्षिण अफ्रीका ए ने स्टंप्स के समय बिना किसी नुकसान के 25 रन बना लिए थे। उसे जीत के लिए और 392 रनों की और जरूरत है। स्टंप्स के समय लेसेगो सेनोक्वेन (नौ) और जॉर्डन हरमन (15) क्रीज पर थे। वेस्टइंडीज के खिलाफ भारत की पिछली टेस्ट श्रृंखला में नियमित विकेटकीपर ऋषभ पंत के चोटिल होने के कारण जुरेल ने टीम में इस भूमिका को निभाते हुए दूसरे टेस्ट में शतक जड़ा था। पंत के चोट से उबरने के बाद राष्ट्रीय टीम में वापसी के बावजूद इस बात की काफी संभावना है कि दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ दो शतक जड़ने वाले जुरेल अंतिम एकादश में अपनी जगह बरकरार रखे। उन्होंने पहली पारी में नाबाद 132 रन बनाये थे। जुरेल ने पहली पारी की तरह दूसरी पारी में भी दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों को कोई मौका नहीं दिया।

जुरेल ने दमदार रक्षात्मक खेल के दम पर एक बार फिर दक्षिण अफ्रीका ए के गेंदबाजों को कोई मौका नहीं दिया।

शतक लगाने के बाद जश्न मनाते ध्रुव जुरेल। एजेंसी

- टेस्ट टीम के लिए मजबूत किया अपना दावा
- दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ 416 रनों की बढ़त

पंत चोट के बावजूद बल्लेबाजी के लिए लौटे

बेंगलुरु : भारत 'ए' के कप्तान ऋषभ पंत ने शनिवार को दक्षिण अफ्रीका 'ए' के खिलाफ चार दिवसीय मैच के तीसरे दिन रिटायर्ड हर्ट होने के बाद बल्लेबाजी के लिए दोबारा मैदान पर उतरते ही चोट की चिंताओं को दूर कर दिया। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज शेपो मोराकी की गेंद पर तीन बार चोट लगने के बाद पंत को एहतियात के तौर पर मैदान से बाहर ले जाया गया था। पंत जब रिटायर हर्ट हुए तब वह 22 गेंद में 17 रन बनाकर बल्लेबाजी कर रहे थे।

ऋचा बंग भूषण पुरस्कार से सम्मानित

कोलकाता, एजेंसी

विश्व कप विजेता विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋचा घोष को शनिवार को ईडन गार्डन्स में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया जिसमें पश्चिम बंगाल सरकार ने उन्हें बंग भूषण पुरस्कार, पुलिस उपाधीक्षक पद और सोने की एक चेन भेंट की। ईडन गार्डन्स में इस समारोह का आयोजन करने वाले बंगाल क्रिकेट संघ (सीएबी) ने उन्हें 34 लाख रुपये की राशि भी प्रदान की जो विश्व कप फाइनल में उनके द्वारा बनाए गए प्रत्येक रन के लिए एक एक लाख रुपये के हिसाब से था।

इस तरह ऋचा बंगाल की पहली विश्व कप विजेता क्रिकेटर बनीं। 2003 के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से हारने के बाद सौरव गांगुली भारतीय कप्तान के रूप में यह खिताब जीतने से चूक गए थे।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भारतीय क्रिकेट टीम की सदस्य ऋचा घोष को बंग भूषण पुरस्कार प्रदान किया। एजेंसी

ऋचा ने भारत की खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाई थी। सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ फाइनल में 24 गेंद में तीन चौके और दो छक्कों की मदद से 34 रन की पारी खेली। सीएबी ने उन्हें एक सुनहरा बल्ला और गेंद भेंट की जबकि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रशंसकों और गणमान्य व्यक्तियों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच व्यक्तिगत रूप से बंग भूषण पदक, डीएसपी नियुक्ति पत्र और सोने की चेन सौंपी। बंग भूषण और बंग विभूषण पुरस्कार पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा स्थापित सर्वोच्च नागरिक सम्मान हैं जो कला, संस्कृति, साहित्य, लोक प्रशासन और सार्वजनिक सेवा सहित मानव प्रयास के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों को प्रदान किए जाते हैं।

महिला क्रिकेटरों का ब्रांड मूल्य बढ़ा

नई दिल्ली : भारत को महिला वनडे विश्व कप में पहली बार जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाली खिलाड़ियों का इसके बाद ब्रांड मूल्य भी आसमान छूने लग गया है और उनके पास पैसा कमाने का यह सबसे अच्छा मौका है।

स्मृति मंधाना, शैफाली वर्मा और जेमिमा रोड्रिग्स जैसी खिलाड़ियों के ब्रांड मूल्य में 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि होने की उम्मीद है, जो उन्हें संभालने वाली प्रबंधन फर्मों के अनुसार व्यक्तिगत रूप से एक करोड़ से अधिक के विज्ञापन सौदों में तब्दील हो जाएगा। इन खिलाड़ियों को अपने विज्ञापन का चेहरा बनाने के लिए कतार में लगे ब्रांडों में ऑटोमोबाइल कंपनियों से लेकर बैंक और एफएमसीजी तक शामिल हो सकते हैं।

गतिरोध हटा | आईसीसी ने मोहसिन नकवी और बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया में कराई बात

एशिया कप ट्रॉफी का खत्म होगा इंतजार

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव देवजीत सैकिया ने दुबई में आईसीसी की बैठक के इतर पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी से मुलाकात के बाद पीटीआई को बताया कि भारत और पाकिस्तान के क्रिकेट बोर्ड एशिया कप ट्रॉफी विवाद पर गतिरोध दूर करने में कामयाब रहे हैं और आने वाले दिनों में इसका कोई उचित समाधान निकालने की दिशा में काम किया जाएगा।

नकवी एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने भारत को एशिया कप ट्रॉफी नहीं सौंपी क्योंकि विजेता भारतीय टीम ने उनके भारत विरोधी रवैए के कारण उनसे ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया था। सूर्यकुमार यादव की अगुवाई वाली भारतीय टीम ने 28 सितंबर को दुबई में हुए टी20 टूर्नामेंट के फाइनल में पाकिस्तान को हराया था।

सैकिया ने शनिवार को पीटीआई से कहा मैं आईसीसी (अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) की अनौपचारिक और औपचारिक दोनों बैठकों का हिस्सा था। पीसीबी (पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड) अध्यक्ष मोहसिन नकवी भी मौजूद थे। औपचारिक बैठक के दौरान यह एजेंडा में नहीं था, लेकिन आईसीसी ने अपने एक सीनियर पदाधिकारी और एक अन्य वरिष्ठ अधिकारी की मौजूदगी में मेरी और पीसीबी प्रमुख के बीच अलग से बैठक कराई। उन्होंने कहा बातचीत की प्रक्रिया शुरू करना वाकई अच्छा रहा। दोनों पक्षों ने आईसीसी बोर्ड बैठक के दौरान हुई बैठक में सौहार्दपूर्ण ढंग से भाग लिया। सैकिया ने आश्वासन दिया कि जल्द ही समाधान निकाल लिया जाएगा। बीसीसीआई सचिव ने हालांकि आईसीसी के किसी अधिकारी का नाम नहीं लिया, लेकिन विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि आईसीसी के उपाध्यक्ष इमरान ख्वाजा और सीईओ संजोग गुप्ता ने दोनों क्रिकेट बोर्डों के बीच चर्चा शुरू करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया।

विकल्पों पर काम किया जाएगा : सैकिया

बीसीसीआई के सचिव सैकिया ने कहा निश्चित रूप से यदि चीजें सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ती हैं तो इस मुद्दे को जल्द से जल्द सुलझा लिया जाएगा। दोनों पक्ष जल्द इस मुद्दे को सुलझाने के लिए कुछ न कुछ करेंगे। अब गतिरोध दूर हो चुका है इसलिए विभिन्न विकल्पों पर काम किया जाएगा। दूसरे पक्ष के पास भी विकल्प होंगे और हम इस मुद्दे को सुलझाने और सौहार्दपूर्ण समाधान निकालने के विकल्प भी देंगे। ऐसी अटकलें लगाई जा रही थी कि इस विवाद को सुलझाने के लिए आईसीसी एक विवाद समाधान समिति गठित करेगी लेकिन उन्होंने इससे इन्कार किया।